हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

15 जनवरी 1976

खण्ड 1, अंक 4

अधिकृत विवरण

विषय–सूची

वीरवार, 15 जनवरी, 1976

पृषठ संख्या.

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

तारांकित प्रश्नों के लिखित उत्तर (4)1

अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर (4)21

राज्यपाल का सन्देश (4)30

अनुपस्थिति की अनुमति (4) 40

गैर–सरकारी संकल्प (4) 40

शिक्षा पद्धति में सुधार लाने सम्बन्धी (4) 41

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 15 जनवरी 1976

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान

भवन, सैक्टर–1, चन्डीगढ में 14.00 बजे हुई ।

अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की ।

तारांकित प्रश्न एवं उत्तर

Mr. Speaker : Question Hour.

तारांकित प्रश्न सं. 1404

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी राम लाल बधवा, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1432

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी दल सिंह, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1452

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी देवी लाल, सदन में उपस्थित नही थे ।

Milk Surplus in the Milk Plants

***1478. Chaudhri Shiv Ram Verma :** Will the Minister for Finance be pleased to state—

(a) whether the Government is aware of the fact that the milk became surplus in the Milk Plants of Haryana during the year 1974-75;

(b) whether the surplus milk was supplied to places outside the State of Haryana;

(c) whether the said Milk Plants suffered any loss during the said period, if so, the reasons therefor; and

(d) the names of those Milk Plants which suffered loss and the extent thereof in each case?

State Minister for Agriculture and Revenue (Chaudhri Surjit Singh Mann) :

(a) and (b) : Yes.

(c) and (d) : Position will be known after the accounts for the year 1974-75 are completed.

चौधरी. शिव राम वर्मा : स्पीकर साहब, जवाब तो पूरा आया नहीं है

चौधरी सुरजीत सिंह मान : जवाब तो पूरा दिया गया है । 'ए' और 'बी' के उत्तर मे कहा है 'यस' और 'सी' तथा 'डी' के उत्तर में कहा है कि पूरा हिसाब होने पर पता लगेगा ।

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि 1974–75 का हिसाब अभी तक क्यों नही हुआ?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : अकाउन्ट्स आडिट नहीं हुए हैं । जब हिसाब तैयार हो जाएगा, तो आपको बता दिया जाएगा?

Cattle Feed Plant

***1490. Shri Om Parkash Garg :** Will the Minister for Agriculture

be pleased to state—

(a) the date on which the Cattle Feed Plant started functioning at Jind; and

(b) the yearwise production and sale of the Cattle-Feed
from the said Plant ?

State Minister for Agriculture and Revenue (Chaudhri Surjit Singh Mann):

(a) 1 . 7.1974 Production Sale

(b) 1974 (1st July

to 31st December, 15026.80 Qtls.
13142.93Qtls.

1974)

1975 (1st January to

31st December, 27892.17 Qtls.

27104.19Qtls.

1975)

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि कैटल फीड प्लान्ट पर कितनी लागत आई है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, 45 लाख रुपया लागत आई है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस प्लान्ट की फीड बनाने की कैपेसिटी कितनी है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इसकी कैपेसिटी एक शिफ्ट में 10 हजार क्विंटल फीड बनाने की है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस वक्त कितनी शिफ्टें चल रही हैं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इस वक्त एक शिफ्ट चल रही है ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मन्त्री महोदय बताने कीं कृपा करेंगे कि अभी तक इस प्लान्ट में कितना फायदा हुआ है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, इससे 1.29 लाख का फायदा हुआ है।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि 45 लाख रुपया जो इस पर लागत आई उसका ब्याज वगैरह भी इस फायदे में शामिल है । क्या उसको भी इस में गिना है?

चौधरी सुरजीत सिह मान : स्पीकर साहब, 1. 29 लाख रुपए का नैट प्रोफिंटं है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बतानेकी कृपा करेंगे कि फीड की रा–मैटीरियल क्या है ?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : फीड का रा–मैटीरियल इस तरह है

1. Rice-bran (oiled and de-oiled).
2. Wheat Bran.
3. Maize and its bye-products.
4. Mustard cake.
5.. G. N. Cake (Oiled and de-oiled)
6. Cotton seed cake.
7. Guar meal.
8. Gram Churi.

9. Tapoca powder.

10. Sal seed cake.

11. Barley.

12. Molasses.

13. Salt.

14. Minerals and Mixtures.

15. Vitamins.

श्री हरि सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि जो 1 लाख 29 हजार का प्रॉफिट हुआ है क्या वह प्लान्ट, मशीनरी, डेप्रिशिएशन निकालकर नैट प्रॉफिट है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : जी हां, यह नैट प्रॉफिट है ।

राव बंसी सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस पशु आहार का पर– क्विंटल क्या भाव है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : सीकर साहब, यह 80 रुपय क्विटल मिलता है ।

श्री अमर सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि 1978– 77 में ऐसे और कितने फीड प्लान्टस लगाने की स्कीम है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : स्पीकर साहब, अभी एक प्लान्ट भिवानी में लगाना चाहते हैं जब वह प्रोडक्शन में आ जाएगा तो और भी लगा देंगे ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि पिछले साल कितना राइस–ब्रान खरीदा गया, कितना कैटलफीड में इस्तेमाल किया गया और कितना दूसरे काम में?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इसके लिए सैप्रेट नोटिस चाहिए ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मन्त्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस पशु आहार में मुर्गियों का भी आहार शामिल है और क्या बह आहार कहीं पर मुर्गियों को दिया गया है, और क्या कहीं पर उस आहार से मुर्गियों को नुक्सान भी हुआ है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इस समय मुर्गियों का आहार बना नहीं है, लेकिन बनाएंगे जरूर ।

Buses Plying From N.I.T. Faridabad to Chandigarh

***1501. Shri K. N. Gulati :** Will the Minister for Transport be pleased to state the total number of the Haryana Roadways Buses plying from N.I.T. Faridabad to Chandigarh ?

शिक्षा तथा परिवहन राज्य मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) : जी नही

श्री के० एन० गुलाटी : क्या मन्त्री महोदया बतानेकी कृपा करेंगीं कि जब चण्डीगढ से पलवल, चण्डीगढ से होडल को बसें चलती हैं तो फरीदाबाद जिसकी आबादी पांच लाख है, वहां से सीधी चण्डीगढ को बस न चलाने का क्या कारण है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, पांच बसें चण्डीगढ से आगरा,चण्डीगढू से पलवल, चण्डीगढू से होडल और चण्डी–गढ से बल्लभगढ को चलती हैं जो कि तमाम की तमाम फरिदाबाद से होकर गुजरती हैं इसलिए चण्डीगढ से फरीदाबाद चलाने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

चौधरी मेहर चन्द : भट्टू से हिसार को वाया फतेहाबाद जो बस चलती है वह काफी लम्बा रास्ता है क्या मन्त्री महोदया एक बस वाया चुली बागडिया चलाने की कृपा करेंगी?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इसके लिए अलग से नोटिस चाहिए अगर जरूरत होगी तो चला देंगे ।

श्री के० एन० गुलाटी : अभी मन्त्री महोदया ने बताया है कि पांच बसें उस रास्ते से निकलती हैं । स्पीकर साहब, वे' तो मथुरा रोड से निकल जाती हैं । एन०आई०टी० फरीदाबाद में ढाई लाख मजदूर रहते हैं । क्या मन्त्री महोदया वहां से सीधी चण्डीगढ़ के लिए बस चलाने की कृपा करेंगी (व्यवधान) ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज । (व्यवधान) इसका जवाब दिया जा चुका हैं ।

श्री के० एन० गुलाटी : सीकर साहब, सारी बसे मथुरा रोड से निकल जाती हैं और मन्त्री महोदया ने कहा है कि वहां से बस चलाने कीं कोई जरूरत नहीं है (व्यवधान) ।

Mr. Speaker : Order please. This is not a supplementary question,

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मन्त्री महोदया बताने की कृपा करगी, कि एक बस रिवाडी वाया झज्जर चण्डीगढ को चलती थी वह अब बन्द कर दी गई है, उसका क्या कारणं है

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, यह बात मेरी नालिज में तो नहीं है । पता कर लेग कि क्यों बन्द की गई है? हो सकता है ज्यादा घाटा हो रहा हो इस कारण बन्द कर दी गई हो ।

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदया बताने की कृपा करेंगीं कि हिसार से चण्डीगढ को एक डीलक्स–बस चलती थी, उसको बन्द कर दिया गया है, उसका क्या कारण हैं?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, पिछले सैशन में भी बताया गयाथाकि वह घाटे में चल रही थी इसलिए उसको बन्द करना पड़ा (व्यवधान) ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : सीकर साहब, रोहतक डिपो से काटकर सरकार ने एक सब–डिपो सोनीपत में बनाया है और वहां की 20–22 बसें उधर कर दी हैं जो कि बिल्कुल नाकस

हैं, नाकारा हैं, बहुत शोर करती हैं । क्या मन्त्री महोदया उस सब–डिपो में भी कुछ अच्छी किस्म की बसें भिजवाने पर विचार करेंगी ताकि लोगों को आने जाने की सुविधा हो सके?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : सोनीपत का जिला भी तो रोहतक से काटकर बनाया है ।

चौधरी श्याम लाल : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदया यह बतलाने की कृपा करेंगी कि चण्डीगढ से आगरा और दिल्ली से आगरा के लिए डिलक्स बस चलानेका सरकार का कोई विचार है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : नहीं जी, अभी नहीं ।

राव बंसी सिंह : क्या मंत्री महोदया बताने का कष्ट करेंगी कि हरियाणा में बसों के अन्दर लेडीज के लिए दो चार सीटें रखवाने की सरकार की तजवीज है ताकि लेडीज को सफर करते समय कोई तकलीफ न हो?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, बसों में ऐसी कोई दिक्कत वाली बात नहीं है ।

श्री के० एन० गुलाटी : स्पीकर साहब, क्या मन्डी महोदया बताएंगी कि जो 4, 5 बसें मथुरा, पलवल और होडल वगैरह वाया फरीदाबाद जाती हैं क्या उन बसों का रूट बदल कूर टाऊन के अन्दर से करने की सरकार कृपा करेंगी कि वे सभी बसें

फरीदाबाद टाऊन के अन्दर से होकर जाएं जिससे लोगों को सुविधा रहे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, आनरेबल मैंबर को यह पता होना चाहिए कि इतने लम्बे रूटों पर जाने वाली बसें अगर शहरों के अन्दर से चक्कर काट कर जाएं, तो वे अपनी मंजिल पर टाईम पर कैसे पहुंच सकती हैं?

मलिक सतराम दास बत्तरा : अध्यक्ष महोदय क्या मच्छी महोदया बताएंगी कि रोहतक से सोनीपत काट दिया गया है, क्या और भी कुछ काटने का सरकार का विचार है? (हंसी) ।

(कोई उत्तर नहीं दिया गया)

श्री हरि सिंह : स्पीकर साहब, हमारी हरियाणा स्टेट कल्याणकारी स्टेट है और हमारी सरकार नफा और नुक्सान को देखकर काम करती है । अभी अभी हमारी मिनिस्टर साहिबा ने फरमाया है कि फलां जगह रोडवेज में घाटा होने के कारण डिपो बन्द कर दिया, अगर खुदा–न–खास्ता सारी हरियाणा रोडवेज में ही घाटा पड़ जाए। तो क्या सारी हरियाणा रोड– वेज को ही बन्द कर दिया जाएगा?

परिवहन मत्री (श्री के.एल.पोसवाल) : स्पीकर साहब, ऐसा होना सम्भव नहीं है ।

Mr. Speaker : Order please. This is not a supplementary question,

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदया यह बतलाने की कृपा करेंगी कि कहीं–कहीं ऐसे रूट्स भी हैं जो घाटे में चल रहे हैं और वे अभी भी चल रहे हैं । अगर ऐसे रूट्स की जानकारी सरकार को दी जाए तो क्या उन्हें बन्द कर दिया जाएगा?

श्री के० एल० पोसवाल : स्पीकर साहब, सबसे पहले सरकार अपने इन्ट्रैस्ट को देखती है ।

Mr. Speaker : Order please. All these are hypothetical questions. Not allowed.

चौधरी पीर चन्द : स्पीकर साहब, कई बसों में स्पेयर टायर यानी सटिम्पनी नहीं होती है और जब बसें रास्ते में खराब हो जाती हैं, तो सवारियों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है तो क्या सरकार ऐसा प्रबन्ध करेगी जिससे कि लोगों को बस खराब होने पर कोई तकलीफ न हो ।

श्री के० एल० पोसवाल : स्पीकर साहब, इनसे पूछिए कि जिस बस में वे आए थे उसमें सटिप्पनी थी या नहीं?

लाला रुलिया राम : स्पीकर साहब, करनाल के बस–डिपो में से भी कई रूटों की बसें काट कर बन्द कर दी गई हैं जिससे हमारे हल्के के लोगों को भी बड़ी परेशानी हो रही है । क्या 20 सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकार इन रूटों पर दोबारा बसें चलाने की कृपा करेगी?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया ।)

Land Acquired for the Bus Stand at Kanina

***1505. Rao Dalip Singh** : Will the Minister for Transport be pleased to state—

(a) the total area of land acquired for the construction of Bus stand at Village Kanina;

(b) the total amount paid as compensation to the Notified Area Committee for the land so acquired;

(c) the date on which the foundation stone of the said Bus-stand was laid; and

(d) the time by which construction of the said Bus-stand is likely to be completed ?

शिक्षा तथा परिवहन राज्य मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) : वांछित सूचना निम्न प्रकार से है –

(क) 29 कनाल 9 मरले ।

(ख) शून्य ।

(ग) 22 दिसम्बर, 1974 ।

(घ) चालू वित्तीय वर्ष में कनीना बस अड्डे को बनाने के लिए दो लाख रुपए पहले ही उद्दीष्ट (ईयरमार्क) किए गए हैं । आवश्यक जगह की उपलब्धता व दिन प्रतिदिन कीमतों में बढ़ौतरी

होने के कारण अनुमानों प्लानों में संशोधन किया जा रहा है । निर्माण कार्य शीघ्र ही हाथ में ले लिया जायेगा ।

राव दलीप सिंह : कनीना में बस अड्डे के लिए पिछले दिसम्बर में फाऊंडेशन स्टोन रखा गया था, इसको एक सालहो चला है पर अभी तक. बस अड्डे का काम चालू नही हुआ है तो क्या मन्डी महोदया यह बताएंगी कि यहां का काम कब शुरू कर दिया जाएगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, बहुत ही जल्दी इसका काम शुरू होने वाला है, पहले जो भी कार्यवाही होनी थी वह हो चुकी है ।

राव दलीप सिंह : शुक्रिया जी ।

चौधरी मेहर चन्द : स्पीकर साहब, मैं भट्टू कलां के बारे में मन्त्री साहिबा सें दर्खास्त करूंगा कि वहां का बस अड्डा कब तक बना दिया जाएगा? यह मेरी कांस्टीच्यूएंसी में सिर्फएक ही जगह ऐसी है जहां पर बस अड्डा नहीं है ।

श्रीमती प्रसन्नी देवी : यह भट्टू कलां है या कि भुट्टो कलां (हंसी)।

चौधरी मेहर चन्द : भुट्टो तो रावलपिंडी पाकिस्तान में है, मैं भट्टू कलां के बारे गे कह रहा है । स्पीकर साहब, आनरेबल

ट्रांसपोर्ट. मिनिस्टर साहब को मना किया जातु कि वह नैगेटिव में डायरैक्टिव न दिया करें, यह बात गलत है ।

परिवहन मन्त्री (श्री के०एल०पोसवाल) : स्पीकर साहब, मेरा कोई ताल्लुक नहीं है, जवाब तो मोहतरिमा दे रही हैं ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या मिनिस्टर साहिबा बताएगी कि हमारे झज्जर में बस अड्डा कब तक बनकर तैयार हो जाएगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : झज्जर में काम चालू है ।

चौधरी पीर चन्द : स्पीकर साहब, हमारे हल्के में तीन चार फैक्ट्रियां हैं और वहां की आबादी भी काफी है पर वहां पर कोई अलग से बस अड्डा नहीं है क्या वहां सरकार बस अड्डा बनाने का विचार रखती है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, अगर वहां पर कोई जरूरत समझी जाएगी तो विचार भी कर लिया जाएगा ।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, हांसी बस स्टैण्ड के लिए फाऊंडेशन स्टोन लास्ट ईयर रखा गया था, पर वहां कंस्ट्रक्शन का काम काफी धीरे–धीरे चल रहा है । क्या मन्त्री महोदया बताएगी कि वहां कितना पैसा खर्च किया जा रहा है और वह बस अड्डा कब तक बनकर तैयार हो जाएगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, मार्च तक बस स्टैण्ड का काम पूरा होने की सम्भावना है ।

चौधरी अमीर चन्द कक्कड़ : स्पीकर साहब क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि रोडवेज में लेडी वर्कर्ज भी अप्वांयट करने की सरकार की कोई तजवीज है?

(कोई जवाब नहीं दिया गया)

राव बंसी सिंह : स्पीकर साहब, नारनौल जो डिस्ट्रिक्ट का हैडक्वार्टर है वहां के बस अड्डे का फाऊंडेशन स्टोन भी रखा गया है उसके कब तक बनने की सम्भावना है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, अगला सवाल आ रहा है उस में उत्तर देंगे ।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, सिवानी में कोई बस अड्डा नहीं है और लोगों को बड़ी दिक्कत होती है क्या मिनिस्टर साहिबा बतलाएंगी कि सिवानी में टैम्पोरेरी शैड्ज बनाने की सरकार की कोई स्कीम है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : स्पीकर साहब, अभी कोई ऐसी प्रपोजल नहीं है अगर जरूरत हुई तो जल्दी से जल्दी बना देंगे ।

चौधरी शिव राम वर्मा : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री महोदया बतलाएंगी कि उनकी अपनी इन्द्री कांस्टीच्युऐंसी तक लोकल बस चलती है?

Mr. Speaker : It is a question about Bus stand.

लाला रुलिया राम : स्पीकर साहब, हमारे घरौंडा हल्के के लिए बस अड्डा सैक्शन हो चुका है पैसा भी सैक्शन हो चुका है पर अभी तक वहां पर काम शुरू नहीं किया गया है । मुझे डर है कि कहीं वह पैसा इधर उधर न हो जाए मेरी इस बारे में जनरल मैनेजर साहब से भी बात हुई थी अतः मेरी प्रार्थना है कि सरकार इस ओर पूरा ध्यान दे और वहां का काम शुरू करवाए ।

श्रीमती प्रसन्नी देवी : घरौंडा के लिए आर्डर भी दे दिया है, पैसा भी दे दिया गया है और जितनी जल्दी होगा बना दिया जाएगा ।

श्री हरि सिंह : स्पीकर साहब, क्या मन्त्री साहिबा बताएंगी कि समालखा जो कि हाई वेज पर है, वहां पर बस अड्डा कब तक बना दिया जाएगा? इसकी क्या पोजीशन है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : अभी तो सरकार की ऐसो कोई स्कीम नहीं है।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि लाडवा के बस स्टैण्ड बनाने की क्या पोजीशन है?.

श्रीमती प्रसन्नी देवीं : यह सवाल लाडवा के बारे में नहीं पूछा गया था इसलिए आनरेबल मैंबर अलग से नोटिस दें ।

तारांकित प्रश्न सं० 1522

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी चांद राम, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1405

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी राम लाल वधवा, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1433

यह प्रश्न पूछा नहीं गया. क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी दल सिंह, सदन में उपस्थित नही थे ।

तारांकित प्रश्न सं० 1453

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, चौधरी देवी लाल, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Faridabad Thermal Plant

***1479 Chaudhri Shiv Ram Verma :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the •total number of units of electricity daily generated from the Faridabad Thermal Plant in the year 1975 month-wise ;

(b) the month-wise number of days on which the said plant was closed. during the above said 12 months together with the reasons therefor ; and

(c) the present position of the said plant ?

State Minister for Irrigation and Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha):—

(a) The month-wise No. of units of electricity generated from the 60 Mega Watt Unit-I Faridabad Thermal Plant in the year 1975, are as under

1.	January, 75	4.55 Million units.	
2.	February, 75	8.0105	„ „
3.	March, 75	20.4680	„ „
4.	April, 75	12.2135	„ „
5.	May, 75	22.9015	„ „
6.	June, 75	23.6260	„ „
7.	July, 75	22.8430	„ „
8.	August, 75	21.9090	„ „
9.	September, 75		
10.	October, 75	31.4630	„ „
11.	November, 75	24.49	„ „
12.	December, 75	32.14	„ „

(b) The month-wise number of hours and approximate number of days during 1975 on which the said plant was closed and the reasons therefor, are as under : —

Month	Hours	Approximate No. of days.	Reasons.
January, 75	540	22	Due to system/Electrical and Mechanical troubles.
February, 75	491	20	-do- and variation of voltage.
March, 75	194	8	-do-
April, 75	421	17	Due to system and lectrical/ Mechanical troubles and general maintenance.
May, 75	248	10	Due to system and. Electrical/ Mechanical troubles and variation of voltage.
June, 75	194	8	Due to system and Electrical/ Mechanical troubles and variation of voltage.
July, 75	276	11	-do- and general maintenance.
August, 75	295	12	Due to system and Electrical/ Mechanical Troubles and surplus power from Bhakra Nangal Complex.
September,			The plant was closed for whole of the month because Lof su

75			plus power available from Bhakra Nangal Complex.
October, 75	148	6	Due to system and Electrical/ Mechanical troubles and sur plus power from Bhakra Nangal Complex.
November, 75	289	8	**-do-**
December, 75	125	**5**	Due to system and Electrical/ Mechanical troubles.

(c) Very good.

It is running smoothly on economic loads. Fertilizer Factory at Shahabad

चौधरी शिव राम वर्मा : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि अब की स्थिति क्या है यानी कल कितनी बिजली पैदा हुई?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : कल बिजली पैदा नहीं की गई आज भी रिपेयर चल रूही है कल से शुरू हो जाएगी ।

श्री अमर सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि पिछले साल' एग्रीकल्चर फिल्ड मैं कितने यूनिट्स की टोटल रिक्वायरमैंट थी?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : यह थर्मल प्लांट्स का सवाल है सारी स्टेट की बिजली का सवाल नहीं है ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि डेली कितनी बिजली जैनरेट होती है?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : 15 मैगावाट और कभी 12,13 या 14 भी हो जाती है ।

श्री हरि सिंह : क्या मन्डी महोदय बताएंगे कि हमारे थर्मल प्लांट की प्रोडक्शन क्यों बन्द हो जाती है जबकि दूसरे देशों में जैसे इंग्लैड है उनकी प्रोडक्शन कभी बन्द नहीं होती?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, थर्मल प्लांटस को स्टेबैलाइज होने में देर लगती है लेकिन जहां की ये बात करते हैं वहां कई कई यूनिट्स होते हैं । हमारे पास एक यूनिट है जब हमारा दूसरा यूनिट तैयार हो जाएगा तो प्रोडक्शन बन्द नहीं होगा । जो फरीदा– बाद का हमारा यूनिट है इसने इतनी बिजली दी है कि सारे हिन्दुस्तान भर में 60 मैगावाट के किसी यूनिट ने इतनी बिजली नही दी है ।

चौधरी शिव राम वर्मा : जब यह प्लांट रिकार्ड बिजली दे रहा है तथा और भी बिजली बढ़ रही है, अब खेती को बिजली की जरूरत है क्योंकि बारिश नहीं हुई है, तो क्या 10 घंटे की बजाय 12 घंटे रोज बिजली देंगे।

सरदार हरमौहिन्दर सिंह चट्ठा : जहां बिजली की ज्यादा जरूरत होगी, वहां ज्यादा दी जाएगी ।

श्री हरि सिंह : यह बात तो ठीक है कि हमारे प्लांट्स रिकार्ड प्रोडक्शन कर रहे हैं लेकिन जितनी उनकी कैपेसिटी है वे उतनी कैपेसिटी से काम क्यों नहीं कर पाते? क्या' हमारे इंजीनियर्ज काबिल नहीं हें?

सरदार हरमोहिन्दर सिंह चट्ठा : स्पीकर साहब, हमारा फरीदाबाद यूनिट कुल कैपेसिटी पर चल रहा है ।

***1491. Shri Om Parkash Garg :** Will the Minister for Agriculture be pleased to state—

(a) the date on which the Fertilizer Factory was installed at Shahabad and when it started functioning ;

(b) the number of days for which it was expected to function and the number of days for which it actually functioned since its installation to date ; and

(c) the quantity of fertilizer produced to-date in the Factory referred to in part (a) above and the quantity of fertilizer sold to-date inside and outside the State, separately togetherwith the procedure of sale ?

State Minister for Agriculture and Revenue (Chaudhri Surjit Singh **Mann) :**

(a) (i) 15-2-1975. (ii) 15-3-1975.

(b) (i) 150 days upto 31-12-1975. (ii) 101 days upto 31-12-1975.

(c) (i) 4263. 4 Metric Tons upto 31-12-1975.

(ii) (a) 1984.95 Metric Tons upto 31-12-1975. (b) 1794.85 Metric Tons upto 31-12-1975.

(iii) Sale is effected through Farmers' Service Centres, Agro Service Centres and Private distributors and dealers.

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इस पर कितनी लागत आई है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : 41 लाख रुपए ।

चौधरी मनफूल सिंह : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इसकी पर क्विंटल सेल प्रोसीड कितनी है और पर क्विटल प्रोडक्शन पर कितना खर्च आता है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : हम 95 रुपए प्रति क्विंटल सेल कर रहे हैं प्रोडक्शन का मुझे पता नहीं । हमारे यहां दो तरह की फर्टिलाईजर हैं एक 15, 15 साढ़े सात और दूसरी 8, 8, 8 के बैग में ।

चौधरी मेहर चन्द : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि शाहबाद के अलावा भी हरियाणा में कहीं और कोई फर्टिलाईजर फैक्ट्री है अगर नहीं है तो क्या कोई और लगाने की प्रपोजल है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : एक फैक्ट्री हमारी तरौडी में चल रही है, और एक पानीपत में गवर्नमैंट आफ इंडिया की बहुत

बड़ी फैक्ट्री लग रही है, इसके अलावा और कोई लगाने की प्रपोजल नहीं है ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि यह फर्टीलाईजर प्लान्ट जो डेली पैदा करता है उसकी कास्ट आफ प्रोडक्शन कितनी है?

चौधरी सुरजीत सिह मान : जैसे मैंने पहले बताया कि कास्ट आफ प्रोडक्शन का तो मुझे पता नहीं इसके लिए अलग से नोटिस चाहिए । वैसे हम रोज आठ घंटे की शिफ्ट में साढ़े सात मीट्रिक टन पैदा करते हैं ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि अब कितनी शिफ्टें चल रही हैं और कितने–कितने टाईम की चल रही हैं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इस समय आठ घंटे की एक शिफ्ट चल रही है ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि इस प्लान्ट ने पिछले साल कितना मुनाफा कमाया?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : 1. 14 लाख ।

श्री हरि सिंह : अभी–अभी मिनिस्टर साहब ने बताया कि एक फर्टिलाईजर प्लान्ट तरौडी में है, तो क्या वह प्रोडक्शन प्लान्ट है या मिक्सिंग प्लान्ट है?

चौधरी. सुरजीत सिंह मान : इसके लिए सैप्रेट नोटिस चाहिए ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि यह जो खाद उपभोक्ताओं तक पहुंचती है यह कोआप्रेटिव सोसायटियों के द्वारा पहुंचती है या किसी और तरीके से पहुंचती है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह मैंने पहले भी बताया था कि तीन तरीके से ले सकते हैं को–आप्रेटिव सोसायटीज से, फारमर्ज सैन्टर से और डीलर्ज के थ्रू खरीद सकते हैं ।

चौधरी पीर चन्द : क्या वजीर साहब बताएंगे कि यह खाद जो बनता है, इसका नैटो– रियल हरियाणा से ही आता है या दूसरी जगहों से मंगवाते हैं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इस फैक्ट्री में कुछ खादों को मिक्स करके उसकी गोलियां बनाते हैं और ऐसा करके उन खादों को मिला कर एक नई किस्म की खाद बनाते हैं ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : क्या वजीर साहब बताएंगे कि डीलर्ज को एजेंसी देने का क्या क्राइटेरिया और तरीका है और क्या किसी हरिजन को भी एजेंसी दी गई है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : अगर कोई एजेंसी लेने के लिए कहेगा, आगे आएगा, तो उसे दे दी जाएगी कोई लेने के

लिए आगे तो आए । बाकी डीलर्ज को जो एजेंसी देते हैं, उसमें उसे पाच रुपए पर बैग कमीशन का भी देते हैं ।

श्री हरि सिंह : क्या वजीर साहब बताएंगे कि यह जो उन्होंने 15, 15 साढ़े सात और आठ, आठ, आठ बताया इससे क्या मुराद है और यह क्या चीज है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इससे मुराद है नाइटरोजन, सुपर फास्फेट और पोटाश इस रेशो में उस खाद में पाए जाते हैं ।

चौधरी पीर चन्द : क्या वजीर साहब बताएंगे कि इस खाद की एजेंसीज कुल कितनी हैं, कहां–कहां दी हुई हैं और किस–किस शहर में हैं ।

चौधरी सुरजीत सिंह मान : कुल एजेंसीज 53 हैं और यह सारे हरियाणा में भी हैं और इसके अलावा पंजाब और यु० पी० में भी हैं ।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या वजीर साहब बतायगे कि क्या इस बात की जांच की जाती है कि यह खाद अच्छी क्वालिटी की बनती है और इसमें जो इनग्रेडिऐंटस हैं वह पूरी मिकदार में मिक्स किए होते हें?

कृषि मन्त्री (कर्नल महा सिंह) : जी हां, जांच होती है ।

श्री अमर सिंह : क्या वजीर साहब बताएंगे कि यू०पी० और पंजाब में कितनी–कितनी एजेंसीज हैं, हरियाणा में कितनी हैंऔर इनको देने का क्या क्राइटेरिया है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : इसके लिए आप सैप्रेट नोटिस दें कि कितनी–कितनी हैं । देने का क्राइटेरिया यह है कि जो मांगता है उसे दे देते हैं ।

श्री हरि सिंह : क्या वजीर साहब बताएंगे कि यी जो एन०पी०के० बनता है यह कौनसी फसलों के लिए मुफीद है बिजाई के वक्त यह लगाना चाहिए या उसके बाद?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह खाद हिट के लिए भी, पोटैटोज, वैजीटेल्ज और पैडी के लिए भी मुफीद है ।

Market Committee Faridabad

***1502. Shri K.N. Gulati :** Will the Minister for Agriculture be pleased to state—

(a) the yearwise income accrued to the Faridabad Market Committee during the last 5 years ;

.(b) the amount spent for the betterment of Subzimandis and Anaj-mandis of Old and N. I. T. Faridabad during the said period ; and

(c) the expenditure incurred on the construction of link• roads from villages to Old and N.I.T. Faridabad Anaj and SabziMandis ?

State Minister for Agriculture & Revenue (Chaudhri Surjit Singh Mann) :

(a) to (c) A statement is laid on the Table of the House.

		Rs.
(a)	1970-71	1,22,456
	1971-72	1,09,201
	1972-73	1,42,424
	1973-74	1,45,415
	1974-75	2,83,424
(b)	1970-71	1,460
	1971-72	4,806
	1972-73	6,594
	1973.74	1,120
	1974-75	2,660

(c) During the years 1970-71 to 1974-75 a sum of Rs. 3,35,920 has been contributed for the construction of link roads by the Market Committee, Faridabad.

श्री के० एन० गुलाटी : यह जो स्टेटमैंट मुझे दी गई है इसमें बताया गया है कि वहां पर पांच साल में आठ लाख की इनकम हुई और कुल 16 हजार रुपया खर्च किया गया है ओल्ड फरीदाबाद में और एन०आई०टी० में भी । क्या वजीर साहब

बताएंगे कि वहां पर पानी, स्ट्रीट लाईटं और कच्ची जगहों को पनकी करने का बन्दोबस्त. कब तक कर देंगे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह जो इनकम है, इसमें से 65 परसैन्ट सड़कें बनाने के लिए गवर्नमैंट को जाता है, 30 परसैन्ट मार्किटिंग बोर्ड को जाता है और कमेटी के पास पांच परसैन्ट रह जाता है जिससे उसका डे–टू–डे खर्च चलता है और उसमें से फोर्थ क्लास के एम्पलाइज को पे देते हैं ।

श्री के०एन०गुलाटी : पार्ट 'सी' के जबाबमें बताया है कि 3,35,920 रुपए लिंक रोड्ज बनाने के लिए प्रोवाइड किए । क्या वजीर साहब बताएंगे कि वहां पर तीन लिंक रोड्ज ऐसी है जिनकी हालत बहुत खराब है उनको जल्दी ही ठीक कर देंगे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : रोड्ज तो पी.डब्ल्यू.डी. बनाती है उनसे पूछ लें ।

कृषि मन्त्री (कर्नल महा सिंह) : मैं मैंबर साहब से अर्ज करूंगा कि और मार्कीट कमेटियों के मुकाबले में फरीदाबाद की कमेटी की आमदनी बहुत कम है इसलिए उसकी आमदनी बढाने के लिए वह कोशिश करें ताकि वहां पर ज्यादा से ज्यादा विकास के कार्य कर सकें ।

Revenue Minister (Pandit Chiranji Lal Sharma) : The P.W.D. will certainly consider building these roads provided they get 65 % of the Market Committee income.

चौधरी मेहर चन्द : भट्टू कलां की बहुत पुरानी कमेटी है, क्या वजीर साहब बताएंगे कि वहांपर आफिस बनाने के लिए फंड्ज ईयर–मार्क कर दिए गए हैं या नहीं और अगर नहीं लिए गए तो कब तक कर देंगे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह सवाल फरीदाबाद के बारे में है. । इसके लिए सैप्रेट नोटिस दें ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : क्या वजीर साहब बताएंगे कि मार्किट कमेटीज को जो पांच परसैन्ट पैसा दिया जाता है क्या यह कम नहीं है क्योंकि इससे कोई काम नहीं हो पाता तो क्या इस रकम को बढ़ाने की कोशिश करेंगे?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : काम तो सारा गवर्नमैंट करती है । रोड्ज गवर्नमैंट बनाती है और दूसरे काम मार्किटिंग बोर्ड करता है जैसे कि स्टोर्ज, बिल्डिग्ज वगैरा बनाना ।

श्री धज्जा राम : क्या वजीर साहब बताएंगे जैसा कि उन्होंने अभी अभी बताया कि 85 परसैन्ट पैसा बोर्ड को मिलता है तो क्या वह 85 परसैन्ट पैसा उसी मार्किटिंग एरिया मॅं ही खर्च करते हैं जहां से पैसा आता है या दूसरी जगह भी खर्च कर देते हैं?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह तो मुझे पता नहीं कि कहां–कहां खर्च करते हैं लेकिन यह पैसा गवर्नमैंट के सैन्ट्रल पूल में चला जाता है और वहीं उसे खर्च करते हैं ।

श्री के० एन० गुलाटी : आठ लाख की जो आमदनी है यह भी कोई कम नहीं है और भी हम बढ़ाएंगे लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि लिंक रोड्ज जो वहां बहुत खराब हालत मैं हैं, कब तक ठीक कर देंगे?

कर्नल महा सिंह : मैं उनको बताना चाहता हूं कि फरीदाबाद एरिया में 3,35,920 रुपए से भी ज्यादा रोड्ज पर खर्च हो चुका है और दूसरे एरियाज से लेकर यहां पर पैसा खर्च कर चुके हैं ।

. **चौधरी रिजक राम** : अभी वजीर साहब ने बताया था कि 65 परसैन्ट रुपया गवर्नमैट के खाते में चला जाता है लेकिन उनको मालूम नहीं कि वह कहां–कहां पर खर्च होता है । मैं उनसे पूछना चाहता है कि क्या गवर्नमैंट ऐसी नीति बनाने के लिए तैयार है कि जिन कमेटीज से जो रुपया वसूल हो वह उसी मार्किट कमेटी एरिया में ही खर्च हो?

मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास गुप्त) : ऐसी कोई नीति विचाराधीन नहीं है जहां पर ज्यादा जरूरत होगी वहां ज्यादा खर्च किया जाएगा और जहां कम जरूरत होगी वहां पर कम खर्च किया जाएगा ।

श्री जगजीत सिंह टिक्का : वजीर साहब ने बताया कि 85 परसैन्ट रुपया तो गवर्नमैंट पूल में चला जाताहै और पांच

परसैन्ट कमेटी को दे दिया जाता है तो बाकी का 30 परसैन्ट किस काम के लिए खर्च होता है?

चौधरी सुरजीत सिंह मान : यह पैसा दफ्तर बनाने के लिए, स्टोर्ज बनाने के लिए मण्डियों के अन्दर रोड्ज ठीक करने के लिए ऐसे कामों के लिए खर्च होता है । फिर इस रुपए में से क्लास फोर के अलावा दूसरे स्टाफ पर तनखाह देने पर भी खर्च किया जाता है ।.

चौधरी रिजक राम : स्पीकर साहब, अभी मुख्य मन्त्री महोदय ने फरमाया कि कहा ज्यादा जरूरत होती है वहां ज्यादा रुपया खर्च किया जाता है । मैं पूछना चाहता हूं कि उन डिफ्रैटं मार्किट कमेटियों में, जहां सड़कें बननी बहुत जरूरी हैं, माईनर्ज पर पुल नहीं हैं कलवर्टस टूटे हुए हैं और लोगों की बड़ी मांग है कि बनाए जाएं । ऐसे भी केसिज हैं जहां 10 साल से लोग मांगकर रहे हैं

Mr. Speaker : Order please. This is not a supplementary.

चौधरी रिजक राम : सप्लीमैंट्री आगे आ रहा है जी! पुल नहीं हैं, सड़कें नहीं हैं क्या ऐसी जगहों पर मार्किट एरिए में रुपया खर्च करने के लिए प्रैफ्रैंस देने के लिए तैयार हैं?

श्री बनारसी दास गुप्त : अध्यक्ष महोदय, सिर्फ मार्किट एरिये की ही बात नहींहै जहां भी इस प्रकार की कठिनाइयां हैं, मुश्किलात हैं, उन पर पूरा ध्यान दिया जाता है ।

Bus Stand at Narnaul

***1506. Rao Dalip Singh :** Will the Minister for Transport be pleased to state—

(a) the date and year on which the foundation stone of the Bus Stand at Narnaul was laid ;

(b) the total amount of compensation paid for the land acquired for the said Bus Stand ; and

(c) the time by which the Bus Stand referred to in part (a) above is likely to be constructed ?

शिक्षा तथा परिवहन राज्य मन्त्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी) : वांछित सूचना निम्न प्रकार से है

(कं) 22 दिसम्बर, 1974 ।

(ख) 73, 077 रूपए 35 पैसे ।

(ग) नारनौल बस अड्डा एवं कर्मशाला के प्रथम अवस्था के निर्माण लिए चार लाख रूपए की धनराशि लोक निर्माण विभाग के. पास डिपाजिट वर्कस स्कीम के अंतर्गत जमा करा दी गई है । दिन–प्रतिदिन कीमतों में बढ़ौतरी के कारण अनुमानों प्लानों में

संशोधन किया जा रहा है और आशा की जाती है कि निर्माण कार्य शीघ्र ही हाथ में ले लिया जाएगा ।

राव दलीप सिंह : क्या मन्त्री महोदया बताएंगे कि जिस जमीन के लिए 73,077. 55 रुपए कम्पन्सेशन दिया है, वह जमीन कितनी एक्वायर की है?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : एरिया 5 एकड़, 5 कनाल, 15 मरले है ।

राव दलीप सिंह : स्पीकर साहब, नारनौल में 73 स्वार रुपया कम्पन्सेशन का दिया है । क्या कनीना में जो जमीन एक्वायर की है उसका मुआवजा भी देंगे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : वहां जमीन की मिली है । जहां इस किस्म की जमीन मिलेगी वहां बस–स्टैण्ड बनाने में प्रायरिटी देते हैं ।

चौधरी फूल चन्द (मुलाना) : स्पीकर साहब, बस स्टैण्डज की बात चल रही है । क्या सरकार छोटे–छोटे बस स्टैण्ड बनाने के लिए तैयार है, क्योंकि यह बहुत आवश्यक है । बस–स्टैण्ड पर ज्यादा पैसा लगता है, लेकिन कई छोटी छोटी जगहें ऐसी हैं जहां लोगों को खड़ा होने के लिए जगह नहीं. है, क्या ऐसी जगहों पर छोटे–छोटे शैड्ज बनवाने के लिए सरकार इन्तजाम करेगी?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : चाल वर्ष में छोटे–छोटे शैडो के लिए 5 लाख रुपया रखा है और आहिस्ता आहिस्ता जैसे–जैसे पैसे की आमदनी बढ़ती जाएगी, खर्च किया जाएगा ।

श्री अमर सिंह : क्या मन्त्री महोदया बताएगी कि सब–डिवीजनल हैडक्वार्टर पर और तहसील हैडक्वार्टर पर जो मेन–बस स्टैण्ड हैं, वहां पर क्या यूरिनल बनाने का बन्दोबस्त किया जाएगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : जहां बस स्टैण्ड बने हैं, वहां पर यूरिनल के लिए अलग सैं इन्तजाम किया जाता है ।

चौधरी पीर चन्द : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि हिसार का बस–स्टैण्ड बहुत छोटा है उसको नया बनाने के लिए क्या सरकार विचार करेगी?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : प्रपोजल तो है लेकिन फिलहाल पैसे की कमी को ध्यान में रखते हुए काम शुरू नही होगा । वहां म्युनिसिपैलिटी का बस–स्टैण्ड है, वह अच्छा काम देता है, डिफिकल्टी की कोई बात नहीं ।

चौधरी अब्दूर रजाक खां : स्पीकर साहब, फिरोजपुर झिरका सब–डिवीजन में जमीन एक्वायर की हुई है, क्या वहां पर वर्कशाप प्रोवाइड करने की फैसिलिटी देने पर गौर करेंगी?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : वह छोटी जगह है छोटी जगह पर वर्कशाप नहीं बनेगी, उसको देख लेंगे, अगर जरूरत होगी तो विचार करेंगे ।

चौधरी फूल सिंह कटारिया : स्पीकर साहब, मन्त्री महोदया ने झज्जर के लिए तो कह दिया कि बनेगा, लेकिन बन नहीं रहा, वहां पर पानी भर गया है, उसका कोई इन्तजाम नहीं है, खैर मन्त्री महोदया ने जवाब दे दिया । मैं रोहतक के बारे में पूछना चाहता हूं कि वहां कब बस–अड्डा बनेगा । वहां ओपन जगह है, मैंने देखा है, और मन्त्री महोदया ने भी देखा है कि वहां पर ओपन प्लेस है । क्या इस ओपन प्लेस को कवर करने का विचार है । और वर्कशाप को बढ़ाने का विचार करेंगे?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : रोहतक में बस स्टैण्ड और वर्कशाप हैं, लेकिन उसको और थोड़ा बनाया जाना है, इसके लिए जमीन ऐक्वायर कर रखी है । इस काम को आहिस्ता– आहिस्ता शुरू कर देंगे ।

श्री के० एन० गुलाटी : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि बल्लभगढ़ बस–अड्डे की जो पुरानी स्कीम चल रही है, उसको कब पूरा किया जाएगा?

श्रीमती प्रसन्नी देवी : इसके लिए अलग नोटिस दें, सारी स्कीम बता देंगे ।

श्री सीस राम : क्या मन्त्री महोदया बताएंगी कि बस–स्टैण्ड पर मरदाना और जनाना यूरिनल साथ–साथ बने हुए हैं और उन में जल्दी जल्दी में गड़बड़ हो जाती है, क्या उनको दूर–दूर करने की प्रपोजल है? (हंसी) ।

Mr. Speaker : Order pleace

परिवहन मन्त्री (श्री के एन०पोसवाल) : पढे लिखे आदमी ही यह गलती करते हैं, ऐसी बात नहीं (हंसी) ।

श्री सीस राम : पढ़े लिखे आदमी ही सफर करते हैं ।

तारांकित प्रश्न सं० 1523

यह प्रश्न पूछा नहीं गया क्योकि माननीय सदस्य, चौधरी चांद राम, सदन में उपस्थित नहीं थे ।

Mr. Speaker : Question Hour is over.

तारांकित प्रश्नों के लिखित उत्तर

Subsidy and Loans Granted for the Purchase of Land

***1404. Chaudhri Ram Lal :** Will the Minister for Excise and Taxation be pleased to state the number of persons belonging to the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Backward Classes to whom the subsidies and loans have been granted by the Government to purchase land during the period from May, 1968 to-date, year-wise, separately together with the amount of the subsidies and loans so granted, separately ?

Excise and Taxation Minister (Shri Shyam Chand) :

Year	Persons	Amount
1968-69	28	Rs. 56,000
1969-70	—	-
1970-71	—	-
1971-72		
1972-73		—
1973-74	—	-
1974-75	—	—
1975-76	—	—
Total :	28	Rs. 56,000

3% Loan

Year	Persons	Amount
1968-69	97	Rs. 1,95,500
1969-70	67	Rs. 3,00,000
1970-71	87	Rs. 3,91,500
1971-72	—	—

1972-73	65.	Rs. 3,51,700
1973-74		
1974-75	—	—
1975-76		
Total :	316	Rs. 12,38,700

Border Dispute between Uttar Pradesh and Haryana

***1432. Chaudhri Dal Singh** Will the Chief Minister be pleased

to state—

(a) whether the dispute regarding borders of Gurgaon District of Haryana and Bulandshahar District of Uttar Pradesh has been settled between the two States ;

(b) if not, the reasons therefor and the time by which the dispute as referred to in part (a) above is likely to be settled ;

(c) the number of meetings held so far by the representatives of the said States in connection with the dispute as referred to in part (a) above and

(d) the amount of expenditure incurred on the payment of T.A. and D.A. to the officers of the Haryana State Government who participated in the meetings as referred to in part (c) above ?

मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त) :

(क) हां ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

(ग) 74 बैठकें हुई हैं ।

(घ) अधिकारियों को 2138 रू ० यात्रा/दैनिक भता के रूप में दिए गए । इस खर्च में वह राशि सम्मिलित नहीं हैं जो स्टाफ कारों के प्रयोग में पैट्रोल पर खर्च की गई ।

Jails in the State

***1452. Chaudhri Devi Lal** Will : the Minister for Home be pleased to state—

(a) the district-wise names of Jails in the State together with the names of the places where these are located at present separately ; and

(b) the names of Jails as referred to in part (a) above where the Library facilities have been provided together with the number of books, journals and newspapers available therein, separately for use of prisoners in the Jails ?

परिवहन मंत्री (श्री के० एल० पोसवाल) : अपेक्षित सूचना विवरण के रूप में सदन के पटल पर रखी जाती है ।

(क) (1) जिला अम्बाला

(।) केन्द्रीय जेल, अम्बाला शहर

(2) जिला हिसार

(।) जिला जेल, हिसार

(।।) बच्चा जेल, हिसार

(3) जिला रोहतक

(।) जिला जेल, रोहतक

(4) जिला गुडगावा

(।) जिला जेल, गुडगावा

(।।) उप–जेल, पलवल

(5) जिला करनाल

(।) जिला जेल, करनाल

(6) जिला जींद

(।) उप–जेल, नरवाना

(7) जिला भिवानी

(।) उप–जेल, भिवानी

(।।) उग–जेल, चरखी दादरी

(8) बिला सिरसा

(।) उप–जेल, सिरसा

(9) जिला सोनीपत

(।) उप–जेल, सोनीपत

(10) जिला महेन्द्रगढ़

(।) उप–जेल, महेन्द्रगढ

(।।) उप–जेल नारनौल

(।।।) उप–जेल, रिवाडी

(11) जिला कुरुक्षेत्र

(।) उप–जेल, कैथल

(ख.)

	जेलों के नाम	जहां पुस्ताकालय सुविधाएं उपलब्ध हैं या नहीं	पुस्तकों की संख्या	जरनलों की संख्या	समाचार पत्रो की संख्या
	1	2	3	4	5
1	केन्द्रीय जेल, अम्बाला	हां	3,014	3	11
2	जिला जेल, हिसार	हां	1,410	2	7
3	बच्चा जेल, हिसार	हां	1,675	1	2
4	जिला जेल, गुडूगावां	हां	999	--	3
5	जिला जेल, रोहतक	हां	1,497	1	4

6	जिला जेल, करनाल	हां	386	2	4
7	उप–जेल, भिवानी	हां	50	2	1
8	उप–जेल सिरसा	हां	49	1	1
9	उप–जेल, पानीपत	हां	10	3	1
10	उप–जेल, नरवाना	नहीं	--	---	7
11	उप–जेल कैथल	नहीं	--	--	1
12	उप–जेल, सोनीपत	नहीं	--	-	1
13	उप–जेल, महेन्दगढ	नहीं	-	1	1
14	उप–जेल, जींद	नहीं	-	-	1
15	उप–जेल नारनौल	नहीं	-	1	2
16	उप–जेल, पलवल	नहीं	-	1	2

17	उप–जेल, दादरी	नहीं	--	-	1
18	उप–जेल, रिवाडी	नहीं	-	-	1

Exasion of Sales Tax

***1522. Chaudhri Chand Ram :** Will the Minister for Excise and Taxation be pleased to state whether the Government is aware of the fact that Trader and Industrialist of the State evade the payment of Sales Tax to the State Government by setting up their sales offices in Delhi, if so, the steps taken to check the evasion ?

आबकारी व कराधान मंत्री (श्री श्याम चन्द) :

व्यापारियों तथा उद्योगपतियों द्वारा अपने स्टाकस का अपनी दिल्ली स्थित शाखाओं? मुख्यालयों को ट्रान्सफर, केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956, के. अर्न्तगत बिक्री नहीं बनता । इस कारण ऐसी ट्रान्सफरों पर कर नहीं लगता । इस लिये कर की चोरी का कोई प्रश्न नहीं उठता ।

New Raads Constructed in Bhiwani and Karnal

***1405. Chaudhri Ram Lal :** Will the Minister for Revenue be pleased to state—

(a) the total number of new roads constructed by the Government in Bhiwani and Karnal Districts during the period 1972-73, 1973-74, 1974-75 and 1975-76 (to-date), separately, together with the length of such roads ; and

(b) the number of roads lying incomplete together

with their length and the reasons therefor ?

राजस्व मंत्री (पंडित चिरंजी लाल शर्मा) :

(ए) तथा (बी) वांछित सूचना का विवरण सदन की मेज पर प्रस्तुत है।

स्टेटमैंट

क) पूर्ण सड्कों के बारे में सूचना

जिला	वर्ष	बनाई गई सड़कों की संख्या	सड्कों की लम्बाई	
भिवानी	1972—73	34	114.87	किलोमीटर
	1973—74	14	48.45	किलोमीटर
	1974—75	15	50.95	किलोमीटर
	1975—76 (अक्तुबर, 1975 तक)	16	54.25	किलोमीटर
करनाल	1972—73	84	178.24	किलोमीटर
	1973—74	35	109.63	किलोमीटर

1974—75	18	49.86	किलोमीटर
1975—76	7	21.48	किलोमीटर
(अक्तुबर, 1975 तक)			किलोमीटर

ख) अपूर्ण सड़क ओं के बारे में सूचना ।

जिला	अपूर्ण सड्कों की संख्या	सड़कों की लम्बाई
भिवानी	82	203.20 किलोमीटर
करनाल	132	244.19 किलोमीटर

यह अपूर्ण सड़कें, जिनका कार्य चल रहा है, धन के अभाव केकारण पूरी नहीं की जा सकती हैं । परन्तु इनको यथा समय पर धनराशि उपलब्ध होने पर पूर्ण कर दिया जाएगा ।

Construction of Housing Colony at Jind

***1433. Chaudhri Dal Singh :** Will the Minister for Housing and Local Government be pleased to state—

(a) whether the Housing Board, Haryana, has constructed a colony at Jind ;

(b) if so, the total number of houses built by the. Housing Board todate, together with the number of each type of house constructed ;

(c) whether the allotment of houses as referred to in part (b) above has been made ;

(d) if so, the number and names of persons togetherwith the addresses of allattees ; and

(e) whether it is a fact that the allottees as referred to in part (d) above took over possession of the houses before the allotment was made in their names ?

वित मन्त्री (श्री राम सरन चन्द मित्तल) :

(ए) आवास कालोनी जींद निर्माणाधीन है ।

(बी) निर्माणाधीन मकानों की कुल संख्या 360 है, जिसका ब्यौरा निम्म प्रकार है :–

मध्य आय वर्ग	92
कम आय वर्ग	128
आर्थिक तौर पर पिछड़े वर्ग	140

(सी) मकानों की अलाटमैंट अभी तक नहीं की गई ।

(डी) प्रश्न ही पैदा नहीं होता ।

(ई) क्योकि मकानों की अलाटमैंट अभी तक नही हुई है, इसलिए किसी भी व्यक्ति ने किसी मकान का कब्जा नहीं लिया है ।

Katcha Roads in the State

***1453. Chaudhri Devi Lal :** Will the Minister for Revenue be **pleased** to state—

(a) the district-wise length of roads in the State which **are still** completely 'Katcha' and partly, 'Katcha', separately to date; and

(b) the district-wise length of roads which have been completely metalled during the year 1975 to-date, separately?

राजस्व मंत्री (पंडित चिरंजी लाल शर्मा) :

(ए) तथा (बी) आवश्यक सूचना का एक विवरण सदन की मेज पर प्रस्तुत है ।

स्टेटमैंट

राज्य में कई प्रकार की सड़कें हैं, जैसे जिला परिषद् सड़कें, नगर पालिका सड़कें, चकबन्दी के रास्ते तथा ऐसी सड़कें, जो राज्य लोक निर्माण विभाग द्वारा पक्की करने के लिए संभाली

गई हैं । परन्तु किसी न किसी कारण अभी कच्ची पडी हैं । फिर भी ग्राम सडको से सम्बन्धित उपलब्ध सूचना नीचे दी जाती है ।

क्रमांक	जिले का नाम	पूर्ण रूप से कच्ची सडकों की लम्बाई (किलोमीटरों में)	आंशिक रूप में कच्ची सड्कों की लम्बाई (किलोमीटरों में)
1	अम्बाला	129.69	444.82
2	गुडगावां	124.00	164.00
3	करनाल	61.76	143.08
4	रोहतक	53.22	218.50
5	हिसार	126.27	382.03
6	महेन्द्रगढ़	71.98	259.98
7	भिवानी	44.57	158.59
8	सिरसा	66.39	441.42
9	कुरक्षेत्र	187.87	257.42

10	जींद	22.17	257.42
11	सोनीपत	63.11	214.23

(बी)

क्रमांक	जिले का नाम	1975 के दौरान पूर्ण रूप से पक्की की गई सड्कों की लम्बाई (30—11—75 तक) (किलोमीटरों में)
1	अम्बाला	8.65
2	गुडगावां	35.50
3	करनाल	13.66
4	रोहतक	6.62
5	हिसार	18.93
6	महेन्द्रगढ़	13.64
7	भिवानी	31.15
8	सिरसा	8.91
9	कुरक्षेत्र	18.88

10	जींद	18.08
11	सोनीपत	13.16

Resources and Retrenchment Committee

***1523. Chaudhri Chand Ram** : Will the Minister for Finance be pleased to state—

(a) whether the Resources and Retrenchment Committee set up by the Government after May, 1968 made any report to the Government and, **if so,** whether any action had been taken thereon; and

(b) whether any such Committee is-functioning at-present?

Finance Minister (Shri Ram Saran Chand Mital) :

(a) No.

(b) Question does not arise.

अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर

No Confidence Motion against the Sarpanch

483. Rao Dalip Singh : Will the Minister for Agriculture **be**

pleased.to state-

'(a.) whether any application for The no-confidence motion against the Sarpanch of village Ratta Kalan district Mohindergarh has been received by the Director of

Panchayats, Haryana; and

(b) if the reply to part (a) above is in the affirmative, the date on which the application was received and the action taken thereon ?

कृषि मंत्री (कर्नल महा सिंह):

(क) हां ।

(ख) 5–5–1975 वांछित अनुमति दैने का मामला अभी तक विचीराधीन है क्योंकि जिन पंचों ने इस बारे में अनुमति मांगी है उनमें से कृउछ के विरुद्ध पंचायत के फण्ड तथा शामलात भूमि के दुरुपयोग के दोष हैं ।

No Confidence Motion against the Sarpanch

484. Rao Dalip Singh : Will the Minister for Agriculture be pleased to state—

(a) whether any application for the no-confidence motion against the Sarpanch -of -village- Dakhora Jatusana Block has been received by the Director of .Panchayats, Haryana; and

(b) if the reply to part (a) above is in the affirmative, the date on which the application was received and the action taken thereon ?

कृषि मन्त्री (कर्नल महा सिंह) : (क) हां ।

(ख) प्रार्थना–पड सीधा ही निदेशक पंचायत के कार्यालय में 16–9–1975 को प्राप्त हुआ था । यह खण्ड विकास तथा पंचायत अधिकारी, जाटूसाना कों जांच तथा टिप्पणी हेतु भेजा गया था । खण्ड विकास तथा पंचायत अधिकारी, जाटूसाना का उत्तर उपायुक्त महेन्द्रगढ़ के माध्यम से 15–12–75 को प्राप्त हुआ । अतरू पंचायत डकोरा के सरपंच कें विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर विचार करने के लिए विशेष सामान्य बैठक बुलाने की अनुमति जारी की जा चुकी है ।

Complaint against Drivers and Conductors

478. Chaudhri Ram. Lai : -Will the Minister for Transport **be** pleased to state—

(a) the depot-wise number of complaints against the drivers & conductors of the Haryana Roadways received from the public during the period from the year 1974-75 and 1975-76 upto 31.12.75;

(b) the depot-wise number of complaints as referred to in part (a) above disposed -of and pending todate; and

(c) the depot-wise number of complaints out of those referred to in part (a) above found correct and the action taken thereon ?

परिवहन मंत्री (श्री के० एल० पोसवाल) : (क, ख, न,) कथन 1, 2, 3 विधान सभा की मेज पर रखे जाते हैं । कथन 1

हरियाणा राज्यं परिवहन के चालको/परिचालकों के विरुद्ध प्राप्त हुई शिकायतों की सूची जितनी वर्ष के दौरान शिकायतें प्राप्त की गई ।

क्रमांक	डिपो का नाम	1974–75	1975–76 (31–12–1975 तक)
1	हरियाणा राज्य परिवहन अम्बाला	49	132
2	हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी	33	89
3	हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ	92	173
4	हरियाणा राज्य परिवहन, गुडगावा	110	52
5	हरियाणा राज्य परिवहन, हिसार	34	19
6	हरियाणा राज्य परिवहन, जींद	37	18
7	हरियाणा राज्य परिवहन, करनाल	118	57
8	हरियाणा राज्य परिवहन, कैथल	8	12
9	हरियाणा राज्य परिवहन, रिवाडी	89	104

10	हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक	123	101

कथन 2

हरियाणा राज्य परिवहन द्वारा जो शिकायतें निपटाई गई व जितनी शिकायतें लम्बित की गई

क्रमांक	डिपो का नाम	जितने केस निपटाए गए		जितने लम्बित हुए	
		1974—75	1975—76 (31—12—1975)	1974—75	1975—76 (31—12—1975)
1	हरियाणा राज्य परिवहन अम्बाला	49	114	-	18
2	हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी	31	56	2	3
3	हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ	92	130	-	43
4	हरियाणा राज्य परिवहन, गुडगावा	110	4i	-	5

5	हरियाणा राज्य परिवहन, हिसार	31	13	3	6
6	हरियाणा राज्य परिवहन, जींद	37	13	-	5
7	हरियाणा राज्य परिवहन, करनाल	118	54	-	3
8	हरियाणा राज्य परिवहन, कैथल	8	11	-	1
9	हरियाणा राज्य परिवहन, रिवाडी	89	88	-	16
10	हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक	123	88	-	13

कथन 3

उन शिकायतों की सूची जो ठीक पाई गई तथा जिन पर कार्यवाही की गई

क्रमांक	डिपो का नाम	वर्ष	शिकायतों की कुल संख्या जो सही पाई गई	चेतावनी	सेवाएं निन्दित	वेतन वृद्धि बन्द की गई	सेवाएं समाप्त
1	हरियाणा राज्य परिवहन अम्बाला	1974-75		12			
			23		10	1	-
		1975-76	79	62	17	-	--
2	हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी	1974-75	19	12	3	3	1

		1975-76	27	16	10	1	-
3	हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ	1974-75	17	17	-	-	-
		1975-76	25	23	-	2	--
4	हरियाणा राज्य परिवहन, गुडगावा	1974-75	66	45	16	5	-
		1975-76	40	22	10	8	-
5	हरियाणा राज्य परिवहन, हिसार	1974-75	14	7	1	3	3
		1975-76	6	3	1	1	1
6	हरियाणा राज्य परिवहन, जींद	1974-75	26	15	10	1	-

		1975-76	8	5	1	1	
7	हरियाणा राज्य परिवहन, करनाल	1974-75	81	50	21	10	
		1975-76	37	28	7	2	-
8	हरियाणा राज्य परिवहन, कैथल	1974-75	2	-	2	-	-
		1975-76	9	5	4	-	-
9	हरियाणा राज्य परिवहन, रिवाडी	1974-75	27	27	-	-	-
		1975-76	42	38	4	-	-
10	हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक	1974-75	79	74	4	1	-

1975-76	67	62	5	-	-

Complaints Against the Managements

479. Chaudhri Ram Lal : Will the Minister for Transport be pleased to state the depot-wise number of complaints against the managements of the Haryana Roadways received from the public regarding breakage of vehicles and mismanagement in the Haryana Roadways during the years 1974 and 1975, separately, togetherwith the action taken thereon ?

परिवहन मंत्री (श्री के० एल० पोसवाल) : कथन 1, 2, 3 विधान सभा की मेज पर रखे जाते हैं ।

कथन 1

हरियाणा राज्य परिवहन को मैनेजमैंट के विरुद्ध शिकायतों का विवरण

क्रमांक	डिपो का नाम	1974			1975		
		विक्रेज	मिसमैनेजमेंट	कुल संख्या	विक्रेज	मिसमैनेजमेंट	कुल संख्या
1	अम्बाला	1	13	14	6	12	18
2	चण्डीगढ	55	6	61	55	6	61
3	करनाल	-	4	4	-	3	3

4	गुडगावां	-	1	1	-	-	-
5	रिवाडी	-	10	10	1	28	29
6	रोहतक	-	1	1	4	2	6
7	कैथल	-	1	1	1	11	12
8	भिवानी	-		-		3	3
9	हिसार	2	10	12	1	4	5
10	जींद	-	5	5	2	2	4

कथन 2

वर्ष 1974 में शिकायतों पर की गई कार्यवाही का कथन

क्रमांक	डिपो का नाम	चेतावनी	सर्विस सन्सोरड	वृद्धि बन्द	सेवा भंग	किराये की वापसी	हिदायतें जारी तथा शिकायतकर्ता की कठिनाई को दूर करना	परीक्षण करके फाईल करना	लम्बित	कुल
1	अम्बाला	-	1	-	-	-	-	13	-	14
2	चण्डीगढ	2	2	-	-	45	-	8	-	61
3	करनाल							-	-	4
4	गुडगावां							1	-	1
5	रिवाडी	4	-	-	-	-	6	-	-	10

6	रोहतक	-					1	-	-	1
7	कैथल		1							1
8	भिवानी									
9	हिसार		-	-	1	-	8	-	2	12
10	जींद						5	-	-	5

कथन 3

वर्ष 1975 में शिकायतों पर की गई कार्यवाही का कथन

क्रमांक	डिपो का नाम	चेतावनी	सर्विस सन्सोरड	वृद्धि बन्द	सेवा भंग	किराये की वापसी	हिदायतें जारी तथा शिकायतकर्ता की कठिनाई को दूर करना	परीक्षण करके फाईल करना	लम्बित	कुल
1	अम्बाला	4	-	-	-	2	-	12	-	18
2	चण्डीगढ	-	2	2	1	55	-	1	-	61
3	करनाल						3	-	-	
4	गुडगावां							-	-	-

5	रिवाडी	13	1	-	-	-	14	-	1	29
6	रोहतक	1	-		-		5		-	6
7	कैथल	12	-	-	-	-	-	-	-	12
8	भिवानी						1	-	2	3
9	हिसार	-	-	1	-		3			5
10	जींद		-	-	-	-	2		2	4

Drivers and Conductors Suspended and Dismissed from Service

480. Chaudhri Ram Lal : Will the Minister for Transport be pleased to state the depot-wise number of Drivers and Conductors of Haryana Roadways suspended, dismissed and removed from service during the period from 1.1.1974 to 31.12.1975 separately ?

परिवहन मंत्री (श्री के० एल० पोसवाल) : कथन विधान सभा का मेज पर रखा जाता है ।

स्टेटमैंट

ससपैड / डिसमिस किए गए चालकों / परिचालकों की सूची

क्रमांक	डिपो का नाम	ससपैडं किए गए चालको / परिचालकों की संख्या		नौकरी से निकाले गए (रिम्यु किए गए) चालको / परिचालकों की संख्या		डिसमिस किए गए चालकों / परिचालकों की संख्या	
		चालक	परिचालक	चालक	परिचालक	चालक	परिचालक
1	2	3	4	5	6	7	8

1	चण्डीगढ	60	149	12	39	-	
2	अम्बाला	61	154	11	12	-	-
3	करनाल	75	82	3	12	7	16
4	गुडगावां	85	258	6	37	-	-
5	हिसार	54	234	3	50	-	
6	रोहतक	54	199	3	31	-	-
7	जींद	63	146	4	22	-	
8	रिवाडी	55	115	8	36	-	-
9	कैथल	49	54	5	8	-	-
10	भिवानी	36	88	3	9	-	-
	कुल	592	1,479	58	256	7	16

Sale of Stamps

481. Chaudhri Chand Ram ; Will the Minister for Revenue be pleased to state—

(a) the district-wise total income accrued to the State Government from the Sale of Stamps since 1st November, 1966 for registering documents relating to the sale of immovable property including agricultural land;

(b) the district-wise number of documents

registered in the State since 1st November, 1966; and

(c) the district-wise area of agricultural land transferred through the registered documents referred to in part (b) above ?

राजस्व मन्त्री (पंडित चिरन्जी लाल शर्मा) :

	(ए)	(बी)	(सी)
जिला का नाम	1– 11– 66 से 31–12–75 तक अचल सम्पत्ति कृषि भूमि समेत की बिक्री से दस्तावेजों की रजिस्ट्री पर राज्य सरकार को प्राप्त हुई कुल आय ।	1– 11– 66 से 31–12–75 तक राज्य में पंजीकृत हुए दस्तावेजों की कुल संख्या	1–11–66 से 31–12–75 तक पंजीकृत दस्तावेजों द्वारा स्थान्तरण कृषि भूमि का क्षेत्र ।
	रुपये	क्रमांक	एकड़
हिसार	9,78,71,197	1,90,748	1,60,723
भिवानी	92,34,165	42,595	71,048
सिरसा	3,62,23,689	59,664	1,25,002
रोहतक	3,44,58,004	72,220	44,311
सोनीपत	1,49,83,547	27,920	35,193

गुडगावां	6,81,07,625	75,653	96,587
करनाल	4,53,53,620	84,955	16,2105
कुरुक्षेत्र	9,97,35,196	66,700	1,45,904
अम्बाला	3,39,53,465	44,124	45,655
जींद	1,46,59,901	47,346	2,49,099
नारनौल	1,13,19,692	29,520	85,699
कुल	46,59,00,101	7,41,445	12,21,326

J. B. T. and B. Ed. Teachers

482. Chaudhri Chand Ram : Will the Minister for Education be pleased to State—

(a) the year-wise total number of vacancies of J. B. **T.** and B. Ed. teachers referred for recruitment to the Haryana Subordinate Services Selection Board since its constitution;

(b) whether the Government received any recommendation in respect of the said posts, if so, the number of those appointed district-wise so far ;

(c) whether the Government made any *ad-hoc* appointments of J. B. T. and B. Ed. teachers, during the year 1968-69 and onwards to date togetherwith the number thereof year-wise ; and

(d) the district-wise number of persons out of those referred to in part (c) above, belonging to Scheduled Castes ?

शिक्षा मंत्री (श्री माडु सिंह मलिक) : (क), (ख), (ग) तथा (घ) रू सूचना एकत्रित करने तथा समाकलन करने में जो समय और परिश्रम लगेगा उससे विशेष लाभ नहीं होगा फिर भी यदि किसी विशेष बिन्दु पर जानकारी चाहिए तो वह दे दी जाएगी ।

राज्यपाल का सन्देश

Mr. Speaker : I have received a message from the Governor which reads as follows:—

"I beg to acknowledge receipt, with thanks of your Demi-official letter No. HVS-LA-2-76/2356, dated the 14th January, 1976, forwarding a copy of motion of thanks passed by the Haryana Vidhan Sabha at its meeting held on the 14th January, 1976. Please convey my thanks and appreciation for their kind thought in accepting the motion."

(Thumping from the Treasury Benches)

अनुपस्थिति की अनुमति

Mr. Speaker : I have received an application from Chaudhri Devi Lal M. L. A., asking for leave of absence from the House because he is unable to attend this session as he has been detained in district Jail, Gurgaon.

Mr. Speaker : Question is—

That permission for leave of absence be granted.

The motion was carried

गैर–सरकारी संकल्प

शिक्षा पद्धति. में सुधार लात संबंधी ।

Shri K. N. Gulati (Faridabad) : Sir, **I** beg to move—

That with a view to bring about improvement in the education system, this House recommends to the State Government to radically change the present pattern of education in the State.

स्पीकर साहब, एजूकेशन का मौजूदा सिस्टम बडा पेचीदा है । हरियाणा ने जहां हर क्षेत्र में तरक्कीकी है, ला–एंड–आर्डर में, नहरों के मामले में, एग्रीकल्चर में, ट्रांर्स्पोट में हैल्थ में यानी हर किस्म के अदारे में हरियाणा ने अपने आपको आगे बढ़ाया है ।

तो मैं आज फख्र से कह सकता हूं कि हरियाणा 'एजुकेशन के सिलसिले में भी पीछे नहीं । इसका श्रेय हमारे पिछले मुख्य मन्त्री, मौजूदा भारत के रक्षा मन्त्री को जाता है, क्योंकि उन्होंने अन्य कार्यों के साथ–साय एजुकेशन की तरपरू भी सबसे ज्यादा ध्यान दिया । एजुकेशन वह बुनियाद होती है जो रोश और प्रदेश के करैक्टर को ऊंचा करती है, देश और प्रदेश को महान बनाती है । तो मैं जितनी तारीफ अपने चौधरी बसी लाल जी की, एजुकेशन मिनिस्टर चौधरी माडु सिंह जी की, और

एजुकेशन डिपार्टमैंट की करूं, उतनी ही कम है, इन्होंने इस क्षेत्र में बहुत कुछ किया है, यह मैं मानता हूं । माननीय स्पीकर साहब, हरियाणा में एक यूनिवर्सिटी कुरुक्षेत्र की चल रही थी, लेकिन हमारी सरकार ने दूसरी एक और यूनवर्सिटी रोहतक में भी स्थापित की है । छोटा सा हमारा सूबा है और इसमें जब दो यूनिवर्सिटीज चलाकर हमारी हरियाणा सरकार दिखा देगी, तो इससे अच्छी मिसाल सारे हिन्दुस्तान में नहीं मिलेगी । बड़े–बड़े कालेज, बड़े–बड़े स्कूल, जे.बी.टी. सैन्टर्ज आदि हरियाणा में एजुकेशन के सिलसिले में हुई तरक्की की मुंह बोलती तसवीर हैं । हरियाणा के स्टूडैंट जो यहां के कालेज, और स्कूलों से निकले हैं, वे इस वक्त बड़ी–बड़ी पोस्टस पर हैं । वे ओलम्पिक्स में भी आगे हैं और सोशल वर्क में भी आगे हैं । हमारे हरियाणा के स्टूडैन्टस ने, हम फख्र से कह सकते हैं, चाहे वे सर्विस में हैं, चाहे पालिटिक्स में हैं, चाहे किसी जगह पर हैं, सारे हरियाणा के नाम को हिन्दुस्तान में चमकाया है । हमारे रिकल्ट्स भी अच्छे रहे हैं, इसमें भी कोई शक नहीं ।

Chaudhri Phool Chand (Rohat): On a point of order, Sir. In the proposal my friend seeks that the House should recommend to the State Government the change in the education system. परन्तु यह तो वर्तमान एजुंकेशन के ढांचे को ही रिकमैड कर रहे हैं ।

श्री के० एन० गुलाटी : कुछ साथी कुछ न कुछ बोलने का मौका ढूंढते रहते हैं, यह बात दूसरी है, कि वे तुक से बोलें

या बेतुका बोलें, ताकि किसी न किसी तरह से अखबारों में उनका नाम आ जाए ।

स्पीकर साहब, मैं तो अभी मौजूदा ढांचे के बारे में ही कह रहा था कि और जगहों की निस्बत एजुकेशन का स्तर हमारे यहां फिर भी अच्छा है, क्योंकि सारे हिन्दुस्तान में अभी तक यही सिस्टम चल रहा है । खैर, अब मैं अपने रैजोल्यूशन की तरफ आता हूं । इस रैजोल्यूशन को स्पीकर साहब, मैं एक अच्छी सद्भावना से लाया हूं । शिक्षा के मौजूदा ढांचे के चारे में यदि हम अपने मन और दिमाग से अच्छे मुझे उम्मीद है सुझाव सरकार को दें तो है कि इसमें परिवर्तन आ सकता हैं, सुधार हो सकता है, और और भी तरक्की एजुकेशन डिपार्टमैट की हो सकती है । मैंने 26–27 प्यांयटस सुझाव के रूप में नोट किए हैं । मैं उम्मीद करता हूं कि एजुकेशन मिनिस्टर साहब और एजुकेशन डिपार्टमैंट के हाई आफिशियल्ज इनको नोट करेंगे और इनमें से किसी को अगर वे अच्छा समझेंगे, तो उसे लागू भी जरूर करेंगे ।

माननीय स्पीकर साहब, सबसे पहला प्वांयट जो मैं कहना चाहता हू, वह यह है कि पहले हमारे स्कूलों में 35 स्टूडैन्ट्स के ऊपर एक टीचर होता था, लेकिन आज उस तरीके को बदला गया है और 45 स्टूडैन्ट्स एक टीचर के हवाले किए गए हैं । ठीक है, आफिशियत्ज और सरकार जो कुछ भी सोचती है, वह अच्छाई के लिए सोचती है, लेकिन मैं सुझाव के रूप में कहना चाहता हूं कि एक टीचर 45 स्टूडैन्ट्स को अच्छी तरह से

काबू नहीं कर सकता, अच्छी तरह से लिखा–पढ़ा नहीं सकता । तो बड़ी नम्रता से मेरा सुझाव है कि पहले की तरह वही 35 स्टूडैन्ट्स एक टीचर को दिए जाएं । ऐसा करने से मुझे उम्मीद है कि हमारी एजुकेशन का स्टैण्डर्ड जो आगे ही अच्छा है, और भी अच्छा होगा तथा और भी ब्रिलिएंट, अच्छे और होशियार स्टूडैन्ट्स निकलेंगे तथा प्रदेश और देश को चमकाएगे ।

माननीय स्पीकर साहब, हरियाणा की आबादी बड़ी । इसी तरह से स्टूडैन्ट्स भी हाई स्कूल्ज और कालैजिज में बढ़े । बिल्डिग्ज नई बनाई गयीं । इसमें भी शक नहींकि स्कुल्ज में भी काफी ऐडीशन की गई, लेकिन स्टूडैन्ट्स की तादाद काफी बढ़ी है । इसके लिए. मैं. यह सुझाव तो नहीं दूंगा कि ज्यादा स्कूल और कालेज बनाए जाएं, कमरे बनाए जाएं या इक्विपमैंट ज्यादा खरीदी जाएं, लेकिन मैं यह सुझाव जरूर दूंगा कि जहां कहीं भी स्कूल में पांच सौ से या हजार सेज्यादा स्ट्डैन्ट्स हैं, वहां डबल शिफ्ट्स चलाई जाए । दिल्ली में इसी तरह का सिस्टम चल रहा है । इसमें कमरों की तकलीफ। बिल्ड़ग की तकलीफ और

दूसरी तकलीफें रफा हो जाएगी और अच्छी एजुकेशन हमें मिल सकेगीं । अभी' पिछले साल से फरीदाबाद में भी यहं तजुर्बा किया गंदा है और बड़ा अच्छा रिजल्ट उसकी निकलों है । तो इससे भी हमारी एजुकेशन को बहुत लाभ पहुंच सकता है । लेकिन इसमें एक ख्याल जरूर रखा जाए । जहां भी डबल शिफ्ट

हो, उसका एक ही इन्चार्ज हो, ताकि वह स्कूल की प्रोपर्टी की देखभाल ठीक से कर सके ।

15.00 बजे

माननीय स्पीकर साहब, इस वक्त देखने में आया है कि लेडी टीचर्ज जो देहातमें लगाई जाती हैं, वे शहरों की लड़कियां होती हैं और रोज वे अपने घरों से वहां जाती है । यह तो ठीक है कि उनको देहात के वातावरण के मुताबिक अपने आपकों ढालना चाहिए, लेकिन कुछेक ऐसे हालात का उनको मुकाबला करना पड़ता हैं जिसका हल सरकार' को करना चाहिए । जैसे उन्हें वहां रिहायश अच्छी नहीं मिलतीं, कनवेएस नहीं..मिलती । 99 परसैन्ट लेडी टीचर्ज यह कोशिश करती है कि वे देहात से शहर में भागें । तेजी से बसों में चढ़ने की वे कोशिश करती हैं । कई बार गिरती है और फिर उठती हैं । मैं महसूस करतो हूंकि और जगहों की निस्बत हमारे यहां लोगों का चरित ऊंचा है, क्योंकि यहं ऋषि मुनियों की भूमि है, लेकिन फिर भी हर जगह कुछ मनचले गुण्डे टाईप के– नौजवान होते हैं । ' वे गुण्डे मनचले नौजवान उन लेडी टीचर्ज के साथ, जहां बिल्कुल जंगल का कच्चा रास्ता होता है और वे अपने साईकिल पर या पैदल जा रही होती हैं, टिचकर बाजी या छेड़खानी करते हैं । इससे उन लेडी टीचर्ज को बड़ी परेशानी होती है । उनका दिल, उनका दिमाग अपने थत की तरफ रहता है, या अपनी इज्जत बचाने में लगा रहता है । वे पढ़ाई की तरफ ज्यादा ध्यान नही दे सकतीं ।

तो मैं सुझाव दूंगा कि देहात मैं रहने वाली लड़कियों को ही देहात के स्कूलो में टीचर लगने की प्रैफैस दी जाए, क्योंकि आजकल काफी देहाती–लड़कियां भी पड़ लिख गई हैए और शहर की लड़कियों को शहर में ही रखा जाए । मेरा यह सुझाव है । बाकी हमारी सरकार स्वयं सूझ वाली है । बहुत अच्छे ढंग से यह सोचती है । अगर इस तरफ भी यह ध्यान दे, तो बहुत अच्छी बात होगी । लेकिन अगर यह चीज नामुमकिन है, तो मैं यह सुझाव दूंगा कि जहां हमारे स्कूलों में लाखो विद्यार्थी पढ़ते हैं, उनसे अगर एक–एक रुपया हर ' विद्यार्थी से जीप फण्ड का ले लिया जाए, तो काफी जीपें खरीदी जा सकती हैं । वह जीप हर लेडी टीचर को देहातों से बैठा कर बस स्टैण्ड्स पर छोड़ आया करे, ताकि वे आसानी से अपने घरों को आ सके । जब लेड़ी टीचर्ज को यह उम्मीद हो जाएगी, कि बस मिलने में कोई दिक्कत नहीं, होगी, तो वे देहातो में जाने पे कोई दिक्कत महसूस नही करेंगीं । लेडी टीचर्ज का हौसला बुलन्द होगा और देहातों में जौने में कोई आनाकानी नहीं करेगी । ट्रान्सफरों सें जो अब इनकारी होती है, यह भी प्रॉबलम सरकार की खत्म हो जाएगी । वे जीपों – में जाएंगीं और ''उनका रास्ता हमवार हो जाएगा । ऐसा करने से एजुकेशन डिपार्टमैंट को भी मदद मिलेगी एजुकेशन का स्टैण्डर्ड भी बहुत ऊंचा होगा । स्पीकर साहब, जहां तक चरित्र को बढ़ाने कीं बात है उसके बारे' मैं कभी कभी मैं सोचता हूं कि ऐसा क्यों होता है (मेरा यह विचार है कि स्कूलों और कालेजो के अन्दर जो फंकशन्ज जैसे ड्रामे वगैरह होते हैं, उसमें जो पार्ट प्ले किए

जाते हैं, वे अच्छे ढंग के नहीं हॉत हैं । आजकल एमरजेंसी के समय में तो मैं मानता हूं कि नैशनल टच, सोशल टच और धार्मिक टच के होते हैं लेकिन एमरजंसी से पहले बहुत खराब रोल अदा किए जाते थे । कम से कम 60 और 40 परसैन्ट तो ऐसे पार्ट प्ले किए जाते थे, ऐसे गाने और गीत गाए जाते थे, जो करैक्टर को गिराने वाले होते हैं । एमरजेंसी लाग होने के बाद काफी सुधार आया है । आज हर स्टेज पर नैशनल टच, सोशल टच, धार्मिक टच और वन एक्ट प्ले 'में, गीत और गानों में काफी सुधार हुआ है । लेकिन अभी भी मैं देखता हूं कि पांच परसैन्ट दस परसैन्ट पब्लिक स्टेजों पर, स्कूलों और कालेजों में ऐसी बात होती है । ये किताबें, वन एक्ट प्ले वगैरह बच्चों के करैक्टर को ऊंचा नहीं कर सकती बल्कि वे तो गिराती हैं । मैं इस बारे में एक सुझाव देना चाहता हूं कि एजुकेशन बोर्ड, एजुकेशन डिपार्टमैंट अपने–अपने तरीके से सुधार करे या कोई अपनी तरफ से सरकुलर निकाले, पहले भी निकालते रहते हैं कि किसी भी स्कूल और कालेज के अन्दर जो भी फंक्शन हो, स्टेज पर, उसका एक–एक लफ्ज चालचलन को ऊंचा करने वाला होना चाहिए । स्टेज पर एक–एक बात, वन एक्ट प्ले नैशनल भावना से, सोशल भावना से, धार्मिक भावना से भरा हुआ होना चाहिए । देखने वाले ये महसूस करें कि हम जो कुछ भी सुन रहे हैं, या देख रहे हैं वह बच्चों का करैक्टर ऊंचा उठाने वाली बातें हैं । जब भी बच्चे या बड़े अच्छी किताबें देखेंगे, अच्छी बातें सुनेंगे, तो ड़नका करैक्टर ऊंचा उठेगा । हमारा देश और प्रदेश तरक्की करेगा ।

समाज का सुधार होगा । मेरे कहने का मतलब यह है कि जब तक हमारा चरित्र ऊंचा नहीं होगा, तब तक समाज में सुधार नहीं हो सकता ।

इसके साथ–साथ मैं यह बात भी कहना चाहूंगा कि स्कूल और कालेजों के बच्चों का चरित्र ऊंचा उठाने के लिए सारे स्कूलों, कालेजों में आधा घंटा, एक घंटा या 15 मिनट का एक पीरियड ऐसा होना चाहिए जिसमें सोशल परिचर, धार्मिक परिचर और नैशनल परिचर हो । इससे स्टूडैन्ट्स को बहुत फायदा होगा । स्टूडैन्ट्स का अच्छी बातों की तरफ धार्मिक और नैशनल चीजों की तरप्ह ध्यान होगा तो उसका चरित्र ऊंचा उठेगा । वे स्टूडैन्ट्स जो आज कमजोर हैं मां–बाप की सेवा नहीं करते टीचर्ज की कदर नहीं करते ऐसा करने से यह चीज भी खत्म हो जाएगी । अगर स्टूडैन्ट्स अच्छी बातें सुनेंगे तो उनपर अच्छा ही असर पड़ेगा । अगर हर स्कूल और कालेज में एक पीरियड ऐसी शिक्षा का हो जाए तो बच्चे अपने पेरैन्ट्स की अपने गुरुओ की कदर करेंगे सेवा करेंगे, प्यार से बोलेंगे, आदर करेंगे ।

स्पीकर साहब मैं यह भी चाहता हूं जितनी किताबें खरीदी जाएं चाहे. हे चाइल्ड फण्ड से खरीदी जाएं चाहे लाइब्रेरी के लिए खरीदी जायें उनको पूरे तरीके सेदेख कर उनका एक–एक लच्छ चौक करके खरीदी जानी चाहिएं । किताबें गलत खरीदने से बच्चों के एजुकेशन के स्टैण्डर्ड में गिरावट आती है । जो भी किताब खरीदी जाए उसका एक– एक लफ्ज कोट करने

वाला होना चाहिए एक–एक लफज अच्छी भावना को बढाने वाला होना चाहिए । जब भी स्टूडैन्ट्स उस किताब को पढ़ें तो उनका दिमाग ऊंचा होता चाहिए टीचर कों किताब पढ़ाते वक्त मजा आना चाहिए । स्टूडैन्ट्स के पैसे भी खर्च ' हो जाते' हैं और किताब भी अच्छी नहीं खरीदी जाती हैं इस चीज पर रोक लगनी चाहिए । मैं तो ग्रह महसूस करता हूं कि कई किताबों का तो एक भी लफ्ज ठीक नहीं है ऐसी किताबें ही बच्चों के स्टैण्डर्ड को गिराती हैं ।

स्पीकर साहब, गवर्नर साहब के एड्रैस के टाईम पर मैंने एक किताब यहां हाउसमें दिखाई थी अब तो मैं उसका जिक्र नहीं करना चाहता हूं । मैं तो खुशी महसूस करता हूं कि कल यहां पर चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा कि जो भी एम०एल०ए० हैं उनकी खुद की भी जिम्मेदारी है जो भी एम ० एल० ए० अच्छे सुझाव देगा मैं उनको मानूंगा । मैं अपने चीफ मिनिस्टर साहब को दाद देता हूं । मेरी बात को सुना गया इनक्वायरी की गई और ऐक्शन भी लिया गया । यह कितनी अच्छी बात. है । अगर ऐसी बातें समाज में हों, तो हम बहुत ज्यादा देश में तरक्की करेंगे । हम एम०एल०ए० जो भी यहां हाउस में बोलते हैं, उन चीजों को अफसर नोट करें ।

श्री अध्यक्ष : आज जो हाउस में रैजोल्यूशन है, वह तो 'चेंज दी प्रैजैटं पैटर्न आफ एजुकेशन' के मुत्तालिक है, लेकिन आप तो पैट्रन आफ एम०एल० ए० के मुत्ताल्लिक बोल रहे हैं (हंसी) ।

श्री के०एन०गुलाटी : स्पीकर साहब, अगर एम० एल० ए० की तरफ से अच्छे सुझाव आएं तो एजुकेशन में काफी सुधार होता है ।

स्पीकर साहब, आज से 10– 15 साल पहले हमारे यहां फरीदाबाद में टैक्नीकल एजुकेशन दी जाती थी । इसमें कोई शक नहीं है कि वहां पर टैक्नीकल मशीनें लगी हुई हैं । उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता था, चाहे इस बात को इन–डिस्पिलन समझिए लेकिन अब एमरजेंसी में वहां भी हर बात ठीक चल रही है । उसवक्त उन मशीनों की कोई परवाह नहीं करता था । कुछ देर टैक्नीकल एजुकेशन हमारे स्कूलो में चली । हरियाणा के दूसरे स्कूलों में भी चली, लेकिन कुछ देर से वह टैक्नीकल एजुकेशन बिल्कुल खत्म हो चुकी है, मशीनें स्कूलों में खराब हो गई हैं । मैं यह कहूंगा कि इस एमरजेंसी के टाईम में, नई रोशनी के अन्दर, नए युग के अन्दर टैक्नीकल एजुकेशन की सख्त जरूरत है । टैक्नीकल एजुकेशन होगी, तो अन–एम्लायमैंट खत्म होगी । हमारे स्टूडैन्ट्स अच्छी शिक्षा लेकर निकलते हैं, तब भी अच्छी जॉब नहीं मिलती है । वे बेचारे मारे–मारे फिरते हैं । उनको नौकरी न मिलने का कारण यह है कि टैक्नीकल एजुकेशन नहीं मिली । वैसे हमारे आई०टी०आई० खुले हुए हैं, उनमें टैक्नीकल शिक्षा दी जाती है । अगर सारे स्टूडैन्ट्स को दिमागी एजुकेंशन के साथ–साथ टैक्नीकल एजुकेशन भी दी जाए, तो उनका और भी ज्यादा भला हो सकता । कालेजों के अन्दर टैक्नीकल एजुकेशन रैगुलर तौर

पर दी जानी चाहिए । अगर टैक्नीकल एजुकेशन होगी, तो बेरोजगारी का नामोनिशान नहीं रहेगा ।

स्पीकर साहब, मैं चाहूंगा कि एचुकेशन डिपार्टमैंट और एजुकेशन मिनिस्टर साहब इस बात की तरफ ध्यान दें और फौरन ही टैक्नीकल एजुकेशन का प्रबन्ध स्कूलों और कालेजों में कर दियाजाए । माननीय स्पीकर साहब, मुझे अपनी जिन्दगी में यह याद है कि हम जब स्कूलों में पढ़ते थे, तो पांचवीं क्लास का बोर्ड का इम्तहान, आठवीं क्लास का बोर्ड का इस्तिहान, दसवीं का यूनिवर्सिटी का इस्तिहान, बाहरवीं का यूनिवर्सिटी का इम्तिहान और चौदहवीं और सोलहवीं का भी यूनिवर्सिटी का इस्तिहान होता था । यह हमारी जिन्दगी का तजरुबा हैं । उस समय एजुकेशन का स्टैण्डर्ड बहुत ऊंचा था । मैंने सन् 1939 में सिर्फ मैट्रिक की है ।

परिवहन मंत्री (श्री. के.एल.पोसवाल) : गुलाटी साहब, आपने एम०ए० कहां से किया था?

श्री के ० एन० गुलाटी : जनाब, मैंने तो सिर्फ मैट्रिक की है । मैंने सन् 1939 में मैट्रिक किया, लेकिन इम्तिहान बोर्ड के देने पड़े । पांचवीं का आठवीं का बोर्ड का और 10 वीं का यूनिवर्सिटी का इम्तिहान दिया । मुझे आज अपने आप पर फख्र है कि मैं एक अच्छे पढ़े– लिखे का? मुकाबला कर सकता हूं । मेरा कहने का मतलब यह है कि इसकी वजह क्या थी? बोर्ड के और

यूनिवर्सिटी के इस्तिहानों में ऐफीशिऐंसी होती थी । स्टूडैन्ट्स अपने दिमाग से पास होते थे । आज पांचवीं का इम्तिहान नहीं है । हैडमास्टर अपने आप पास कर देते हैं, अपना अच्छा रिजल्ट दिखाने के लिए । आठवीं का. इम्तिहान कभी बोर्ड का होता है कभी प्रिंसिपल ले लेता है और कभी फिर बोर्ड ले लेता है । इस तरह से हमारा हरेक इम्तिहान के लिए अलग–अलग सिस्टम है । मैं यह चाहूंगा कि यदि पुराना सिस्टम दोहरा दिया जाए कि पांचवीं, आठवीं का बोर्ड का इम्तिहान, 10वींय बाहरवीं खत्म करके–इन्टर, बी0 ए0 और एम0 ए0 का यूनिवर्सिटी का इम्तिहान, तोमेरा ख्याल है कि इससे स्टैण्डर्ड बढ़ेगा 'और नकल भी नहीं हो सकेगी । स्टूडैण्ट्स अकल से पास होंगे और नकल की बात ही खत्म हो जाएगी । इससे स्टैण्डर्ड आफ एजुकेशन बढ़ेगा और स्टूडैन्टस अच्छी एजुकेशन लेकर देश के अच्छे शहरी' बनेंगे । स्पीकर साहब, मैंने अभी नकलकी बात कही । आजकल सैन्टरों में यह बात ठीक है कि बड़ा सुधार होरहा है, बड़ी स्ट्रिक्टनैस हो रही है–बोर्ड और यूनिवर्सिटी कीतरफ से, लेकिन मैं फिर भी थोड़ा सा अर्ज करूंगा कि इसको और भी सख्त करें, क्योंकि आजभी कोशिश की जाती है कि स्टूडैन्ट्स नकल से पास हों । इसलिए चारों तरफ से– अच्छी तरह से घेरा डालकर इस ओर. और भी मजबूती से कदम उठाए जाएं, कोई भी स्टूडैन्ट नकल मारने की जुर्रत न कर सके । अगर वे अकल से पास हों, तो इससे प्रदेश काऔर देश का भला होता है । माननीय स्पीकर साहब, हमारे स्कूलों और कालेजों की बिल्डिग्ज बहुत अच्छी हैं, इसमें कोई शक

नहीं है, लेकिन कहीं–कहीं हम देखते हैं कि बिल्डिंग्क और होस्टल्क की हालत बहुत खराब हो रही है । डिपार्टमैंट के आफिसर्ज भी जाते हैं और देखते हैं लेकिन सालों–साल वे ठीक नहीं होतीं । हम एम० एल० एज० जब भी मीटिंगों में बैठते हैं. तो वहां भी प्यांयट आउट करते हैं, लिखते भी रहतें हैं । ऐसे. काम करने में यह ठीक है कि देर लगती है, इसके पीछे कई कारण हैं, यह सब डिपार्टमैंट जानें, लेकिन मैं अर्ज करुगां और 'सुझाव के रूप में कहूंगा कि ऐसी बिल्डिंग्ज जिनकी हालत बहुत खराब हो या गिर रही हों, उनकी तरफ अरजैन्ट या इम्मीजिएट तौर पर ध्यान दिया जाए, और नुक्सान होने से बचाया जाए । मैं स्पीकर साहबय एक मिसाल देता हू ।

श्री अध्यक्ष : आप एजुकेशन की डिमांड पर नही बोल रहे हैं । आपका जो रैजोल्यूशन है, यह पैट्रन आफ एजुकेशन पर है न कि पैट्रन आफ बिल्डिग्ज पर ।

श्री के ० एन० गुलाटी : पैटर्न आफ एजुकेशन क्या करेगा जब स्टूडेन्टस को बैठने के लिये जगह ही न मिले । इसलिये यह पैटर्न आफ एजुकेशन ही एक तरह से आ जाता है । मैं आपको मिसाल देता हू । हमारे फरीदाबाद में जे० बी० टी० का गर्ल्ज होस्टल है । जब होस्टल वहां का गिर गया तो बेचारी लड़कियां सड़क पर भागती फिरें, यह कहां का स्टैडर्ड है । मैं यह बताना चाहता हूं कि रीसैटली जे०बी०टी० के होस्टल की एक दीवार गिर गयी । खुशकिस्मती से प्रिंसिपल और उसके बच्चे बच

गये । उसका दो हजार का नुक्सान हुआ और उसने क्लेम भी नहीं किया । नया दूसरा कोई होस्टल है नहीं, इसलिये जे० बी० टी० की गर्ल्ज मारी–मारी फिर रही हैं, कभी कहीं रहती हैं, कभी किराये पर रहती हैं । तो मैं अर्ज करूंगा कि ऐसी चीतों की तरफ तेजी से ध्यान दिया जाये ताकि स्टूडैन्टस को तकलीफ न हो ।

श्री अध्यक्षः आपका सुजैशन क्या है?

श्री के० एन ० गुलाटी : मेरा सुजैशन यही है कि इम्मीजीएटली उसके लिये कोई प्रबन्ध किया जाये । स्पीकर साहब, एक दौलताबाद में प्राइमरी स्कूल है । उसमें 700 बच्चे हैं और 25 टीचर्ज हैं । उसके लिये कोई प्रौपर जगह नहीं है । उसकी चार–दीवारी टुट गयी है । चार कमरे हैं, उन पर छत नहीं है । सरकार के अफसरान भी देखते हैं, इन्सपैक्टर्ज भी देखते हैं लेकिन उसका हल अभी तक भी नहीं निकला है । इसलिये मेरा आपकी मार्फत सरकार को यह सुझाव है कि ऐसी बातों की तरफ बहुत ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए । जहां इतने स्टूडैन्ट्स हों, वहां पर बिल्डिग की हालत इतनी खस्ता हो, यह अच्छा नहीं है । मेरा सुझाव यहं है कि ऐसे सुधार करके ऐजुकेशन में और ज्यादा तेजी से सुधार हो सकता है । माननीय स्पीकर साहब, यह ठीक है कि हमारे फंडज इजाजत नही देते कि हम अगने स्कूलों को और अपग्रेड करें । हम अपग्रेड नही कर सकते, सरकार की यह पालिसी है । हम इस बात को मानते हैं । लेकिन मैं सुझाव के रूप में यह कहना चाहूंगा कि जहां इतना खर्चा होता है, वहां

इसके लिये भी चाहे कही से भी कुछ फन्डज सरकार अलाट करे और कम से कम दो स्कूलों की अपग्रेडेशन के लिये हर एम० एल० ए० को कहे इस वक्त हमारी 90 कांस्टीच्यूएंसी हो गयी हैं क्योंकि 9 बढ़ गयी है, मेरा कहना यह है कि हर एम० एल ० ए ० को दो–दो स्कूलों की रिकमैंडेशन के लिये कह दे ताकि हायर एजुकेशन के लिये जिसके लिये हमें बाहर दूसरी स्टेटों में जाना पड़ता है, वहां जाना न पड़े अगर हर एम०एल ०ए० कौ दो–दो स्कूलों की रिकमैंडेशन के लिये कह दिया जाये तो जो हम बहुत ही जरूरी समझेंगे, कह देंगे और वे दो–दो स्कूल अपग्रेड कर दिये जायें । यह एक बहुत अच्छी बात होगी । यह मेरा सुझाव है और अगर सरकार ऐसा कर दे तो उसकी बड़ी मेहरबानी होगी । अपग्रेडेशन से हाई क्लो सिज के स्टूडैट्स हायर एजुकेशन लेकर तरक्की कर पायेंगे और इससे देश का भी भला है । स्पीकर साहब, मैं जहां दूसरें सुझाव दे रहा हु वहां फरीदाबाद की बात भी खास तौर पर कहूंगा । जब फरीदाबाद टाउनशिप बना तो उस वक्त उसकी आबादी 25,000 थी । 25,000 की आबादी के लिये जो मौजूदा स्कूल और कालेज हैं, उनके लिये वह बन्दोबस्त किया गया था । आज फरीदाबाद इटसैल्फ की आबादी अढाई लाख की है । फरीदाबाद और बल्लभगढ की आबादी 5 लाख की है । वह कागजों में' 4 लाख है लेकिन एक्चुअली आबादी 5 लाख है । मेरा कहने का मतलब यह है कि मौजूदा स्कूल और कालेज बहुत थोड़े हैं और दूसरे उन में सबमें बी०ए० और बी०एस०सी० तक का प्रबन्ध है । फरीदाबाद और बल्लभगढ केकिसीभीएरियामें एम०ए०,

एम० एस० सी०, एम०कोम०, बी०एड० या एल०एल०बी० का प्रबन्ध नहीं है जबकि फरीदाबाद हरियाणा का एक् बाजू गिना जाता है । फरीदाबाद हरियाणा की हर प्रकार से मदद करता है । मैं ऐजूकेशन की लाइन पर आते हुए. अर्ज करना चाहता हूं कि फरीदाबाद के स्कूलों–कालिजों में कम से कम हायर क्लासिज का बन्दोबस्त जरुर कर दिया जाये । स्पीकर साहब, मैं इस बात को कहने में बहुत फख्र महसूस करता हूं कि हमारे जो पिछले मुख्य मन्त्री माननीय चौधरी बंसी लाल जी थे, उनके साथ मेरी हायर क्लासिज के लिए बातचीत हुई थी । उन्होंने यह कहा था कि गुलाटी साहब इस साल टाल कर लो, अगले साल कोशिश करेंगे कि कुछ प्रबन्ध कर दिया जाये ।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज । अगर फरीदाबाद के मसले हल हो जायेंगे तो क्या सारी स्टेट का पैटर्न आफ एजुकेशन बदल जायेगा?

श्री के०एन० गुलाटी : स्पीकर साहब, फरीदाबाद हरियाणा का बाजू है । अगर फरीदाबाद को मदद मिलेगी तो हरियाणा के बाजू को मदद मिलेगी । अगर बाजू तगड़ा होगा तो सारी स्टेट को मदद मिलेगी । इसलिये मैं यह चाहता हूं.

Mr. Speaker : Order please. Try to be relevant.

श्री के ०एन० गुलाटी : स्पीकर साहब, मैं यी चाहता हु .इइ रु हायर क्लासिज के लिये वहां कोई प्रबन्ध किया जाये ।

इसके लिये सात सैक्टर मै एक हायर सेकण्डरी स्कूल है, उसको आप बदल कर वहां से पुरानी बिल्डिग में ले जायें और हायर सैकेण्डरी कूल की नयी बिल्डिग है, उसमें हायर–क्लासिज का बन्दोबस्त हो सकता है । इस तरह से बगैर बिल्डिंग के खर्चे के तहां पर हायर क्लासिज चलायी जा सकती हैं । वहां पर एक नैहरु कालिज अजरौंदा है जो लाक्ड पडा– हुआ है । उसके अन्दर सामान पड़ा हुआ है । उसके सामान को बचाया जाना चाहिए । उसका कोर्ट में केस खत्म हो चुका ीऐ । उस बिल्डिंग में क्लासिज का बंदोबस्त हो सकता है । सरकार का (रक पैसा भी खर्च नहीं होगा । उसका एरिया काफी बड़ा है । फरीदाबाद का इलाका दिल्ली के नजदीक भी है । इस बिल्डिग को लेने से एजूकेशन में बड़ा इम्प्रुवमैंट होगा और हर तरह की ऐजूकेशन का प्रबन्ध हो सकता है ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : स्पीकर साहब, मेरा प्वाएंट आफ आर्डर है । मेरे मोहतरिम दोसा का जो रेजोल्यूशन है वह है चेन्ज दि पैटर्न आफ एजूकेशन इन दि स्टेट ये उस पर तो बोल ही नहीं रहे है । कम से कम इनसे एक फिकरा तो चेन्ज पर कहलवाओ

श्री अध्यक्ष : यह सिस्टम को ठीक करने को ही चेन्ज इन पैटर्न समझते हैं ।

चौधरी फूल चन्द (रोहट) : सिस्टम को चेज करने पर तो यह एक भी चीज नहीं बोल रहे हैं । एक फिकरा तो यह कह दें कि सिस्टम में चेंज होनी चाहिए (व्यवधान)

श्री के०एन०गुलाटी : फरीदाबाद वालों को बोलने दीजिए सोनीपत का भी नम्बर आ जाएगा । स्पीकर साहब, मैं अर्ज करना चाहता हूं कि 20 सूती कार्यक्रम के सिलसिले में हरियाणा सरकार ने किताबों के मामले में जो तेजी दिखाई है, जो किताबों का बन्दोबस्त किया है वह बड़ा सराहनीय है । लेकिन मुझे पता चला है कि किताबों का यह इन्तजाम सिर्फ गवर्नमैंट स्कूल और कालिज तथा गवर्नमैंट एडिड स्कूल तथा कालिजों के लिए है । मेंरा सुझाव है कि एजुकेशन के सिस्टम में सुधार के लिए यह जरूरी है कि तमाम स्कुलों और मिडिल स्कूल के बच्चों को इसका फायदा पहुंचे । स्पीकर साहब, मेरा ख्याल है कि तीस प्रतिशत प्राईवेट स्कूल और कालिज हैं जो रिकग्नाइज्ड नहीं, एडिड भी नहीं हैं लेकिन उन प्राईवेट स्कूलों में सौ से भी ज्यादा स्टूडेंट्स पडते हैं । मेरा सुझाव है कि जिस प्राईवेट स्कुल में और कालिज में पचास या पचास से ज्यादा स्टूडेंट्स पढ़ते हैं चाहे वह रिकग्नाइज्ड है, या नहीं है चाहे वह एडिड है या नहीं है उसमें भी सस्ती किताबों की सुविधा दी जानी चाहिए । क्योंकि उन स्कूलों में भी नेशन के बच्चे पड़ते हैं, उन स्कूलों में भी हरियाणा के बच्चे पढ़ते हैं । इसलिए यह किताबों की सुविधा वहां भी मिलनी चाहिए ताकि प्राइवेट स्कूलों के बच्चे उसका फायदा उठा सकें ।

स्पीकर साहब, मैं यह भी अर्ज मारना चाहता हूं कि ऐमरजेन्सी ने बड़ा फायदा किया है । ऐमरजेन्सी से पहले कुछ स्टडेन्ट्स बड़ी तोड़फोड़ के काम किया करते थे । हरियाणा इस बात में खुशकिस्मत है कि जहां हरियाणा ने दूसरी समस्याओं को सुलझाया है वहां स्टूडेंट्स को शी कन्ट्रोल किया है । उनमें काफी. सुधार आया है । अब वे पोलिटिक्स रें रोल प्ले नहीं करते बल्कि जी लगा कर पढ़ते हैं । मैं उनको बधाई देता हूं कि वे स्कूलों से अच्छी एजुकेशन लेकर, अच्छे शहरी बनकर प्रदेश और देश का नाम चमकाएंगे । लेकिन फिर भी मैं सुझाव देना चाहता हूं कि अगर कहीं कोई बात स्टूडेंट्स कीं तरफ से नजर आए तो एजूकेशन डिपार्टमैंट तो बहुत सख्ती से पेश अगा चाहिए। अगर किसी प्राइवेट स्कूल के स्टूडेंट्स कोई गड़बड़ी करते हैं. तो उनकी तरफ ध्यान रखा जाना चाहिए । मैं एक स्कूल की तरफ आपकी तवज्जह दिलाना चाहता हूं जिसका नाम पब्लिक कालिज, नेहरू ग्राउन्ड, एन० आई० टी०, फरीदाबाद है वह प्राईवेट है और रिकग्नाइज्ड नहीं है । वह स्कूल ऐन्टी नेशनल है । वहां के प्रोफेसर और प्रिंसिपल ठीक नहीं हैं । अभी भी बीस–बीस की टुकड़ी बाजार में खुल्लमखुल्ला घूमती रहती हैं । ऐसे स्कूल को चौक किया जाए । स्पीकर साहब, एजूकेशन पैटर्न में सुधार लाने के लिए मैं यह कहना 'चाहता हूं कि गेम्ज का प्रोग्राम आमतौर पर इम्तहानों के नजदीक होता है । इससे बच्चों की पढ़ाई का काफी नुक्सान होता है बच्चे खेल में ही लगे रहते हैं और अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान नहीं देते । मेरा सुझाव है कि गेम्ज हा प्रोग्राम

परीक्षाओं के बाद होना चाहिए । जब इम्ताहान खत्म हो जाए तो गेम्ज रखे जाएं । गेम्ज के प्रोग्राम में 15–15 दिन और कभी–कभी हुक एक महीना लग जात. है । गेम्ज का प्रोग्राम इम्तहान के फौरन बाद रखा जाग्र जिससे बच्चे मेहनत करके अपनी योग्यता से पास हों ।

स्पीकर साहब, एजूकेशन डिपार्टमैंट और सोशल वेलफेयर डिपार्टमैंट एजुकेशन के लिए स्कूलो को ग्रान्ट देते हैं । मैं यह कहना चाहता हूँकि डिपार्टमैंट. को चौक करना चाहिएं कि यहै' ग्रान्ट ठीक यूटिलाइज हो । मेरा विचार है कि उस ग्रान्ट का ठीक यूटिलाईजेशन नहीं होता ।

स्कूलों की सरपराइज विजिट की जाए और उनके रजिस्टर आदि चौक किए जाएं कि ग्रान्ट ठीक इस्तेमाल की जा रही हैंतो नहीं । विजिट की, स्कूलों को अगर पहले सूचना मिल जाती है तो वह. हरफर करके उस ग्रान्ट काठीक यूटिलाइजेशन दिखा देते हैं । खासकर एडिड जो स्कूल है वहां ग्रान्ट की ठीक इस्तेमाल नहीं होता । मेरा' सुझाव यही है कि सरपराइज विजिट करके चौक किया जाए ''कि ग्रान्ट का ठीक यूटिलाइजेशन हो ।

'स्पीकर साहब, मैं एक और सुझाव देना चाहता हूं । एजूकेशन के स्टेन्डर्ड में सुधार करने के लिए यह किया जाना चाहिए कि जिन बच्चों के पेरेन्ट्स की आमदनी 300 रुपए माहवार है उनकी फीस माफ होनी चाहिए । वैसे देखा जाए तो 300 रुपए

कुछ भी नहीं हैं । यह फीस माफ चाहे कोई भी बच्चे हों चाहे वह हरिजन (इस समय सभापति तालिका के सदस्य राव निहाल सिंह पदासीन हुए) बच्चे हों बैकवर्ड क्लास के बच्चे हों बिजनैस कम्युनिटी के बच्चे हों नौकरी करने वालों के बच्चे हों जिनकी आमदनी तीन सौ रुपया महावार हो उनकी फीस मापा होनी चाहिए । इस बीस सूखी कार्यक्रम के अन्दर हमें गरीब और बीकर सैक्सन को फायदा पहुंचाना है । अब क्या होता है कि जो बच्चे गरीब हैं और उनके मां–बाप फीस नहीं दे सकते वे स्कूल छोड्कर चले जाते हैं क्योंकि उनके मां–बाप फीस नहीं दे सकते । उनको फिर मजदूरी करनी पड़ती है । हमारा ध्येय तो यह होना चाहिए कि हर बच्चा स्कूल जाए और वहां पर एक अच्छा नागरिक बने और अपने देश और प्रदेश की सेवा करे । मैं यह भी कहना चाहूंगा कि जिस परिवार की 300 रुपये मासिक से कम आमदन हो उस पर हाउस टैक्स और प्रौपर्टी टैक्स भी नही लगना चाहिये । ठीक है यह बात इस रैजोल्यूशन से सबंधित तो नहीं है लेकिन मैं कहे बगैर री–नहीं सकता था । चेयरमैन साहब, मैं यह भी चाहूंगा कि एजुकेशन में सुधार लाने के लिये जहां पोस्टें खाली पडी रहती हैं चाहे वे स्कूलो में हों या कालेजों में हों उनको जल्द भरा जाना चाहिए । हुमने देखा है कि काफी देर तक पोस्टें खाली पड़ी रहती हैं इस वजह से भी एजुकेशन मे हानि होती है । मिसाल के तौर पर बल्लभगढ में इटाली स्कूल है । वहां पर हैडमास्टर नहीं है और ऐसे ही पलवल में एस०डी०ओ० दफतर में एक असिसटेंट की जगह खाली पड़ी है तो मेरे कहने का मतलब यह है कि कहीं भी

कोई पोस्ट खाली पड़ी हो उसे फौरन भरा जाए ताकि एजुकेशन को ताकत मिले और उसकी कमजोरी खत्म हो । चेयरमैन साहब, एजुकेशन के सिलसिले मैं मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जहां हम स्टूडैंट्स और उनके माता–पिता की जनता जनार्दन के रूप में स्पोर्ट करना चाहते हैं कि वे अच्छी एजूकेशन लें तो वहां मैं टीचरों और रिटायर्ड टीचरों का थोड़ा जिक्र भी करना चाहता हूं । मैं यह बात एक सुझाव के रूप में कहना चाहता हूं कि जब टीचर रिटायर हो जाते हैं तो उनकी पैनशन में बड़ी ढील की जाती है पैनशन के अलावा ग्रेच्यूटी, प्रोवीडैन्ट फंड,बाकी पीरियड के पेअलाउस वगैरह वगैरह उसे पे नहीं किये जाता । मैं महसूस, करता हूं कि इसमें ज्यादा कमजोरी ए ० जी० के आफिस की है । मैं एक वर्कर,एक एम ०एल०ए० के नाते ऐसे कामों के लिये दफतरों में टेबल टेबल पर पहुंच जाता हूं और एक–एक कागज के पीछे फिरता हूं हर डिपार्टमैट में रिटायर्ड आदमी को पैनशन की बड़ी दिक्कत रहती है । मेरे ख्याल में तो इसकी ज्यादा जिम्मेदारी ए०जी० के दफ्तर पर है । मेरा सुझाव है कि यूं ०जी० के दफ्तर में सिर्फ आडिट का काम रखा जाए और बाकी काम उनसे ले लियो जाए ताकि हमारे जो रिटायर्ड टीचर्ज हैं या दूसरा स्टाफ है उनको पैनशन वगैरह के मामले में कोई तकलीफ न हो । यहं भो एजुकेशन के सिलसिले में एक सुधार है क्योंकि एक टीचर अपना सारा जीवन शिक्षा देने के लिये अर्पित करदेता है और फिर रिटायर होने पर उसको अपना पैसा समय पर न मिले तो यह दुख की बात है । मैं एक टीचर का नाम भी बता देता हूं । डिपार्टमैंट

वाले नोट करलें । मैं एक लेडी की मिसाल देता हूं वह गुडगांव के कालेज की प्रिसिंपल थी जिसका नाम श्रीमती आर०डी०असीजा है । वह मई के महीने में रिटायर हुई । उसका अभी तक प्रोवेशनल अलाउंस बाकी पड़ा है 19 दिनका, 120 दिन का छुटी अलाउंस बाकी है, प्रोवीडैटं फंड की रकम बाकी पडीं है कहने कैंय मतलब यह है कि कोई भी चीज उसे नहीं मिली । वह अपने घर से सैकडों चिट्ठियां लिख चुकी है औरमैंने भी ए०जी०आफिस और डी० पी०आई० आफिस में जाकर काफी कोशिश की लेकिन पता नहीं उनकी कोआर्डिनेशन क्यों नहीं है या कहां पर कमजोरी है । तो मैं आपके द्वारा नम्रता से सुझावके रूप में अर्ज करूंगा कि चाहे कितना भी को–आडिनेशन करना पड़े, एक दूसरे टेबल से कागज क्यों न उठाना पड़े रिटायर्ड आदमी को उसकी पैनशन दो–तीन महीने कें अन्दर–अन्दर मिल जानी चाहिये। इसके बाद चेयरमैन साहब, मैं एक और अउर्व करना चाहता हूं जो टैम्पो– रेरी, रैगुलर, स्टाइपैडरी या एडहोक टीचर्ज हैं उनको पांच–पांच साल, 'आठ–आठ साल की सर्विस के बाद भी परमानैंट नहीं किया जाता जिसकी वजह से वह हर समय परेशान रहते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि उनका कोई फयूचर नहीं है । तो मैं यह सुझाव दूंगा कि एजुकेशन डिपार्टमैंट यहं रूल बना दे कि तीन साल की सर्विस के बाद हर टीचर को परमानैंट कर दिया जाए ताकि उसके दिमाग में यह रोशनी आ सके कि मेरा भी कोई भविष्य है । अगर ऐसा किया जाएगा तो वह विद्यार्थियों को भी अच्छी शिक्षा दे सकेगा । मेरी अर्ज है कि इस प्वायंट को सख्ती से देखा जाए । चेयरमैन

साहब, मैं आपको चार क्राफट टीचरों की मिसाल बताता हूं । एक एम०एल०ए०के नाते मुझे फरीदाबाद की सारी एग्जाम्पल्ज याद हैं । चार क्राफट टीचर्ज जो 1957 से सर्विस कर रहे हैं वे सिर्फ 60–75 के ग्रेड में हैं । आप अन्दाजा लगाएं 1957 से ले कर 1975, 18 साल में. उनको अपने फयूचर का पता नहीं है । वे वक्त वक्त पर अपना रिप्रिजैटेशन भी भेजते रहे हैं कि हमारा कुछ करो लेकिन उनका कुछ नहीं हुआ । वे 18 साल से सर्विस कररहे हैं लेकिन अभी तक उनको पक्का नहीं किया गया । उन बेचारों की रिप्रिजैंटेशन्ज पडी हैं और कल परसों मैं उनके कागज टेबल पर रख कर भी आया हूं । ऐसे लोगों को तो हमें प्रोत्साहित करना चाहिये कि. आप घबराएं नहीं । चेयरमैन साहब, अब मैं टीचर्ज की ट्रांसफर पर आता हूं.

चेयरमैन : गुलाटी साहब, आप ज्यादा एडमिनिस्ट्रेटिव साइड को तरफ बोल रहे हैं

श्री के० एन० गुलाटी : चेयरमैन साहब, यह भो एजुकेशन केंही संबंध में है कयोंकि जब टीचर गल्त तरीके से ट्रांसफर हो जोते हैं तो वे एजुकेशन ठीक नहीं दे पाते हैं इसलिये अगर आप इजाजत दें 'तो मैं एजूकेशन के सुधार के सिलसिले में ही बोलना चाहता–हूं । मैं मानता हूं कि हमारा इजाजत दे तो एजुकेशनं सिस्टम अच्छा है और हमारी हरियाणा सरकार 'ने 'इसमें अउछे 'सुधार किये हैं, किसी किस्म की कमी नहीं है लेकिन फिर भी और सुधार लाने कें लिये, और अच्छाई लाने के लिये तथा

और तेजी लाने के लिये मैं यह अर्ज कर रहा हूं ताकि हमारे बीस सूखी कार्यक्रम में और तेजी आ जाए जिससे कि हमारा हरियाणा और भी चमकेगा । आज कल क्या होता है कि किसी टीचर को सितम्बर के महीने में बदला जाता है किसी को अक्तुबर के महीने में और फिर किसी की ट्रांसफर केसल हो जाती है और किसी की रुक जाती है । तो ऐसी हालत में स्टूडैटंस की पढ़ाई का बहुत नुक्सान होता है । तो मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि यह जो ट्रासफर्ज हैं ये साल में एक बार अप्रैल के महीने में कर दी जाएं । कुछ भी हो 11 महीने ट्रांसफर नहीं होनी चाहिये । हमारे चीफ मिनिस्टर साहब मालिक हैं वे इन दि इन्टैरस्ट आफ पब्लिक, इन दि इन्ट्रैस्ट आफ गवर्नमैंट जो मर्जी करें । साल में 11 महीने सारी ट्रांसफर्ज बंद रहनी चाहियें और सिर्फ अप्रैल के महीने में ट्रांसफर्ज होनी चाहिये । अगली बात मैं यह कहना चाहता हूं कि टीचर्ज की तनखाह और खास तौर पर जे०बी०आई० की बहुत कम है इसे बढ़ाया जाये । इसके अलावा उनकी खास तौर पर जे०बी०टी टीचर्ज की नियुक्ति पचास साठ मील के फासले पर कर दी जाती है । स्कूलों मे रहने के लिये कोई क्वार्टर नहीं होते, गांव में रहने के लिये उनको मकान नहीं मिलते और अपने घरों में वह जा नहीं सकते क्योंकि पचास साठ मील दूर हैं जिससे उनको बहुत परेशानी का सामना करना पडता है । अपने बाल बच्चों को वह देख नहीं सकते कि वह किस हालत में हैं और दोहरा खर्च उनको करना पड़ता है । एक तो घर पर बच्चों को खाने का बन्दोबस्त करना पड़ता है दूसरे अपने लिये अलहदा घर बसाना पड़ता है ।

तन्खाह कम मिलती है ऐसे हालात में से वे गरीब गुजर रहे हैं । तो आप देख सकते हैं ऐसी परेशानी की हालत में वह बच्चों को स्कूल में क्या पढ़ाते होंगे जब कि वे खुद परेशानी में हैं । वे अपने बच्चों का ख्याल करें या अपने लिये रिहायश तलाश करें या स्कूल में पढ़ाई कराये । इस लिये मैं सुझाव के रूप में अर्ज करना चाहता हूं कि कम से कम जे०बी०टी० टीचर को अपने घर के पास और ज्यादा से ज्यादा पांच मील के एरिया के अन्दर के स्कूल में लगा दें और ऐसा करने से उसकी दिमागी परेशानी भी दूर होगी और वह एजुकेशन की तरफ भी पूरी तरह से ध्यान दे सकेगा । पहले यही पालिसी थी कि इन टीचर्ज को अपने घर में लगाते थे या फिर पांच मील के अन्दर लगाते थे लेकिन पता नहीं यह पालिसी क्यों बदल गई । मैं डी०पी०आई0 साहब के दिमाग की दाद देता हूं, वे बड़े प्रौग्रेसिव ख्यालात के हैं और मैं उम्मीद करता हूं कि वे इस बात की तरफ ध्यान देंगे कि जे०बी०टी० टीचर्ज को अपने घर के गांव में जो स्कूल हैं उन में लगा दिया जाये या पांच मील के एरिया में लगा दिया जाये ताकि आसानी से वह अपने घर में बाल बच्चों को भरूाई देख सकें, उनका रिहायश के लिये मकान तरकश करने का मसला भी न रहे और वह अपना सारा टाईम फ्री माइंड से पढ़ाई में लगा सकें । मैं सुझाव देता हूं कि इस आने वाले अप्रैल में ऐसा कर दिया जाये । इस सिलसिले में मैं फरीदाबाद के 19 टीचरों के ग्रुप की मिसाल देना चाहता हूं कि उनको पीछे सितम्बर में तीस और साठ मील तक अपने घरों से दूर भेज दिया गया । इस बारे में मैं चीफ मिनिस्टर साहब

सेभी मिला और उन्होंने बडी मेहरबानी से फरमाया कि अगले साल कर देंगे और मुझे उम्मीद है कि ऐसा कर दिया जायेगा । मैं उनको देखता हूं कि वह किस तरह रोते फिरते हैं और मुझे उन की हालत देख कर बहुत दुख होता है कि वह देहात में रहते हैं, मकान वहां मिलता नहीं, खर्च दुगना हो गया है तीस मील साइकिल चला कर अपने घरों को आते हैं दिमाग में परेशानी रहती है और कई तो बीमार हो गये हैं ऐसी उनकी दशा हो रही है । इसलिये मैं अर्थ करता हू कि उनकी यह खामखाह की परेशानी दूर करनी चाहिये ताकि वह दिल लगा कर बच्चों को स्कूलों में पडा सकें । चेयरमैन साहब, बहुत सारे ट्रेंड टीचर अन–एम्पलायड फिर रहे हैं और कई सालों से उनकी नौकरी त्हे लिये दरखासतें एम्पलायमैंट ऐक्सचेंजिज में पड़ी हैं लेकिन उनका नम्बर नहीं आता । मैं इस बारे में एक सुझाव देना चाहता हूं अगर सरकार इसे ठीक समझती है तो मान ले और अगर ऐसा नहीं किया जा सकता तो न करे लेकिन सुझाव, मैं समझता हूं बहुत अच्छा है । सुझाव यह है कि एक घर में अगर हसबैडं और वाइफ दोनों ट्रेड टीचर हैं तो उन में एक को नौकरी दी जाये चाहे मियां को दी जाये चाहे बीबी को दी जाये ताकि ऐसा न हो कि एक घर के तो दो–दो टीचर हों और दूसरे घर के बेकार फिर रहे हों और दरखासतों की लिस्ट लम्बी होती चली जाये । दूसरी बात यह है कि टयूशन वर्क टीचर को अलाउ नहीं होना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से पढ़ाई में हानि होती है । टीचर स्कूल में पढ़ाने की तरफ ध्यान नहीं देते और टयूशन की तरफ ही आंख लगाये रहते हैं ।

हां यह बेशक कर दिया जाये कि टीचर को स्कूल टाईम के बाद कोई और लीगल काम और साइड बिजनैस करने की इजाजत दे दी जाये क्योंकि उनकी आमदनी थोड़ी है ताकि वह आमदनी बढ़ा सकें और अपना गुजारा कर सकें । एक बात मैंने पहले भी कही थी कि स्कूलो में जा कर सरप्राइज विजिट्स की जाये । देखने में आता है कि कई स्कूलों में स्टोर में टाट पड़– रहते हैं, फरनीचर और पंखे पड़े रहते हैं जिनको जंग खाता रहता है लेकिन उनको इस्तेमाल में नहीं लाया जाता है जिसकी वजह से उन पर खर्च किया पैसा भी जाया जाता है और बच्चों को भी तकलीफ होती है । इस लिये मेरा सुझाव है कि बी०ई०ओज०,डी०ई०ओज० और दूसरे हाई आफिसर्ज बाकायदा तौर पर स्कूलों में जायें सरप्राइज छापे मारें और देखें कि क्या यह चीजें स्टोरों में पड़ी सड़ तो नहीं रही हैं और क्या उनका इस्तेमाल किया जा रहा है या नहीं । इस सिलसिले में मैं नेहरू कालेज की मिसाल क्यो चाहता हूं । यह कालेज तीन चार साल से बंद पड़ा है और किसी पार्टी बाजी की वजह से वहां लोक–अप है और उस कालेज में लाखों रुपये का सामान पड़ा सड़ रहा है । कैमीकल्ज हैं, किताबें हैं, फरनीचर है और पंखे हैं जिनको जंग खा रहा है । मैंने कई दफा मंथली मीटिगज में इस बारे में कहा कि इस सामान को बजाये इस तरह खराब करने के दूसरे स्कूलों, कालेजों में ही भेज दिया जाये ताकि यह इस्तेमाल में आ सके लेकिन जवाब मिलता है कि क्या किया जाये मामला सब–जुडिस है । ठीक है केस अदालत में है लेकिन सरकार के पास कई तरीके हैं आर्डीनैसं पास कर सकती है,

कानून पास कर सकती है जिससे किसी तरीके से उस सामान को इस्तेमाल में लाया जा सकता है और नहीं तो अदालत से सपुर्ददारी में सामान ले कर इस्तेमाल में लाया जा सकता है सरकार चाहे तो सब कुछ कर सकती है आखिर यह लाखों का सामान ऐसे ही क्यों जाया होने दिया जाये । इस बात को सरकार को देखना चाहिये चेयरमैन साहब, एक और बात है जिसकी तरफ मैं खास तौर से ध्यान दिलाना चाहता हूं और वह यह है कि एजुकेशन में चरित निर्माण की तरफ ध्यान देना चाहिये । मैं सियासत के साथ–साथ धार्मिक विचारधारा भी रखता हूं और चरित्र निर्माण के बारे में मेरी बहुत दिलचस्पी है । जहां भी मैं स्कूलों में जाता हूं वहां मैं यह बात देखता हूं कि वहां पढ़ाई के साथ–साथ चरित्र निर्माण की तरफ कितना ध्यान दिया जा रहा है और मैं वहां चरित्र निर्माण के बारे में भाषण भी देता हूं और सुझाव भी देता हूं । लेकिन कई जगह मैं देखता हूं और तकरीबन सभी स्कूलो कालेजों में मैं समझता हूं यही हालत है बच्चे अजीब किस्म के लिबास पहने हैं और जो टीचर्ज हैं वे भी उसी किस्म का भडकीला लिबास ग्हने होते हैं कि मेरी आंखें शर्म से झुक जाती हैं और कई दफा तो मैं अपनी स्पीच बीच में ही छोड़ कर चला जाता हूं क्योंकि मुझ से वह सब कुछ देखा नहीं जा सकता । आफिशियल भी इस बात को महसूस करें । कई गाने गाते हैं चटपटी ड्रैस पहनते हैं, इस चीज को मेरा दिल नहीं मानता । इस सम्बन्ध में मैं एक सुझाव देना चाहता हूं कि स्कूलो और कालेजों के अन्दर सिम्पल वाइट ड्रैस लागू कर दी जाए, चाहे स्टाफ हो,

चाहे स्टूडैंटस हों, चाहे स्टाफ की लेडीज हों चाहे जैन्ट्स हों, उनकी सिम्पल वाइट ड्रैस मुकर्रर कर दी जाए । सभी लांग खादी का कपड़ा पहने, पापलीन बड़ी अच्छी मिल जाती है । मैं आपकी अटैन्शन इस तरफ दिलाता हूं । कहीं कहीं कलर्ड ड्रैस नजर आती है, यह भी ठीक नहीं । चेयरमैन साहब, क्लर्ड कपड़ा जब बनता है तो उसका एक ही थान बनता है, दूसरा थान उस क्लर से डिफर करता है, चाहे रंग हलका हो चाहे डार्क हो । अगर क्लर्ड कपड़े परैस्क्राइब करेंगे तो यूनिफार्मिटी नहीं होती, कोई बल्यू होता है, कोई लाल होता है, बच्चे की यह अच्छी ड्रैस नहीं है । चेयरमैन साहब, मैं एजुकेशन मिनिस्टर साहब को सुझाव देना चाहता हूं, अगर वे मुनासिब समझें तो स्कूलों में, कालेजों में वाईट ड्रैस लागू कर दें, यह बहुत अच्छी लगती हे, चीप भी मिलती है । अगर कोई क्लर्ड ड्रैस पहनना चाहता है तो एक ही रंग का पहने अगर मिल सके । अगर क्लर्ड कपड़ा ठीक मिल सके, सस्ता मिल सके और यूनिफार्मिटी हो तो ठीक है लेकिन मुझे उम्मीद है ऐसा क्लर्ड कपड़ा नहीं मिल सकता । सारी ड्रैस सादा हो, स्टेजों पर भी सादगी हो, चटक–मटक न हो तो मेरा ख्याल है कि इससे बच्चों का चरित्र बढ़ेगा, एजुकेशन की तरफ ज्यादा ध्यान होगा, स्टैंडर्ड' बढ़ेगा । स्टूडैटस चरित्रवान होते और हमारा सर फख्र से ऊंचा होगा और चरित्र धार्मिक लिहाज से, सोशल लिहाज से बढ़ेगा । चेयरमैन साहब, फरीदाबाद के स्कूलों मैं सफाई कर्मचारी हैं । वे स्कूल के पांच–पांच सौ, हजार–हजार, दो–दो हजार स्ट्डैटंस की सफाई का ख्याल रखते हैं लेकिन उनको तन्ख्वाह मिलती है सिर्फ

20 या 40 रुपये । आज हमने हरिजनों को, गरीबों को आगे बढ़ाना है जिसके लिए 20 सूत्रीय कार्यक्रम बनाया गया है । इसलिये इस कार्यक्रम के तहत इन स्कूलों के सफाई कर्मचारियों की तरफ ध्यान दिया जाए ताकि वे ज्यादा अच्छी तरह से सफाई कर सकें । वह 20–40 रुपये में सफाई क्या करेगा? आप कम से कम इतना कर दें कि 500 और 500 से ज्यादा स्टूडैटस के स्कूलों में काम करने वाले सफाई कर्म– चारीको इतनी तन्खाह मिलेगी, उसको रैगुलर–पे दी जाए । इससे सफाई अच्छी होगी, अगर सफाई अच्छी रहे तो सैनिटेशन प्वायंट आफ व्यू से भी अच्छा है और इसका एजुकेशन से भी लिंक है । सफाई अच्छी होगी तो पढ़ाई अच्छी होगी, पढ़ाई का स्टैडर्ड बनाने के लिए सफाई जरूरी है । सादा ड्रैस और सफाई का पढ़ाई के साथ लिंक हैं । चेयरमैन साहब, स्कूल और नहीं बन सकते क्योंकि जगह नहीं मिलती, जमीन नहीं मिलती, फण्डज नहीं हैं और पढ़ाई को आगे ले जाने के लिए इनकी आवश्यकता भी है । लेकिन मैं आपके द्वारा हाउस की नालेज में लाना चाहता हूं किंवहां जहां हाउसिंग बोर्ड की कालोनीज बन रही हैं जहां जहां अरबन एस्टेट्स की कालोनीज बन रही हैं वहां वहां पर स्कूल बनाने के लिए जमीन, प्लाट्स रखे हुए हैए । वहां सरकार प्राईमरीस्कूल, हाई स्कूल, मिडल स्कूल खोल सकती है । जहां लोगों को प्लाट देने के बाद सरकार लोन दे सकती है वहां स्कूल बिल्डिग का इन्तजाम भी हो सकता है, कुछ फण्डज अलाट हो सकते है अरबन एस्टेट्स में हो सकते हैं, हाउसिंग बोर्ड कालोनीज में हो सकते हैं । हरियाणा में

इन कालो– नीज में स्कूलों के लिए प्लाट रिजर्व किए हुए हैं जिस में फरीदाबाद भी आ जाता है । वहां पर सैक्टर 20 में हाउसिंग बोर्ड की कालोनी है, वहां पर स्कूल के लिए बिल्डिग रिजर्व है, क्यों न वहा बिल्डिग बना कर तालीम का प्रबन्ध किया जाए । चेयरमैन साहब, फरीदाबाद में एन० आई० टी० में नं० 3 और नं 1 में स्कूल की बिल्डिग एक है लेकिन उस में दो डिफ्रैटं स्कूल, फर्स्ट शिफ्ट और सैकंड शिफ्ट में चल रहे हैं । बिल्डिग एक है और स्कूल दो हैं । डिफ्रैंट नामसे । मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि कभी कभी तो कहा जाता है कि स्कूलों की तादाद कम की जाए और दूसरी तरफ एक बिल्डिग में दो–दो स्कूल खोले जा रहे हैं । अगर उनको मिलाकर एक कर दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं है । शिक्षा का स्टैडर्ड तब ऊंचा होगा अगर एक बिल्डिग में एक ही स्कूल के नाम से तालीम दी जाए । एक बिल्डिंग में दो स्कूल चलने से और वह भी दो शिफ्टो में चलने से दोनों के हैडमास्टर एक दूसरे को काटने को दौड़ते हैं, स्कूल की परवाह नहीं करते, स्कूल के किवाड़ टूटे हुए हैं, कोई हैडमास्टर जिम्मेदारी नहीं लेता । इसलिए एक बिल्डिंग में दो स्कूल चलाने का जो सिस्टम है इसका खत्म किया जाए और एक दूसरे में मर्ज कर दिया जाए और दोनों स्कूलो के बच्चे दोनों शिफ्टों में बांट दिए जाए । अगर एक हैडमास्टर होगा तो वह अपनी जिम्मेदारी समझेगा, और उस स्कूल का स्टैडर्ड ऊंचा होगा, रिजल्ट भी अच्छा होगा ।

चेयरमैन साहब, मैं आखिर में एक बात अर्ज कर देना चाहता हूं । बहरहाल में सरकार की पालिसी वैलकम करता हूं । टीचरों को 55 साल की एज में रिटायर करते हैं और अब तो ते ० साल में ही रिटायर कर देते हैं । ये हमार गुरुजन हैं, अपनी लाईफ का इम्पौर्टेट हिस्सा एजुकेशन में लगाते हैं । उनके पढ़ाए हुए लड़के उन गुरुजनों से कभी कभी आगे बढ़ जाते है, आई ०ए० एस० आफिसर बन जाते हैं । वे करोड़ों नौजवानों को शिक्षा देते हैं, अगर उन से कोई छोटी मोटी गलती हो जाए तो उस गलती की तरफ ध्यान न देकर उसे माफ कर दें और 55 साल की बजाए 58 साल की उम्र में. रिटायर किया जाए क्योकि टीचर एकऐसा वर्ग है जिसकी किसी दूसरे रिसोर्स से 16.00 बजे। कोई आमदनी नहीं होती । दूसरे लोग कही न कहीं से अपनी आमदन बढ़ा लेते हैं लेकिन टीचर वर्ग, जो सही टीचर्ज हैं, सही गुरुजन हैं, जिनका ध्यान एजुकेशन की तरफ रहता है । वे थोडी आमदनी में गुजारा करके अपनी लाईफ गुजार देते हैं । तो उनकी रिटायरमैंट की एज, छोटी मोटी गलती को माफ करके, 58 साल ही चलने दी जाहू तो इससे भी ऐजुकेशन का स्टैन्डर्ड बढ़ेगा, कम नहीं होगा । इन अलफाज के साथ चेयरमैन साहब मैं आपका धन्यवाद करता हूं क्योंकि आपने बहुत टाईम मुझे दिया और जितने प्वायंटस मेरे दिमाग में थे वे मैंने हाउस के सामने रखे । मैं हरियाणा सरकार का जो मौजूदा एजुकेशन सिस्टम है उसका दूसरी स्टेटस के ऐजुकेशन सिस्टम को ध्यान में रखते हुए ताईद करता है और फख्र से कहता हूं कि सारी स्टेटस से यह बहुत

अच्छा है अपोजीशन का कोई भाई चाहे कुछ भी कहे । उनकी नीयत चूंकि साफ नहीं इसलिए वे 'टीका– टिप्पणी करते हैं लेकिन सचाई यह है कि हमारी हरियाणा सरकार एजुकेशन के मामले में पीछे नहीं, आगे है । इसके बावजूद भी मैं महसूस करता हूं कि सुझाव देने में कोई हर्ज नहीं । इससे कई बातें ऐसी होती हैं जो मानी भी जाती हैं और स्टैडर्ड आगे बढ़ सकता है । इन शब्दों के साथ चेयरमैन साहब, मैं एक बार फिर आपका धन्यवाद करते हुए अपना स्थान लेता हूं ।

Mr. Chairman : Motion moved —

That with a view to bring about improvement in the education System, this House recommends to the State Government to radically change the present pattern of education in the State.

चौधरी ईश्वर सिंह (पुंडरी) : चेयरमैन साहब, गुलाटी साहब ने प्रस्ताव पेश किया है कि सिस्टम आफ ऐजूकेशन में चेंज की जाए क्योंकि इस वक्त जो तालीम का ढांचा है वह पुराना हो चुका है और उसमें बदली की जरूरत है । कहते हैं कि education is practical side of our theory of life, जो भी जीवन का उद्देश्य है उसे क्रियात्मक रूप देने का नाम शिक्षा है । हमारे इस संसार में जितने भी फिलौसफर्ज हुए हैं, दार्शनिक एवं विचारक हुए हैं, हरेक ने जीवन के बारे में लिखा है । किस ढंग का जीवन हो, किस ढंग का समाज हो, जीवन चाहे सामाजिक है, राजनीतिक हस, आर्थिक है, धार्मिक है या नैतिक है, इन सभी को

पूरा करने के लिए किस किस्म की तालीम काप्रयोग हो, इस सम्बन्ध में विभिन्न विचारकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं । सबसे पहले यह जानने की जरुरत है कि शिक्षा के अलग अलग उद्देश्य क्या हैं । बच्चा पैदा हौवा है और उस बच्चे को शिक्षा दी जाती है । बच्चा जब पैदा होता है, उसके बारे में सभी विचारक यह कहते हैं कि वह क्लीन स्लेट नहीं होती बल्कि वह कुछ पहले से जानता है । हमारे धर्म में तो पुनर्जन्म को मानते हैं । जैसे रात के बाद दिन होता है दिन के बाद रात हो तो है, फिर दिन होता है, इसी तरह से जीवन का चक्र चला हुआ है । हम सभी ने पता नहीं कितने लाखो जन्म पहले लिए हैं और अने भी लेते रहेंगे जब तक कि आखिरी उद्देशय जीवन का पूरा नहीं हो जाता यानी इस जीवन मरण के चक्कर से छूट कर निर्वाण को प्राप्त नहरों हो जाते । तो इस ढग से हमारा धर्म यह मानता है कि पिछले जन्म के संस्कार बच्चे के साथ होते हैं, वह क्लीन प्लेट नहीं है । स्वामी विवेकानन्द ने एक जगह कहा है टीचर्ज और स्कूल वगैरा तो बच्चे को कें–एरा रास्ता दिखाते हैं । बीज उसमें पहले ही विद्यमान होता है । उसने केवल शक्ल धारण करनी होती है । जिस चीज का वह बीज होगा वही शक्ल वह धारण करेगा । अगर बड़ का बीज होगा तो उसका वृक्ष– निकलेगा । जिस बीज का वह बीज है वह पहले ही उसमें माबूद है । हमारे टीचर्ज तो एक माली की तरह होते हैं और माली को यही देखता होता है कि पेड़ की बढ़ोतरी में, विकास में कोई बाधा न पड़े और उसको वह सहूलियत मिले जिससे उसका पूरा विकास हो सके । तो हमने यह

देखना है कि वे अलग–अलग उद्देश्य क्या हैं? सबसे पहला उद्देश्य यह है कि उस बच्चे के व्यक्तित्व का पूरा विकास हो जाए । बच्चे में क्या चीज मौजूद है जिसके विकास की जरूरत है । बच्चे में शरीर है, इसलिए शारीरकि विकास की जरूरत है । उसमें एक मन है, इसलिए मानसिक विकास की जरूरत है । वह समाज में रहता है, इसलिए उसे मौरेलिटी की जरूरत है, सामाजिक शिक्षा की जरूरत है । उसको यहां आकर कोई कार्य करना है, इसलिए उसको कोई न कोई काम आना चाहिए जिससे वह अपनी जीविका कमा सके । उसके अन्दर एक आत्मा है, इसलिए उसका आत्मिक विकास होना श्री जरूरी है । ये अलग–अलग शिक्षा के उद्देश्य है । यह सब कुछ कहने का मतलब यह है कि जहां तक वह जाना चाहता है या जहां तक शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तौर पर उसकी उछलने की शक्ति है उसके अनुसार उसको पूरा विकास करने का मौका दिया जाए, यही हमारी शिक्षा का उद्देश्य है । कहते हैं कि चार किस्म की शिक्षा है । हैड, हेयर, हैन्ड एंड हैल्थ । स्वामी विवेकानन्द एक जगह और कहते हैं बाहर की प्रकृति हमारी लै । जितने भी साईंस के आविष्कार हैं उन सबने बाहु य प्रकृति को, समय को, टाईम को और स्पेस को, काबू करने की कोशिश की है । जितनी भी साईंस की ईजाद हैं उनसे हमने कोशिश की है कि प्रोडक्शन ज्यादा बढ़े और यह बाहर की नेचर हमारे काबू में आ जाए । यह अलग बात है कि साईंस दो धारी तलवार है । यह गरीबों की हिफाजत भी कर सकती है और डाके भी डाल सकती है । हम इसका गलत प्रयोग भी कर सकते हैं

जैसे कि आजकल आर्मामैंट रेस रही बात चलती है । आर्मामैंट मनुष्य की जिन्दगी को बेमायना भी बना सकते हैं और उसके जीवन को ठीक ढंग से चलाने के लिए सहूलियतें भी पैदा कर सकते हैं । अन्दर की प्रकृति हमारा मन है । जिसका हिसाब ही नहीं है । इसका अभी तक यही पता नहीं लग सका है कि यह क्या है और कहां तक है । बड़े–बडे विचारक हुए हैं । उनको भी इसका सारा पता नहीं लगा । चार सौ वर्ष पहले न्यूटन एक बड़ा भारी साईसदान हुआ । उसको किसी ने कत कि आप तो बहुत बडे विद्वान हैं, बहुत कुछ जानते हैं तो उसने जवार सिर्फ यही दिया था कि मैं दो हुक छोटे बच्चे दो तरह हूं जो समुद्र के किनारे खेल रहा है और अभी सिर्फ सिपियां और ककरियां चुनी हैं । हान एक अथाह सम्उद्र– है जिसकी गहराई का कुछ पता नहीं, जिसकी लम्बाई चौड़ाई का कोई पता नहीं । मैं तो कुछ नही जानता । अगर उनके लफजों कौ आज हम परखें नौ हम देखते हैं कि साईस ने जो तरक्की पिछले सौ, दो सौ साल में की है उतनी तरक्की आजकल एक–एक दिन में हौती है ।

चौधरीँ पीर चन्द : चेयरमैन साहब कोरम पूरा नही है ।

चेयरमैन : कोरम ठीक है क्योंकि दस आदमी बैठे हुए ।

चौधरी ईश्वर सिंह : तो कहने का मतलब यह है कि ज्ञान अथाह है । ज्ञान की कोई हद नहीं । मनुष्य कभी भी पूर्ण नहीं, वह अपूर्ण हैं और बहु हमेशा अपूर्णता से आगे पूर्ण होना

चाहता है बदरी जीवन का उद्देश्य है और लक्षय है तो मानसिक विकास भी हमारा ऐम है, मैन्टल विकास भी ऐम है । इसके बारे में एक जगह इकबाल कहता है––

जिन्दगी कुछ और हौ है, इल्म है कुछ और शै

इल्म मे दौलत भी हैं, ला जत भी है उलफत भी है

पर एक बात है कि हाथ आता, नहीं अपना सराव । ।

यह. पता नहीं लगता है कि वह क्या है । इसका जवाब आज तक भी वह सारी नालेज नहीं दे सकी । हमारा ऐम तो मैन्टल विकास का है, मानसिक विकास का है, शारीरिक विकास का है, इनमें कुशलता पैदा की जाये । हम उसके दिल औररू दिमाग को इस ढंग से पलटें कि वह ठीक ढग से सामाजिक प्राणी बन सके । वह तुक अच्छा नागरिक बन सके । सारा हमारा ऐम तौ यही है । हमें तो यह देखना है कि हमारे मन में दिल में जो भावना उठती है, विचार. उठते हैं उनके पोंछे कौन है? यह जो लोभ, मोह, क्रोध जो किं हमारे धर्म में शामिल हैं, इन विकारों' में कुछ अच्छी बातें भी होती हैं? हमें तो उन अच्छी भावनाओं कने उभारना है और जो पशुवृत्ति की है उसको दबाना है । सारी एजुकेशन का उद्देश्य ही यह है।

अब हमें यह देखना है कि आया जो हमारा उद्देश्य है, जो हम शिक्षा देना चाहते हैं उसको किस हद तक पूरा करने में कामयाब हुए हैं । अगर हम यह कहें कि शिक्षा का उद्देश्य एक

अच्छा नागरिक बनाना है' तो जो आज यह प्रेजेन्ट सिस्टम आफ एजूकेशन है इसमें क्या कमियां हैं । अब हमें तो बहू देखना है कि एक अच्छा नागरिक पैदा करने के लिए इस सिस्टम आफ एजुकेशन के ढांचे को आगे चलाने की जरूरत है या नहीं है । गीता के अन्दर कृष्ण जी ने कहा है–

Five things go to make a complete action-subject, object, environent,instrument use, the past Karmas and the will of God."

इन चीजों की हमें जरूरत है । जो हमारा टीचर है, पढ़ाने वाला वह कैसे पढाता है, वहां का वातावरण कैसा है ? वहां पर क्या इन्स्टरूमें यूज किये जा रहे हैं, आपके पास क्या साधन हैं । शिक्षा को ठीक ढंग से दैने के लिए किस किस्म का सलैबस है, किस किस्म की 'किताबें हैं? ये सारी बातें हमने देखती है । हमें यह भी देखना है कि तालीम के ढांचे को जो बदलनें की जरूरत है उसमें कमिया क्या हैं जिनकी वजह से हम यह कहते हैं कि इस ढाचें हो बदलना जरूरी है । कौन सी ऐसी चीजे हैं, कौन सी ऐसी जरूरतें हैं जिनको हमारी तालीम पूरा नहीं करती है । दुनियां में जरूरत ईजाद' की मां है । देखना यह है कि जिस चीज की (जरूरत है उसको पूरा करने की कोशिश की जा रही है या नहीं? आज की तालीम में जो मोटी–मोटी कमियां हैं वे कौन सी है?

आप देखिए हमारे यहां फिजिकल, शारीरिक शिक्षा पूरे तौर से नहीं दी जाती हए । नालन्दा यूनिवर्सिटी में ह्यूनसांग चीनी यानी आया । वह यहां पर 15 साल तक ठहरा । उस वक्त बुद्ध धर्म की किताबें थीं, वे भी संस्कृत में थीं । उसको भी संस्कृत पढ्ने की जरूरत थी । वह वहां पर लिखता है कि नालन्दा यूनिवर्सिटी मैं करीब 15 हजार की स्टैन्थ थी जिनमें दस हजार विद्यार्थी थे, एक हजार टीचर्ज और चार हजार बौद्ध भिक्षक थे । कई सालों तक वहां ठहरने के बाद केवल एक आदमी ओवर इटिंग से वहां का बावरची बीमार हुआ, इतने सालों तक कोई भी आदमी बीमार नही हुआ । वहां पर यह हैल्थ का स्टैन्डर्ड था । हैल्थ का सम्बन्ध भी समाज के वातावरण से सम्बन्धित है । हैल्थ का सम्बन्ध एजुकेशन से भी है कि किस किस्म की शिक्षा हैल्थ के बारे में दी जातो है, किस किस्म की वर्जिश वहां पर करायी जाती है । पहले जो योग साधना करायी जाती थी, उसकी भी अब जरूरत है । हमें. अपनी पूरानी सभ्यता को नहीं भूलना चाहिए । योग साधना के सिस्टम को नहीं भूलना चाहिए । आजकल सारे देश मे योरूप और अमेरिका में रिसर्च हो रहीहै । उनका यहविचार है कि यहबहुत ही अच्छा सिस्टम हैय । वे कहते हैं कि सारे सिस्टम को टोन करने के लिए, सारे गन्द को टूर करने के लिए सभी. के लिए यह सब से बढ़िया वर्जिश का सिस्टम है । योरुप के लोग दो सौ साल पहले –यह नहीं जानते थे कि ब्लड सरकुलेशन क्या होता है लेकिन हमारे प्राचीन योगी, ऋषि. इन सब

बातों को जानते थे । यह चीज गलत है कि हम वैस्टर्न कन्ट्रीज की तरफ जायें ।

आपको मालूम है कि औलम्पिक खेल होते हैं उनमें हिन्दुस्तान की क्या पोजीशन रहती, है। यह भी किसी से छिपी हुई नहीं है । हिन्दुस्तान की आबादी साठ करोड़ की है । दुनियां के पांच आदमियों के पीछे एक आदमी हिन्दुस्तान का है । इतनी आबादी होने के बाद भी नेशनल खेलों मैं हमारी कोई भी पोजीशन नहीं, गोल्ड मैडल और सिलवर मैडल जापान और दूसरें छोटे–'छोटे– देश ले जायें, इसका क्या कारण है? हमारे खिलाड़ी वहां पर क्यों नहीं कम्पीट कर पाते हैं उसकी वजह यही है कि यहां पर हैल्थ के बारे में पौपर ऐजुकेशन नहीं मिलती है । यह सारी हमारी तालीम की कमी है । हम उनको शुरू से ठीक ढंग से ट्रेन्ड नहीं कर पाते हैं । हम उनको खेल के ग्राउन्ड में ठीक ट्रेनिंग नहीं दे पाते हैं । कम्पलीट तौर पर उनके शरीर का विकास नहीं हो पाता हए । जब एक साज को बजा कर नहीं देखेंगे तब तक ' उसका क्या पता लगेगा कि उसमें से कैसी आवाज निकलेगी? हम हर बच्चे को देखते नहीं कि उसकी वाजिब डिमान्ड क्या है । किसी भी बच्चे को आगे ले जाने के लिए सारी बातें देखनी हैं । हमारे पास हर किस्म का मैटीरियल है लेकिन उन्हें प्रोपर ट्रेनिंग देने की जरूरत है, उनकी तरफ प्रोपर ध्यान देने की जरूरत है । यह सारा कार्य केवल सरकार ही नहीं कर सकती । हमें भी फिजिक्ल एजूकेशन की तरफ प्रोपर ध्यान देना चाहिए ।

हमने कभी यह भी नहीं देखा कि हमारे स्कूल जिनको हम रिकग्गनाइज्ड करते हैं, उनकी जो कन्डीशन है वे पूरी भी है या नहीं । उनके पास प्रोपर ग्राउन्ड मौजूद हैं या नहीं । अगर हम सही नक्शा देखे तो पता लगेगा कि जिन स्कूलों में हजार और दो हजार स्टूडेन्टस हैं उनके ग्राउन्ड लैवल में भी नहीं हैं, कई के पास तो ग्राउन्ड भी नहीं है । जिनके पास हैं तो ग्राउन्ड में गढ़े हैं । इसका मतलब तो यह है कि उन फल्डज का जो सरकार की ओर से दिये जाते हैं प्रोपर इस्तेंमाल नहीं किया जाता या उनको किसी दूसरी जगह पर इस्तेमाल कर लिया जाता है । इस कारण से हम खेलों की तरफ प्रोपर ध्यान नहीं दे रहे हैं ।

पब्लिक स्कूल्ज के बारे में मैं आगे आऊंगा । लेकिन उनमें यह बात है कि हर बच्चे को वहीं पर ठहरना पड़ता है । क्यौंकि वहां रैकीडैशीयल सिस्टम है, हर बच्चे को खिलाया जाता है और बदल–बदल कर वे खेले खेलते रहते हैं । कभी माइनर गेम है तो कभी मेजर गेम है, यह सारी चीज दिलचस्पी लेने पर डिपैडं करती है । एक तो जो हमारे टीचर हैं, वेडिवोटिड टीचर नहीं हैं और दूसरे वहां पर स्कूलों में वह वातावरण नहीं हैजो ठीक ढंग से शिक्षा का वातावरण होना चाहिए ।

शारीरिक गेम के बाद मैं आगे मैन्टल गेम पर आता है । शारीरिक गेम से आगे हमारा वह काम आता है जो हमें सीखना चाहिए जैसे हाथ का काम है । यह भी एक बहुत जरूरी चीज है । हमारी शिक्षा में जो सबसे बड़ी कमी बतायी जाती है वह यह है

कि हम व्हाइट कोलर्ड क्लास पैदा करते हैं, बाबू पैदा करते हैं । मैकाले ने जब यह सिस्टम आफ एजूकेशन सन् 1933 के करीब बताया था तो लार्ड बैटिंग के टाईम में उसने यह भी लिखा था कि मैं यह चाहता हूं कि हिन्दुस्तान केलोग रंग में बेशक हिन्दुस्तानी दिखाई दे लेकिन उनके दिल और दिमाग अंग्रेजीयत के रंग में रंगे हों । आज हम यह महसूस कर रहे हैं कि अंग्रेज तो चले गये लेकिन 1947 के बाद अंग्रेजीयत कुछ और भी ज्यादा बढ़ गयी है । यह मम्मी और डैडी के लफ्ज हम पहले नहीं सुनते थे जो आजकल इतने प्रचलित हो गये हैं कि देहात में भी यही बात है । देहातों में भी यही गरजते हैं । देहात के लोग भी अब यह कहते हैं कि अंग्रेजी पहली जमात से सिखाने के स्कूल खोलो । इस तरह से अंग्रेजीयत बढ़ती जा रही है । इसकी एक वजह यह भी है कि हम मुल्क को सही सिस्टम आफ एजुकेशन नहीं दे सके । इस बात की जरूरत है कि हम प्राचीन सम्यता और प्राचीन संस्कृति की ओर भी ध्यान दें । उसकी तरफ भी देखें । यह कोई छोटी चीज नहीं है । यहां के विचारकों ने बहुत ऊंचे आदर्श रखे हैं और उनके बहुत ऊंचे विचार रहे हैं और बहुत ऊपर तक उनकी पहुंच रही है जहां पर कि आज के साईंस– दान भी नहीं पहुंच सकते । आज जो एजुकेशन है, उसमें हम यह देख रहे हैं कि पहले का आठवीं या दसवीं पास आज के एम० ए० पास नौजवान के बराबर है । यह आम कहा जा रहा है । आजकल उतनी नौलेज नहीं है जितनी पहाने थी । आजकल बड़ी शैलों नौलेज है और उनकी पढ़ाई उतनी गुणों से भरी हुई नहीं है जितनी पहले थी ।

आजकल उनमें उतनी मेहनत करने की आदत नहीं है जितनी पहले थी । आजकल के नौजवान में फैशनपरस्ती और आरामतलबी ज्यादा है । सिस्टम आफ एजुकेशन हमारा ऐसा होना चाहिए कि हमें मेहनत करने की आदत होनी चाहिए, आरामतलबी की नहीं । अगर मुल्क को आगे बढाना है तो वह तभी आगे बढ़ेगा जब प्रोडक्शन बढ़ेगी और हमारे अन्दर मेहनत करने की आदत होगी । आज हम यह देख रहे हैं कि जो कम्पीटिटीव एग्जामिनेशन होते हैं, उनमें लड़कों को ज्योग्राफी की नौलेज बड़ी पुअर है, उनका स्टैडर्ड बड़ा वीक है । ये सारी चीजें यह जाहिर करती हैं कि इस सिस्टम आफ एजूकेशन में कहीं न कहीं कोई कमियां हैं । या तो टीचर में कमी है या विद्यार्थी में कमी है या फिर शिक्षा के वातावरण में कमी है या फिर शिक्षा के साधनों में कमी है । कोई न कोई कहीं न कहीं कमी जरूर है । जब हम मौरल साइड पर आते हैं तो उसमें चरित्र की एजुकेशन यानी करैक्टर बिल्डिग की एजुकेशन, जो बहुत जरूरी है, के लिये हमारी लाइब्रेरी का सिस्टम अच्छा हो । हमारी किताबों का सिलैबस अच्छा हो, उनमें ठीक ढंग के किस्से कहानियां हों । हमारी जो प्राचीन सभ्यता है, वह सिर्फ मामूली सा हिस्टरी का ढांचा पढ़ाने से नहीं आती । हमारे लिये यह भी आवश्यक है कि आने वाले टाईम में हम हिस्टरी को भी ठीक ढंग से पेश करें । उसके अन्दर पूरी तरह से लिविंग वायस पैदा करें । अगर सिर्फ ढांचा खड़ा कर दिया जाये तो तब तक वह ढांचा अच्छा नहीं लगता जब तक कि उसमें गोश्त न भरा जाये, जब तक कि उसमें चमक न पैदा हो । इसलिये मेरा कहना यह है

कि हिस्टरी बच्चों को अच्छी तरह से समझायी जाये जिससे कि बच्चों के मन पर असर पड़कर उनकी करैक्टर बिल्डिंग हो । जहां तक सैकुलर सिस्टम आफ एजुकेशन जो हम कहते हैं, उसका सवाल है, मैं यह समझता हूं कि दुनिया के जितने धर्म हैं, उन सब धर्मो के फन्डामैंटल बेसिक एक ही है । दुनियां में कितने ही धर्म हैं । पहले हरेक को स्टडी कर लिया जाये । सभी सिस्टम यह कहते हैं कि अच्छे बनो । Do unto otherks aks you wiksh to be done by दूसरों के साथ अच्छा बर्ताव करो । अच्छे–अच्छे कार्य करो । जितनी फाइन वैल्यूज हैं, हमारे अन्दर जो अच्छी क्वालिटीज हैं, उन सभी कौ उभारने का यत्न किया गया है । दया, धर्म, दान सेवा–भाव, सभी धर्म यह बातें कहते हैं । कोई भी धर्म ऐसा नहीं जो ऐसी बातें न कहता हो । ये जो लड़ाई झगड़े की बातें हैं ये सब ऊपरी बातें हैं, ये सब बाहर की बातें हैं । अगर हम किसी धर्म की गहराई में जायें या उसकी कहानियां किस्से उठाकर देखें तो हमें अच्छे सबक ही मिलेंगे, उनसे हम बहुत सी अच्छी. बातें सीखते हैं । पहले जो प्राइवेट संस्थाएं होती थीं, उनमें धार्मिक शिक्षा भी दी जाती थी और वह शिक्षा का एक पार्ट होती थी । यूरोप के मुल्कों में आज भी बाकायदा अगर कोई मजबून कम्पलसरी है तो वह रिलीजन का मजबून है । आप बुद्धिस्ट कन्ट्रीज देख लें, इस्लामिक कन्ट्रीज देख लें, सब में रिलीजीयस एजुकेशन कम्पलसरी है । रिलीजीयस एजुकेशन इसलिये जरूरी है क्योंकि धर्म मौरैलिटी की जड है और उससे करैक्टर बिल्डिग में थोड़ी नहीं, बहुत ज्यादा मदद मिलती है और

यह उसका आधार है । शायद, जो प्राईवेट स्कुल्ज में पहले धार्मिक शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था वह अब नहीं दिया जाता और गवर्नमैंट स्कूलों में तो इस किस्म की कोई बात ही नहीं है । यह जरूरी नहीं कि हम गहरी फिलास्फी में जायें या उसके फन्डामैंटलज में जाये, जैसी बच्चे की आयु है, उसके मुताबिक शिक्षा चलनी चाहिए । छोटे बच्चे बड़ी बातें नहीं समझ सकते । जो फिलास्फी की बातें हैं, वे तो हायर क्लासिज के लिये हैं । हायर क्लासिज में फिलास्फी एक मजबून भी है और वहां पर अलग–अलग स्टूडैन्ट्स के लिए अलग–अलग रिलीजन का भी मकबून है । छोटे बच्चों को तो कहानियां किस्से सुना कर ही उनके मन पर असर डाला जा सकता है । आज यह बात भी जरूरी है कि हमारी एजुकेशन आया रिलेटिड टू लाइफ हो या नहीं । हमारे जो जीवन के शोअबे हैं, कार्य हैं, उनकी तरफ ठीक ढंग से हमें ले जाती है या नहीं । हमें यह भी देखना है, और आज जो सबसे बड़ी आवाज है, वह भी यही है कि हमारे जो नौजवान हैं, वे पढ़–लिखकर घर के काम से भी खोये जाते हैं । वे सारे व्हाइट कौलर्ड जाब चाहते हैं । वे दो सौ–अढाई सौ रुपये की नौकरी प्रैफर करेंगे । अपना काम करना वे पसन्द नहीं करते । अगर किसी के पास 30–40–50 एकड़ जमीन भी है तो नौजवान जमीन पर काम करना पसन्द नहीं करेंगे, अपना ट्रैक्टर चलाना पसन्द नहीं करेंगे, अपनी बागवानी करना, काश्त करना, सब्जी उगाने का काम करना पसन्द नहीं करेंगे बल्कि वे एक मामूली सी नौकरी चाहेंगे । तो यह जो नौकरी में, व्हाइट कोलर्ड जाब में

सभी जाना चाहते हैं यह हमारी शिक्षा की सब से बड़ी कमी है । कुछ ऐसे भी हैं जिनके पास साधन नहीं हैं, जमीन भी नहीं है, इनवेस्ट करने के लिए पैसा भी नहीं है और पढ़ लिख भी गए हैं और वह नौकरी चाहते हैं । वे हाथ से काम करने में शर्म महसूस करते हैं । अब देखना यह है कि आया हम, जिस प्रकार की नौकरी वे नौजवान चाहते हैं, दे भी सकते हैं या नहीं । यह सब जानते हैं कि हम सबको नौकरी नहीं दे सकते । मेरा कहना यह है कि हर चीज केलिए प्लानिंग होनी चाहिए । आजादी से पहले प्लानिंग नहीं थी..। पडिंत जवाहरलाल नेहरू ने प्लानिंग कमीशन' बनाया देश के लिए योजनाएं बनाई और उन योजनाओं के अनु सार काम आरम्भ किया । हर जगह प्लानिंग की जरूरत है ।. चाहे वह आपका घर है, सूबा है या देश है । जब तक आप कोई योजनाबद्ध काम आरम्भ नहीं करेंगे तब तक ठीक काग नहीं होगा । योजना बनाने. के बाद ही हम उसको कार्य–रूप दे सकते हैं । एजुकेशन डिपार्टमैंट को चाहिए कि वह देखे कि कितने हमारे नौजवान पढ़ रहे हैं और जो शिक्षा ले रहे हैं उस शिक्षा को लेने के बाद वह क्या करेंगे । यह करना बहुत जरूरी हैरू। आज तो यह हौ रहा है कि प्रैसे एक भीड़ है उसमें न इधर–उधर मूड़ने की गुंजाइश है, न पीछे मुड़ा जा सकता है, बस आगे की तरफ ही बड़े जा रहे है । यह पता ही नहीं कि हम कहां जा रहे हैं । इसी तरह से शिक्षा का हाल है । हमारे नौजवान बस पढ़ते चले जा रहे हैं उन्हें यह पता नहीं कि वे पढकर क्या करेंगे । देश का शिक्षा मंत्रालय या देश की प्लानिंग मिनिस्ट्री का यह काम है कि वह यह

देखे कि देश के कितने नौजवान किस किस्म की पढ़ाई पढ़ रहे हैं । बहुत से लोगों के पास पैसा है और उनके बच्चे दसवीं पास करने के बाद कालिज में चले जाते हैऔर आर्टस कालिज में वे जाते हैं, साइंस कालिज में नहीं जाते. । हमारे जो साईंस कालिज हैं उनमें पूरा इन्तजाम नहीं है साईंस कालिज में जो लैबोरेटरीज हैं उनमें अच्छे इंस्ट्रूमेंट नहीं हैं । कालिज वाले कहते हैं कि हम इतना पैसा खर्च नहीं कर सकते क्योंकि हमारे पास पैसा नहीं है। जो स्टाफ है वह भी इतना ट्रेन्ड नहीं है । मैंने खुद सुना है कामर्स कालिज वाले और साईंस कालिज वाले जो प्राइवेट हैं यह कहते हैं कि हम खर्चा मीट–आउट नहीं कर सकते । जो –जोग आर्टस कालिज मैं बी०ए पास कर लेते हैं, एम० ए० पास करते हैं यह तो एमलैस एजुकेशन है । वे लोग पढ़ते चले जा रहे हैं और जब उनको नौकरी नहीं मिलती तो उनमें फ्रस्ट्रेशन आता है । इसलिए हमें एजूकेशन में प्लानिंग की जरूरत है । हमारे स्कूल और कालिज तो ऐसे कारखाने हैं जो बेरोजगार पैंदा करते हैं । जहां तक दसवीं तक तालीम का ताल्लुक है हमतो चाहते हैं कि वह सभी को, चाहे वह लड़का है, चाहे लड़की है, मिलनी चाहिए । हरेक को पढ़ना लिखना, हिसाब किताब रखना, थोड़ा–बहुत देश की हिस्टरी का भी ज्ञान होना आवश्यक है, साइंस के फंडामैंटल जानना जरूरी हैं । दसवीं तक तो ऐसे मकबूल चलने चाहिए जिनसे मन का विकास हो लेकिन उसके बाद हरेक का कालिज में जाना जरूरी नहीं है । कालिज में जाने के लिए हमें कोई नकोई प्रतिबन्ध लगाना पड़ेगा । अगर हम यूरोपियन कन्ट्रीज को देख जो

बहुत ज्यादा प्रोग्रेसिव हैं, जहां पर आमदनी केभी साधन अच्छे हैं वहां पर अन–एम्पलाएमेंट की तीन से पांच पर सेन्टेज हैं । हमारे देश में करोड़ों अनएम्पलाएड हैऔर पता नहीं कि कितने करोड़ अन्डर–एम्पलाएड हैं ।. वहां अनएम्पलाएमैंट की डेफिनिशन बिल्कुल ही अलग है । मैं इंगलैंड भी गया हूं और भी पांच–सात यूरोप के देशों मैं गया हूं । मैंने उन लोगों से जब पूछा तो वे कहने लगे कि यहां पर अनएम्पलाएड उसको कहते हैं जो 18 साल से ऊपर लड़का या लड़की सैल्फ–एम्पलाएड नहो । हमारे यहां डेफिनीशन बिल्कुल अलग है । यहौ पर अन–एम्पलाएड की परसेन्टेज बहुत ज्यादा है. । जहां पर हाइली इडीस्ट्रीयलाइजेशन है उन देशों में कोई भी 18 साल से ज्यादा का युनिवर्सिटी एजुकेशन के लिए नहीं जाता लेकिन यहाँ पर यूनिंवर्सिटी एंजुकैशन के लिए भीड़ पड़ी हुई है । ऐसा भी कहा जाता है कि जो लोग देहात में रहते लूँ, जो शिडयूल्ड कास्ट्स हैं, बैकवर्ड क्लासिज से, सम्बन्धित हैं, उनके लिए कुछ ऐसा प्रबन्ध किया जाए जिससे वे उन लोर्गो के बराबर आ सके । जो शहरों में रहते हैं । मैं एक बात आपको बता दूं कि कितने ही ऐसे कुनबे हैं जो हमसे बहुत आगे हैं और हम उनको पकड़ नहीं सकते लेकिन फिर भी हमको प्रतिबन्ध लगाना पडेगा । हर बच्चे का दिमाग अलग–अलग है । आपको दुनियां में बहुत ज्यादा इन्टैलीजैन्ट भी मिल जाएंगे और बहुत ज्यादा ईडियट भी मिलेंगे । हमको कोई परसैन्टेज मुकरर्र करनी पड़ेगी चाहे वह परसैन्टेज मावर्स की फिक्स करें कि जिसके इतने मार्क्स होते, वही आगे एजुकेशन नो लिए जायेगा । अगर किसी

के माध्यम कम हैं तो वह दुबारा ट्राई मारे । हम तरह कोई न कोई स्टैण्डर्ड होना चाहिए । मैं सैन्ट्रल गवर्नमैंट और स्टेट गवर्नमैंट का धन्यवाद करता हुं कि उन्होने हरिजन बच्चों को, बैकवर्ड क्लासिज के बच्चों को स्कालरशिप दिए हैं, जो इन्टैरेलीजैन्ट हैं, उनको मैरिट स्कालरशिप दिए हैं । सरकार ने काफी इन्तजाम किया है, जिससे गरीब बच्चे आगे बढ़ सकें । होस्टल का खर्चा भी सरकार बर्दाश्त करती है, बुक बैंक्स सौ बनाए जा रहे हैं कि साल भर के लिए किताबें दें । लेकिन फिर भी मैं कहता है कि हर लडका कालेज में पढ्ने के योग्य नहीं है, और यह सिस्टम हर एडवान्सड कन्टरी जो बहुत इंडस्टूयिलाइजड है, वहां भी है । उन देशों मे हूर बच्चे को कोलेज और युनिवर्सिटी गे पढने की इजाजत नहीं दी जाती । तो वहां ऐसा सिस्टम बना हुआ है कि उनको लग–भग रोजगार मिल जाता है । इतनी अन– एम्पलायमैंट वहाँ नहीं है । वहां जो एजुकेशन हैं, वह रिलेटिड टू लाइफ है' । इसलिए हमारे यहां दसवीं तक तो हूर बच्चे को एजूकेशन देनी पड़ेगी और इस बारे में रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है

Where the mind is without fear and the head is held high : Where knowledge is free;

Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls;

Where words come out from the depth of truth.

Where tireless striving stretches its arms towards perfection.

Where the clear stream of reason has not lost its way into the dreary desert sand of dead habit;

Where the mind is led forward by thee into everwidening thought and action.

Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake.

तो वह सपना तो अभी बहुत धागे है । जहां हम यह कह सकते हैं कि टू नॉलेज इज की, लेकिन यह जो स्टाईपैडं का सिस्टम है इसमें सरकार की तरफ से काफी सहायता'है, उसमें हम देखते हैं कि जो इसको पढ्ने वाले लड़के हैं, उनको इससे काफी सहूलियत है, लेकिन यहाँ हमें यह भी देखना पडेगा कि आया वह बच्चा हैंडिकैप्ड है, डिसएबल है, अन्धा है, किसी की टांग या बांह टूटी हुई है, इन बच्चों को भी हम पूरी तरह से एजुकेशन दे सकते हैं या नहीं । कुछ हमारी ऐसी सोसायटिया हैं, ऐसे सोशल वर्कर हैं, जिन्होंने इस ढंग से कार्य को उठाया हुआ है और सरकार ने इन संस्थाओं की मदद भी करने की कोशिश की है, लेकिन यह सरकार की जिम्मेदारी है कि हर बच्चे को पूरे ढंग से शिक्षा दी जाए । हमारे लड़के–लड़कियों की तालीम को देखें । लड़कों की तालीम तो है, लेकिन लड़कियों की तालीम में हम बहुत पीछे हैं । तो जहाँ तक दसवीं तक की तालीम का सवाल है वह हर एक को की दी जानी चाहिए । क्योंकि दसवीं तक की

तालीम ठीक ज्ञान हासिल करने के लिए, ठीक जानकारी हासिल करने के लिए और ठीक ढंग की सामाजिक प्रेरणा पहुंचाने के लिए बहुत जरूरी है । लेकिन इसके बाद जरूरी है कि स्पैशेलाइजड एजुकेशन हो और हमारी एजुकेशन रिलेटिड टू लाइफ होनी चाहिए, उसका जीवन के साथ पूरा सम्पर्क और सम्बन्ध होना चाहिए । आप एग्रीकल्चर एजुकेशन लीजिए । पंजाब और हरियाणा इस देश में एग्रीकल्चर के मामले में बहुत प्रौग्रेसिव हैं । सारे देश में हमारी बिग इंडस्ट्रीज में 2. 8 प्रतिशत मुल्क की पापुलेशन बड़े कारखानों में काम करती है, 6. 6 प्रतिशत स्माल स्केल इंडस्ट्रीज में काम करती है, कुछ दफ्तरों में और कुछ और जगहों पर काम करते हें, लेकिन इस मुल्क की 80 प्रतिशत से ज्यादा जनसंख्या का आधार खेती है । पंजाब और हरियाणा एग्रीकल्चर के मामले में काफी प्रोग्रेसिव समझे जाते हैं, लेकिन आप जरा ध्यान दीजिए अपने देहातों में, अपने स्कूलों में और अपनी एजुकोशन में । मैं पूछ सकता हूं कि आपकी एग्रीकल्चर एजुकेशन का आपके देहातों मैं स्कूलों में या शहरों. में' क्या सबन्ध है । इस वक्त हमारे पास 1100 हाई और हायर सैकेण्ड्री स्कूल्ज हैं, लेकिन इनमें शायद 10 स्कूलों में बीएस०सी० एग्रीकल्चर टीचर हों, तो हों वरना किसी में नहीं हैं और फिर जरा देखिए उनके पास आया जमीन है या नहीं । प्रैक्टिकल करने के बाद आपको पता लगेगा कि जमीन भी नहीं है । तो यह जो मजबूरन है, यह भी फर्जी है । हमारे 'देहातों के लिए एग्रील्चर और एनीमल हस्बैंड्री हमारा सबजैक्ट है, अगर हमारे बच्चों को जो जमींदार के घर पैदा हुए हैं, किसानों के घर पैदा

हुए हैं उनको भी यह एजुकेशन हम प्रोपर ढंग से नहीं धै सकेंगे तो साफ जाहिर है कि हुमारे एजुकेशन सिस्टम में कमियाँ हैं और उन कमियों को पूरा करने की बहुत जरूरत है । अगर एक लड़का थर्ड या फर्स्ट डिवीजन मे दसवीं पास कर जाता है, या बी०ए० पास कर जाता है और आप उसे नौकरी नहीं दे सकते, तो वह क्या करेगा? अगर कम से कम उसको खेती–बाड़ी का कोई न कोई तजरुबा है, तो वह खेती में सुधार कर ही सकता है । हमारे सार्डसदानों में और डाक्टरों ने कहा है कि दिमाग में भी एक ग्रुव बन जाती है, कुछ लकीरें बन जाती हैं, जिस तरफ वे चलती हैं, उसी तरफ इन्सान का रुझान हो जाता है । नैचुरल टैन्डैंसी अपनी तरफ ले जाती है लेकिन कुछ हैबिट्स भी होती हैं और उसी ढंग की रुचि हो जाती है । तो अगर आप उसको ठीक ढंग की शिक्षा देंगे, तो उसमें भी उसकी रुचि हो सकती है । जब लड़का दसवीं या बी.ए. पास कर जाता है पोकर राम जी ने एक मिसाल सुनाई थी कि आज की तालीम में और पहले वाली में यह फर्क है की जब लडका कालेज में दाखिल होने के लिए जाता है तो उस वक्त तो उसका बिस्तरा उसके सिर पर होता है और जब वह बी०ए० पास करके निकलता है तो बिस्तरा उसके बाप के सिर पर होता है और लड़का आराम से हाथ हिलाता चलता है तो यह आज की एजुकेशन में फर्क है । कहने का मतलब यह है किं लड़कों में वह आदर औंर सत्कार नहीं रहा । क्योंकि हम प्रैक्टिकल वर्क की तालीम से उसे दूर ले जाते हैं । यूरोप और अमरीकन कन्ट्रीज में कोई कुली नहीं है, वहाँ कुली का सिस्टम ही नहीं है । वहाँ. से

जब हम मिडल ईस्ट में आते हैं तो वहां देखते हैं कि कुछ–कुछ कुली शुरू हो जाते हैं । हिन्दुस्तान में तो कुली का आम सिस्टम हैऔर यही वजह है कि यहां पर मजदूरी सस्ती है । बाहर के मुल्कों के लोग अपना सामान आप उठाते हैं । ज्यादा सामान. हो तो एक रेहड़ी सी होती है उस पर रखकर ले जाते हैं । उनके अन्दर डिगनिटी आफ लेबर है । हमारी एजुकेशन मे सबसे बड़ा डिफैक्ट यही है कि यह जॉब औरिएंटिड नहीं है । जब तक कोई लड़का, कोई बच्चा या कोई लडकी कंमाक्र पूत नहीं होगा, तब तक वह अपना कार्य नहीं कर सकेगा । काम धारा होता है चाम प्यारा नहीं होता । घर वालों को बच्चा शुरू–शुरू इमें तो अच्छा लगता हैं लेकिन जब वह बेकार फिरता रहता है उस वक्त वह किसी को अच्छा नहीं लगता । वहू जब एक कमाऊ पूत नहीं होता, जब तक कुछ न कुछ काम नहीं करता तब तक वह अच्छा नागरिक भी नहीं हो सकता । यह मन एक ऐसी चीज है, यह भूत भी है । तक कहानी किसी ने ठी हू ही कही है कि एक भूत किसी ने बस में कर लिया । लेकिन उस बात की यह शर्त्त थी कि जब तक तुम मुझे काम देते जाओगे, तब तक तो ठीक है लेकिन जप काम देना बन्द कर दोगे तब मैं उपको खा जाऊंगा । तो वह किसी समझदार आदमी के पास गया कितनी देर इसको काम मैं कहाँ से देता जाऊंगा? नो उस सियाने आदमी ने बताया कि तुम एक चांस ले जाओ और उस भूत को कहो कि इस पर बार–बार बडो और उतरो बस यही आपका काम है । तो कहने का मतलब यह है कि यह मन भी एक भूत के अगर इसके पास काम रहेगा तो यह

भूत कुछ गलत नहीं सोचेगा । जैसे कहा गया है कि an ideal iks a devil'kks workkshop तो यह जो कहा गया है यह बिल्कुल सही है । तो कहने का मतलब यह है कि जेब तक किसी को काम नहीं मिलेगा, उसका दिमाग फ्रस्ट्रेशन की तरफ जाएगा। यह जो एमरजेंसी लगाई गई बहुत अच्छा हुआ, तरना तो अब से कुछ दिन पहले जो हालात इन देशो के अन्दर तोड़ कोड़ के शुरू हुए थे, अगर वे कामयाब हो जातै तो आज हम कहां के कहा बैठे होते। कुरुक्षेत् यूनिवर्सिटी की एग्जैक्टिव कौसल और कोर्ट का मैं मैंबर है इसलिए वहां रूची लेनी पडती है ।

मैं अलग अलग क्लास में गया और वहा पर लड़को से कन्टैक्ट किया और उन से सारी पूछताछ की काफी बातचीत की तो उन्होने मुझ से वेसे भी गी हमें–)रू तनज–न भी पूछा कि क्या आप जौ कहते. हैं सही. कहते हैं, क्या हमारा फयूचर सिक्योर है, क्या हमें रोजगार मिलेगा और क्या हम वाकई पढ़ लिखकर एक अंच्छे नागरिक बन सकेगे । मुझे जितने बच्चे मिले, सबने अपने फयूचर के बारे में अपने भविष्य के बारें मे चिन्ता दिखाई कि आखिर पढ़ लिख कर उनका बनेगा क्या । यह नैचुरल है कि हरेक व्यक्ति आगे फयूचर ओर भविष्य के बारे में सोचता है और उसको सोचना भी चाहिए । वे वही एजुकेशन हासिल करेंगे जो उनको दी जाएगी । तो ठीक ढंग का रास्ता दिखाना, प्रैकटीकल जिदंगी बिताने का रास्ता दिखाना इन इंस्टीच्यूशन्ज का काम है जहां पर उनको शिक्षा दी जाती है । हमारे सैकड़ों की तादाद में

हाई और मिडल स्कूल देहात में हैं और मैं समझता हूं कि देहात में शाजोनाजर ही किसी स्कूल में एग्रीकल्चर का प्लाट होगा और अगर किसी में है भी तो शायद ही उस में इस बारे में सभी साधन हों, पानी के और दूसरे भी और अगर कहीं किसी स्कूल में रहट बगैरा है, तो बच्चे उसी को फेरते रहते हैं और उसी को एग्रीकल्चर समझते हैं क्योंकि दूसरे और साधन एग्रीकल्चर के नहीं हैं (इस समय उपाध्यक्ष महोदया पदासीन हुईं) । आज जरूरत है कि हमारे देहात में स्कूलों में एग्रीकल्चर और एनीमल हैसबैन्डरी के सबजैक्ट हों । बहुत से स्कूलों में ये सब्जैक्ट हैं भी जहां ये पढ़ाए जाते हैं लेकिन बुकिश नालेज. है, प्रैक्ट्रीकिली कुछ नहीं होता है । नार्थ कोरिया के अन्दर वहां की जो सरकार है, उसने सारा तालीमी ढांचा बदल दिया हुआ है और उसे एग्रीकल्चरल लाइन्ज पर चलाया है और कहते हैं कि वहां पर ऐग्रीकल्चर इतना आगे चरना गया है कि उन्होंने रेलवे लाइन्ज तक सारी जमीन काश्त में ला दी है । वहां पर हर मकान पर आप तीन–चार बेलें सब्जी की चढी हुई देखेंगे और हर घर के लिए वहाँ किचन गार्डन तो कम्पलसरी है । वे लोग बड़े वाइड अवेक हैं । उनका बड़ा हैल्दी लिविंग है और ऐसे लिविंग के लिए अच्छे ढंग की एजुकेशन का होना बहुत जरुरी है । हमारे करनाल में हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी डेरी रिसर्च इसटीच्यूट है लेकिन आप करनाल को तो छोड़ो पास के गांव में जा कर किसी देहाती से पूछ लो वह पनीर लफ्ज नही जानता कि वह क्या होता है । मैं पंजाबी भाइयों की बात नहीं कहता वह लोकल लोगों से बहुत आगे हैं । उनके अलावा

जो दूसरें लोग हैं उनको बावजूद इस बात के कि वहां पर हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी डेरी इंस्टीच्यूट है पनीर कैसे बनता है यह बात तो छोड़ो पनीर लफज का पता नहीं कि क्या होता है । इसकी वजह यह है कि हमारा जो ज्ञान है वैह जहां होता है वहीं रह जाता है, आगे जनता तक नहीं पहुंचाया जाता है । मेरे कहने का मतलब यह है कि यह जो एजुकेशन है और इसका जो ज्ञान है, रिसर्च है इसको आगे मिशनरी स्प्रिट से बढाना बहुत जरूरी है, अगर हम चाहते हैं कि हम तरक्की करें । यह नहीं कि ज्ञान को इस तरह रखकर बैठे रहे' जो किसी को देखने न दें । एक दीये से दूसरा दीया जलाना जरूरी हए और समाज को आगे ले जाने के लिए ज्ञान का आगे फैलना बहुत जरूरी है । हमारे में बहुत बड़े बड़े आदमी हैं, इडस्ट्रियलिस्ट्स हैं. आई० ए० एस० और बड़े–बड़े अफसर हैं और बहुत से ऐसे हैं, जिनके लड़के भी आगे बहुत पढ़े लिखे हैं और उनकी शादियां भी अच्छे घरों में होती हैं और लड़कियां पढ़ी–लिखी मिलती हैं और वे आसूदा हाल हैं, उनको किसी बात की फिकर नहीं । ऐसे लोग हमारी अज्ञान जनता में शान फैलाने में बहुत सहायक हो सकते हैं और उन का फर्ज भी सोसायटी की तरफ बनता है कि उन में ऐसी भावना होनी चाहिए कि वह घरों में न बैठकर बाहर जाकर अज्ञान जनता के साथ कम से कम अपने ज्ञान को तो बांट लें । यहां चण्डीगढ में इतने बड़े–बड़े आदमी रहते हैं, जिनकी माली हालत् अच्छी है, बड़े अफसर हैं, उनके पास कारें हैं और हुफता में दो दिन उनको छुट्टी होती है, व इस यूनियन टैरीटरी के आसपास बीस मील के छुरिया

में जाकर लोगों को ज्ञान दे सकते हैं, शिक्षा दे सकते हैं । जाएं या अन्दर जाएं, आपको शान्त वातावरण मिलेगा । वहां का वातावरण द्रखतों, फूलों पौधों से बड़ा शान्तमय हो गया है और मैंन को बड़ी शान्ति देता है । इसलिए यह जरूरी है कि हमारे स्कूलों की बिल्डिंगों का वातावरण सही हो, बिल्डिंग्ज ठीक ढंग की हों, उन में सफेदी सही ढंग की हो ताकि बच्चों की आंखें ठीक रहे । वैटीलेशन, पार्क, फूल हों, ये सब चीजें वातावरण स्वच्छ करने के लिपू जरूरी हैं । अगर वातावरण स्वच्छ होगा तो हम फिजिकली भी साउंड होंगे । जहां मेंटली फिट होना जरूरी है वहां फीजिकल वातावरण की भी जरूरत है । इसलिए मैं सुझाव देता हूं कि एग्रीकल्चर और एनिमल हसबैडरी की एजुकेशन, प्रैक्टीकल लाईफ में अवश्य आनी चाहिए । आप साउथ में जाएं, वहां देहातों के स्कूलों में एग्रीकल्चर की पौपर एजुकेशन है लेकिन हमारे यहां प्रौपर एजुकेशन नहीं है । एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी में एग्रीकल्चर के लिए 150 लड़के दाखिल किए जाते हैं । दो क्लासें हैं, इसका मतलब है एक क्लास में औसतन 75 लड़के । हरियाणा के सात हजार गांव हैं । मैंने डी० सी० साहब को कहा कि आप दाखिला बढ़ाएं । वे आर्गुमैंट यह देते हैं कि इतनी' नौकरियां कहां से आयेगी । हमने उनसे पूछा कि क्या नौकरी. ही आपका ऐम है । तो मेंरे कहने का मतलब है कि नौकरी का हुन बड़ा गलत है । मैंने कहा कि क्या–ग्रैजुएट एग्रीकल्चर का। पढ़ाई नहीं कर सकता? उन्होंने कहा कि आप कहते तो हैं लेकिन लोग करते नहीं । मैंने कहा कि जरूरत इजाद की मां है । अगर हम आर्ट के

कालेज में 15 हजार ग्रेजुएट निकाल सकते हैं और दो सौ, तीन सौ, पांच सौ एक एक कालेज में दाखल कर सकते हैं तो क्या उन पर पाबन्दी है कि तुम नौकरी करो? क्या हम नौकरी की श्योरिटी या बांड देते हैं? अगर एग्रीकल्चर का ग्रैजुएट पड़ेगा और उसको नौकरी नहीं मिलती तो मजबूरन खेती करेगा, कोई स्पैशलाइजेशन करेगा । आज ज्यों ज्यों दुनियां में आबादी बढ़ रही है त्यों त्यों जमीन कम होती जा रही है, ज्यों ज्यों जमीन कम होती जाएगी त्यों त्यों प्रोडक्शन कम होती जाएगी । इसको रोकने का एक ही तरीका है और वह है स्पैशलाइजेशन । जब तक स्पैशलाइजेशन नहीं होती तब तक प्रोडक्शन को नहीं बढ़ा सकते । एग्रीकल्चर के क्षेत्र में मान लो आपने ज्यादा विद्यार्थी पढ़ा दिए और उनको नौकरी न मिले तो मजबूरन उन्हें उन रास्तों में जाना पड़ेगा, मजबूरन खेती करनी पड़ेगी । जरूरत ईजाद की मां है । उन्हें अपनी जरूरत के लिए रास्ता ढूंढना पड़ेगा । दिमाग हमेशा मनुष्य का उस तरफ चलता है जिधर सहूलियत होती है, मुश्किल कामों की तरफ वह आसानी से नहीं चलता । आप उन्हें मजबूर कीजिए । ज्यादा से ज्यादा संख्या में आप उन्हें पढ़ाए क्योंकि 80 परसेन्ट जनता खेती का काम करती है, पशुपालन का काम करती है । हम तो वह दिन देखना चाहते हैं :–

खाम है जब तक तो है मिट्टी का ही अंबार,

पुख्ता हो जाए तो शमशीरे बेजिन्हार ।

बच्चा जब तक कच्चा है तब तक तो वह मिट्टी के अंवार की तरह है लेकिन जब वह शिक्षा की भट्टी में से सही ढंग से निकल जाता है तो वह शमशीरे बेजिन्हार बन जाता है ।

17.00 बजे ।

हमारी एजुकेशन का कल्चरल ऐम भी है । दो लच्छ हैं एक कल्चर और एक सिरिलाइजेशन । कल्चर कल्टीवेट से निकला है कल्टीवेट का मतलब है पकाना । एक कच्ची चीज होती है उसे अंग्रेजी में 'रा' कहते हैं । कच्ची चीज को पकाने और पालिश करने, बाहर– से ही नहीं अन्दर से भी, दिल और दिमाग से भी, को कल्चर कहते हैं । कल्चर हमारी विचार– धारा है, हमारे आइडियाज हैं । यह जो हमारी संस्क्रति है, हमारी ट्रैडिशन्ज है लिट्रेचर में, हमारे देश में, हमारे विचारों में जो सबसे ऊंची फिलासफी है, उसे कल्चर कहते हैं । सिविलाइजेशन तो माडर्न प्रोग्रैस का नाम है और वह भी मैट्रीरियालिस्टिक । यही कल्चर ओर सिविलाइजेशन में फर्क है । एक लंगोटी वाला फकीर कल्चरली तो बहुत ऊंचा हो सकता है, मैटीरियली बेशक बहु ऊंचा न. हो । तो मैं कह रहा था कि यह कहना कि टैक्नीकल साईड, में, ऐग्रीकल्चरल कालेजिज में लिमिटिड एडमिशन करेंगे, ठीक नहीं है । यह जो रोजाना सिस्टम आफ एजुकेशन में चेंज की बात होती है, इसके लिए जरूरी है कि हम बच्चों को स्पैशेलाइज्ड एजुकेशन दें । आई० टी० आइज० पहले खाली पड़े होते थे । विद्यार्थी उनमें दाखिल होने के लिए तैयार नहीं थे लेकिन अब

देखते हैं कि आई० टी० आइज भर गए हैं, डबल शिफ्टस भीलगने लग गईहै । तो जरूरत है कि हम बच्चों को इस तरह की शिक्षा दें जिससे वे अपने पांव पर खड़े होसके' । इंडस्ट्रीज डिपार्टमैंट वाले कहते हैं कि हम लोन देते हैं । लोन तो वे देते हैं यह बात ठीक है लेकिन इसमें देखने की बात है कि कितने लोग इंडस्ट्रीज लगाते हैं । इंडस्ट्रीज में सबसे बड़ी चीज टैक्निकल नो–हाऊ और नालेज की होती है । अम्बाला में एक साईंस मास्टर ने चालीस पचास साल पहले एक साइंस का सामान बनावे की फैक्टरी लगा ली । उसकी देखा देखी में आज वहां कई सौ फैक्टरियां लग गईं और आज अम्बाला साइंटिफिक इंस्ट्रूमैन्टस बनाने की सबसे बड़ी जगह हमारे देश में है । यह सिर्फ हिन्दुस्तान की ही जरुरत को पूरा नहीं करता बल्कि यहां से फारेन कंट्रीज को भी सामान भेजा जाता है । कहने का मतलब यह कि देखा देखी में मनुश्य बहुत कुछ सीखता है । तो इंडस्ट्रीज को फैलाने का एक तरीका यह भी है । आप अनपढ़ लोगों को भरती कर लें, भरती करके –कोई काम सिखाए, और काम सिखा कर, कर्जा देकर, रा–मैटीरियल देकर कोई कारखाना उनसे लगवाएं । इस ढंग से अगर आप काम करेंगे तब लोग अपने पाव पर खड़े होंगे । कल कटारिया साहब ने कहा था कि हरिजन कल्याण निगम ने इस तरह से कुछ काम शुरू करवाएं हैं ।. यहीं नहीं वे उनके सामान के लिए मार्किट का भी इन्तजाम कर देते हैं । यह बड़ी अच्छी बात है और मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई । आज सबसे बड़ी कमी जो महसूस की जातीहै वह यही है कि हमारी एजुकेशन जौब–ओरिएंटिड नहीं है,

रिलेटिड टू लाईफ नहीं है । आज हमारे नौजवान फ्रसटेरशन महसूस करते हैं । इसलिए जरूरी–है कि सारे देश के लिएहम एक प्लानिंग करें और प्लानिंग के बाद हमें एक एक लड़के का पता होना चाहिए कि वह कहां जाएगा और क्या करेगा । हमारा कुछ तबका ऐसा है जो देहातों में रहता है, बैकवर्ड है । उसे आज तक बराबर आगे बढ़ने का मौका नहीं मिला लेकिन उसके होते हुए भी कालेज की एजुकेशन के लिए हमें कोई परसैन्टेज मुकर्रर करनी पड़ेगी कि स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके विद्यार्थी क्या पढ़े । कालेज में, यूनिवर्सिटी में हम हरेक को जाने की इजाजत न दें । लेकिन गर्लज एजुकेशन के हमारी शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हमारे में सेवा भाव हो । जहां पर ऐसे–ऐसे मिशनरी हुए हैं, डेविड लिविंगस्टोन जैसे जिन्होंने अफ्रिका ने जाकर जिसे काला महाद्वीप कहते हैं, जनता को शान देने का काम किया है । हमारे नाना–कैश्ड में भी जहां पर हर वक्त खतरा रहता है, वहां पर मिशनरी लोग नए हैं जिन्होंने वहां जाकर डेन खूंखार लोगों का दिल जीता और उन में एजुकेशन फैलाई तो हमारेरू यहां जरूरत इस बात की है कि हमारे पड़े लिखे नौजवान जिनकी माली हालत अच्छी है वह गांवों में जाकर लोगों को शिक्षा दे शिक्षा का मतलब सिर्फ यही नहीं है कि स्कुलो में पढ़ाना जरूरी है । शिक्षा फारमल भी होती है और इनफारमल भी होती है । शिक्षा का ऐसा सिस्टम है कि हमारी जो पांच ज्ञानेंन्द्रियां हैं और ये कान, आंख स्केल टेस्ट और टच पांच दरवाजे हैं हमारे शरीर के इनके जरिए से जो चीज अन्दर दाखिल होती है, उससे हमारे कुछ संस्कार

बनते हैं और हम बगैर फारमल शिक्षा हासिल किए बहुत सारा ज्ञान हासिल कर सकते हैं । अकबर कौन सा किसी स्कूल कालेज में पढ़ा हुआ था । और इसी तरह से महाराजा रणजीत सिंह ने भी कोई फारमल एजुकेशन नहीं ली हुई थी, लेकिन उनकी अन्दर की आंख खुल गई थी । मेरे कहने का मतलब है कि अगर हम पढ़ नहीं सकते तो तो से सुनकर भी बात को जान सकते हैं और इसे इनफारमल एजुकेशन कहते हैं और इसे अडल्ट एजुकेशन भी कह सकते हैं । हम देखते हैं कि हमारी लेडी गर्वनर साहिबा हैं उनको इन बातों का बहुत श्यान है और उन में मिशनरी स्प्रिट है और वे बहुत काम कर रही है । वे रूरल डिवैल्पमैंट बोर्ड की चेयरमैन हैं और कितनी ही दूसरी इंस्टीच्यूशन्ज, रैड क्रास वगेरा की चेयरमैन हैं और पब्लिक बहबूदी के कामों में उनकी बहुत रुची है । तो मैं यह कहना चाहता हूं कि जिनकी माली हालत अच्छी हए और जिनके पास ज्ञान है उनको यह काम करना ही चाहिए । अपना पेट तो हर कोई भरता है, गधा भी और दूसरे पशु भी भरते हैं लेकिन निःस्वार्थ भाव से ही इन्सान को कुछ काम करने चाहिए । सिंपल लिविंग और हाई थिंकिंग वाली जो भावना है, उस पर भी चलना चाहिए । यही सही मायनों में अच्छी एजुकेशन है । महात्मा गांधी जी ने भी कहा है कि जो अपनी जरूरतों से ज्यादा रखते हैं वे समाज विरोधी तत्व हैं । पिछले दिनों स्मगलर्ज पर छापे मारे गए तो कहते हैं कि एक एक्ट्रैस को यह फिकर पड़ गंई कि वह अपनी एक हजार साड़ियां कहां पर छिपाए । बहत. सारे लोग हैं जीं सौ–सौ साडियां सूट रखते हैं जिनको उनकी जरूरत

नहीं । ऐसे आदमी भी समाज के चोर कहे जाते हैं । यह जो बहुत ज्यादा पैसा है लगजरी है अरि मैटिरियल एफलूएंस है इससे भी वातावरण दूषित होता है इससे भावना में फर्क पडता है । सिम्पल लिविंग हमारा एक आदर्श है । सोशलिजम क्या है, सोशलिजम यही है कि जिन के पास ज्यादा धन है, ज्यादा जायदाद है वह गरीबों को दे । श्री विनोबा भावे हुस के लिए प्रचार करते थे, सबसे भूमि मांगते फिरते थे! इनका उद्देश्य यही था कि सोशलिजम आए । हमारे अन्दर यह भावना होनी चाहिए । मुझे ख्याल आ गया कि कुछ लोग ऐसा विचार करते हैं कि सारे स्कूल गवर्नमेंट के बनें, यह अच्छी बात नहीं है क्योंकि हमारे देश में दान देने की परम्परा है । ये स्कूल एक किस्म का दान देने का सोत है । अगर गवर्नमेंट के बन गए तो दान कौन देगा? इस दान से जो पवित्र पानी निकलता है उससे हमारे मन में दान की भावना पैदा होती है अतः इन संस्थाओं को रखना जरूरी है । बहुत सी संस्थाए ऐसी हैं जिनकी बिल्डिंग्ज गवर्नमैंट बिल्डिंग्ज से अच्छी हैं । इन संस्थाओं को दान देने की भावना जागृत करने की जरूरत है, देहातों' में यह भावना कम है लेकिन शहरो में ज्यादा है क्योंकि शहरों में वोकल ज्यादा हैं । गुलाटी साहब फरीदाबाद की ज्यादा आवाज उठाते हैं, गांव वाले कभी आवाज नहीं उठाते कि हमें बिल्डिंग के लिए दान दो, वे बना लेते हैं, उनमें दिल है, उन में हौसला है, कोई गांव यात्रा हाथ नहीं फैलाता, कोई सरकार से मांगता नहीं लेकिन उन्होंने बड़ी अच्छी बिल्डिंग्ज बना रावी हैं । इसलिए यह कहना कि इन संस्थाओं को एक ही कर दो, सारे

गवर्नमैंट स्कूल और प्राईवेट एक कर दो. । डिप्टी स्पीकर साहिबा, सटूडैटंस का रुझान अच्छा नहीं है । दुनियां में हर किस्म के रंगारंग हैं । अगर दुनिया में हर किस्म के विचार न होते हर किस्म के रंग न होते तो कोई चीज दिखाई न देती । Unity in diversity and diversity in unityप्राइवेट संस्थाएं' अपनी जगह काम कर रही हैं । उनकी बॉडीज को साथ लेकर चलना हमारे लिए जरूरी है । गवर्नमेंट स्कूलों में भी तो इस ढंग की कमेटी बन सकती हैं, वहां पर जो पेरैट टीचर्ज या आफिशियल्ज होते हैं वे स्कूल को सम्भाल सकते हैं, उनका पार्टिसिपैशन हो तो वे सुझाव भी देंगे और यह समझेंगे कि यह स्कूल अपना है, इसके लिए हमें कार्य करना है । वे गवर्नमैंट के साथ धुल मिल कर बहुत अच्छी बिल्डिंग बना सकते हैं । हमारे इस में भी भिन्न भिन्न विचार हैं कि बिल्डिंग्ज होनी चाहिएं या नहीं । ठीक है वे कहते हैं कि ज्यादा बिल्डिंगों की जरूरत नहीं है, हम दरख्तों के नीचे बैठ कर पढ़ा सकते हैं । ये तो अपने अपने विचार हैं लेकिन बिल्डिंग्ज का होना इस लिए जरूरी है ताकि आंधी से, तूफान से, बारिश से अपनी रक्षा कर सकें और ठीक ढंग की जगह मिल जाए । हमारा जो मन है इसका कार्य करने का अपना ही सिस्टम है । यह हालात के मुताबिक इन्सान को बदल देता है, लेकिन अगर इसको सही ढंग का वातावरण मिले तो सगुणता से काम कर सकता है । हम एयर कंडीशन्ड कमरे में इस लिए बैठते हैं ताकि हमें शान्ति मिले, बाहर हवा इतनी शान्त नहीं होती । यहां पर जो आपको सहूलियत मिलेगी उस में आप अच्छी तरह से काम कर सकेंगे ।

कमरा ठीक हो तो काम करने की ज्यादा सामर्थ्य होती है, दिखावट न हो, वैंटीलेशन हो, हवा का आगमन ठीक हो, बैठने की जगह ठीक हो और उसके आस पास का वातावरण भी ठीक हो । मैं चौधरी माड सिंह जी को एक सुजैशन दूंगा कि हमारे स्कूलों में हार्टीकल्चर का कोर्स भी होना चाहिए । यह डिस्ट्रिक्ट लैवल पर हो सकता है । जो दरख्त लगाए थे वे सारे खत्म हो गए । यह नहीं देखना चाहिए कि हमने इतने दरख्त लगा दिए बल्कि यह देखना चाहिए कि जितने लगाए थे उन में से कितने लगे । फारैस्ट डिपार्टमैंट में और हार्टीकल्चर डिपार्टमैंट में इस काम के लिए अलग से एक पोस्ट हो सकती है जो बच्चों को हार्टीकल्चर की शिक्षा दे । फूलों के बीज, जो सीजनल हों, उन के बारे में बता सकते हैं, छोटे छोटे दरख्त दे सकते हैं, चण्डीगढ में पता नहीं कितने दरख्त हैं, नई दिल्ली में कितने ढंग के हैं जो फलावरिंग ट्रीज हैं, गैदा है, और भी कई तरह के पौधे हैं जो स्कूलों में लगाए जा सकते हैं और इनका बच्चों को ज्ञान होना बहुत जरूरी है । हमारा मतलब यह नहीं कि वहां की हवा ही ठीक हो, इन पौधों की जो साऊंड है वह बहुत अच्छी है । आप कुरुक्षेत्र युनिवर्सिटी के बाहर बारे में खास तौर से कहूंगा कि हमारी गर्लज एजुकेशन अभी बहुत पीछे है । को–एजुकेशनल इंस्टीच्यूशंज से ही काम नहीं चल सकता । आठवी तक तो इस सिस्टम को माना जा सकता है लेकिन उनकी आगे की पढ़ाई के लिए विशेष प्रबन्ध होना चाहिए । उन्हें मां बनना पड़ता है । बच्चे वही पैदा करती हैं । बच्चे भी पालती वही हैं । दूसरे, घर के

काम करना भी उनके लिए जरूरी हैं । हमारे देश में ही नहीं फारेन कंट्रीज में भी ज्यदातर औरतें घर का काम करती हैं । वहां भी यह जरूरी नहीं कि वे नौकरी या दूसरे काम ही करती हो । कुछ काम ऐसे हैं जिनमें मर्द ज्यादा कामयाब हो सकते हैं और कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिनमें औरत ही कामयाब हो सकती हैं । औरतों का दिल खास तौर पर नर्म होता है, उनमें प्यार भी ज्यादा होता है । इसलिए होम एजुकेशन उनको पूरे ढग से देनी जरूरी है । इसके अलावा हमारे मुल्क में कुछ और बातें भी हैं । यह गर्म मुल्क है । गर्म मुल्क में सर्द मुल्क की निस्बत थोड़ा सा मैच्योरिटी में भी फर्क पड़ जाता है । गर्म मुल्क में चीज जल्दी पक जाती है । यहाँ प्युबर्टि की ऐज योरूप के मुकाबले में कुछ कम है । तो इसलिए आठवीं कक्षा के बाद माता पिता यह महसूस करते हैं कि लड़कियों के लिए अलग स्कूल होना चाहिए । उनके मां–बाप ऐसा चाहते हैं कि लड़कियों को घर के कामकाज की, सिलाई–कढ़ाई की, होम साईंस की शिक्षा दी जाये । इन सारी चीजों को देखते हुए लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान देना जरूरी है । मैं तो यह कहूंगा कि लड़कों से ज्यादा जरूरी लड़कियों की शिक्षा है । अगर अच्छी मां होगी तो वह सारे घर को बना सकती है, उसका बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा । जब बच्चा छोटा होता है तो उसपर मां का अच्छा प्रभाव पड़ता है । बड़ा होने पर तो उसकी जो आदतें हैं वे पक जाती हैं । जब उसकी आदात पक जाती हैं तो उसको नये विचार देने में बड़ी मुश्किल' आती हैं लेकिन जब छोटे बच्चे होते हैं तो उनपर अस्तर आसानी से कर जाती हैं । इसलिए

लड़कियों की शिक्षा पर खासतौर से ध्यान दिया जाये । हमें लड़कियों के स्कूल ज्यादा से ज्यादा खोलने चाहिए' । शिक्षा का स्टैन्डर्ड बढ़ाना भी जरूरी है । उसके लिए मैं चौधरी माडू सिंह को सुजैस्ट करुंगा कि जहां नेचर अपने ढंग से काम करती है वहाँ वर्कस अन्डर प्रैशर भी जरूरी है । एडमिनिस्ट्रेशन का होना जरूरी है । अगर बी० ई० ओज ० को मोटर साइकिल की सहूलियतें दे दें तो अच्छा रहेगा । उनको मामूली इन्ट्रैस्ट पर लोन दे दें, या उनको मोटर साइकिल अलाउन्स दे दें । आजकल तो हरियाणा में देहातों में पक्की सड़कें भी बन गई हैं । बी० ई० ओज० चौकिंग अच्छी कर सकते हैं । आपका फलाइंग स्काड अपनी जगह पर है । जितनी भी ज्यादा फैसिलिटीज होंगी उतनी ही ज्यादा चौकिंग होगी । एक टीचर जो गैर हाजिर रहता है, उसको चौक क्यों नहीं किया जाता है? मैं उस आदमी की तो मान सकता हूं जिसकी टूरिंग ड्यूटी है । उसके बारे में उसका अफसर कह सकता हद कि बाहर डयूटी पर गया हुआ है लेकिन जो आदमी प्रोपर कैम्पस में फिक्स जगह पर काम करता है वह फर्जी दरखास्त रख कर चला जाये और बाद में हाजरी लगाये, यह कैसे हो सकता है । उनके लिए बाकायदा परफार्मा होना चाहिए । जब भी कोई आदमी छुट्टी की एप्लीकेशन देगा तो उसके पांच मिन्ट बाद ही दर्ज हो जानी चाहिए और बाद में इन्चार्ज दस्तख्त करे कि इतने बज कर इतने मिन्ट पर छुट्टी दी गई और इतने दिन की दी गई । अगर वे सारी बातें नहीं हैं तो साफ जाहिर है कि उसमें कुछ न कुछ

खराबी है । हमारी स्टेट में म्यूजिक के ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है जैसे कि किसी ने कहा है––

मेहतरानी हो कर भी रानी गुनगुनायेगी जरूर ।

कुछ भी हो जाये जवानी गुन गुनायेगी जरूर ।

कुछ बातें ऐसी होती हैं जो वैसे ही होती हैं । जो मन होता है यह अपने ढंग से चलता है । इसे कोई रोक नहीं सकता । एजूकेंशंन का मतलब ही यही है । हमारे अन्दर जो धारा बढ़ रही है, हमारे अन्दर जो नेचुरल प्रवृतियां हैं, इमोशन हैं वे जरूर उभरेगें । हमारे जो पुराने ऋषि मुनि हुए हैं उन्होंने मन के सारे पुर्जे खोल कर देख लिए हैं । वे बताते हैं कि 14 प्रवृत्तियाँ हैं, चार जनरल टेन्डेन्सी है । ये 18 पुजें हैं । 14 प्रवृत्तियों के साथ 14 इमोशन्ज हैं, भाव हैं । तो कहने का मतलब यह है कि जो नदी बह रही है, यह बहती ही चली जायेगी । यह नदी कोरे कलर में जा कर गिर रही है । अगर बांधना चाहते हो तो पानी रुकेगा नहीं । आप उसको सबलिमेशन कर सकते हो । सबलिमेशन आफ दी हयुमन इंस्टिंक्ट हैं । तो हमारे बच्चे गायेंगे जरूर । हर बच्चा गायेगा । क्या आप के पास गाने की कोई किताब है? क्या आपके पास कोई सलैबस है, क्या कोई म्युजिक टीचर है? अगर हर स्कूल में नहीं रख सकते हो तो सारे जिलों में एक रख दें, नहीं तौ सारी स्टेट मैं एकु रख दें । एक जिले में गाने सिखा कर दूसरे जिले में चला जायेगा । छः महीने एक किले में रहेगा छः महीने

दूसरे जिले में रहेगा । इस तरह से हर जिले की डिमान्ड पूरी हो जायेगी । किसी को क्या पता है इन बच्चों में कितने ही तानसेन और सहगल हैं । आखिर वे इन्हीं बच्चों में से निकलते है । जिन बच्चो के गले अच्छे हों उनको 15 दिन के लिए या दस दिन के लिए उस जिले मे भेज दें जहां पर वह टीचर है । वे वहाँ पर 10– 15 गाने सीख आयें । वे आकर दूसरे बच्चों को याद करायें ।आजकल क्या सिम्टम है? वे बच्चे अपने आप, टीचर को पता शी नहीं होता है, इधर उधर से सीख लेते हैं । वे गायेंगे जरूर, अच्छे गीत न गायेंगे न बुरे गायेंगे । यह करार हमारे एजूकेशन सिस्टम का है । जैसा आहार बच्चे खायेगे वैसे ही विचार आयेगे । अन्य पानी के हारा और विचारधारा के द्वारा मन पर जरूर असर होगा । तो उन बच्चों को नेशनल गाने सिखाये । पहले ऐसा होता था कि हर बच्चा इतनी नबमें याद करेगा, इसके दोहे और श्लोक याद करेगा । अब तो मास एजुकेशन है । पहले मास एजुकेशन नहीं थी । अब मैट्रीयिलिस्ट ऐज है, पहले नहीं थी । टीचर भी साधारण देहाती' होते थे. । अब भौतिकता का जमाना है । मास एजुकेशन है । इसमें और भी चौकन्ना होना पड़ेगा । म्यूजिक ऐसी चीज है किं पशु के भी कान खड़े हो जाते हैं । हमारे साइंटिस्ट जगदीश चन्द्र बोस ने तो यह भी साबित किया है कि द्रखत भी गाना सुनते हैं । गाने तो गाय और भैसों को भी सुनाये जाते हैं ताकि वे ज्यादा दूध दें । कहने का मतलब यह है किं इनका अपना ही असर है । अगर हम 10, 15 या 20 देश भक्ति के गीत जबानी याद करायें, तो बड़ा लाभ होगा । हरेक का गला तो

अच्छा नहीं होता लेकिन वह गुनगुनाता जरूर है । तो प्रोपर ढंग से उनको म्यूजिक सिखाया जाये, इससे उनके वातावरण पर असर पड़ता है । सेचुरेशन आफ दी आटमोसफियर का असर जरूर होता है पढ़ाने वाले ही टीचर नहीं होते दूसरे भी टीचर होते हैं । राजनैतिक लोग भी टीचर होते हैं 'जो सारी पब्लिक को गाइड करते हैं । जो बड़े–बड़े ऋषि मुनि, दार्शनिक और फिलोस्फर हैं उन्होंने सभी सामाजिक और राजनैतिक चीजों पर गाइड किया है । उन्होंने उस वातावरण को सेपरेट कर दिया है । कहने का मतलब यही है कि गानों का अपना असर होता है । प्रोपर ढंग से वह वातावरण पैदा करें जो छोटे बच्चे के मन पर असर करे । छोटे बच्चे के मन पर जल्दी असर होता है, बड़े होने पर उतना असर नहीं होता है । जो बचपन में याद हो गया, बाद में याद नहीं हो सकता । बचपन में जो याद होगा उसका कुछ न कुछ असर जरूर होगा । मैंने मोटी मोटी बातें बतायी हैं । मैं वैसे तो ज्यादा बोल गया । पोसवाल साहब ने कहा कि ज्यादा टाईम दें ।

अब मैं पब्लिंक स्कूलों के बारे में कहना चाहता हूं । सोशलिज्म का मतलब यही है कि हमारे गरीब बच्चों को भी अच्छी एजुकेशन मिले । हुमारे कांगड़ा के, रानीखेत और अलमोडा के हजारों बच्चे नौकरी करते हैं । वे नौकरी क्यों करते हैं? कि वे गरीब हैं वे अच्छे बच्चे हैं, अच्छा उनका दिमाग है, सब बाते हैं लेकिन क्या वजह है कि उन्हें नौकरी करने को मजबूर होना पड़ता है । वे बच्चे स्कूलों को छोड कर आते हैं । यही वजह है कि

हमारे देश के जो दार्शनिक तत्व हैं, डायरैक्टिव प्रिसिपल्ज आफ स्टेट पालिसी हैं उनमें जो उद्देश्य रखा है और संविधान में जो भूमिका है उसमें यही है कि देश के हर नागरिक को सोशल, इकोनोमिक एन्ड पोलिटिकल जस्टिस मिले । दूसरे इकवैलिटी आफ स्टेट्स एन्ड अपरच्चुनिटी मिले । हमारे संविधान में लिब्रिटी आफ वॉट, बीलिफ एन्ड वरशिप भी है । तो यह जो उद्देश्य हमने रखे हुए हैं, यह देखने में बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन वास्तव में हम इन उद्देश्यों को पूरा नहीं त्हर सकते । हम सिर्फ कह कहते हैं । यह जो बीरा प्वायंट प्रोग्राम है, जो यह प्रधानमंत्री ने इस देग को डायरैक्शन दी ओं, यह बहुत जरूरी है । यह कांटा बदलना जरूरी पा । जब हमने एडल्यू फैंचाइज किया तब हमने सब लोगों को राजनीतिक बराबरी का नौहा दिया । राजनीतिक बराबरी और सामाजिक बराबरी वास्तव में तब तवा नहीं आ सकती जब तक कि आर्थिक बराबरी नही आती । यह सबसे पहले जरूरी है । जिसको रोटी का सांस, उसको धन की क्या आवश्कता । जैसे आदमी का दिमाग उसी वक्त तक त्हाम करता है जब तब वह पंखे के नीचे बैठा हो, धुप के अन्दर चलकर अगर कोई काम करेन! चाहे तो वह काम नहीं करेगा । माला जपने वाले भी मन्दिर के अन्दर माला फेरते हैं । ऐसा महात्मा बुद्ध ने भी कहा है कि सारंगी के तार इतने न कसो कि वे टूट जायें और इतने ढीले भी न छोड़ों कि बेलगाम हो । मिडल–वे होना चाहिए । अगर आर्थिक सिक्योरिटी नहीं है, फाइनेंशियल सिक्योरिटी' नही– है तो सोशल और पोलिटीकल इक्वैलिटी नहीं आ सकती क्योंकि दिल और दिमाग का

इससे सीधा ताल्लुक रहता है । कार्ल मार्क्स ने कहा है कि यह हुक– ऐसी चीज है जिसका दिलो–दिमाग, राजनीतिक, यानी हरेक चीज पर असर पड़ना जरूरी है । जब तक आर्थिक हालत ठीक नहीं होते तब तक यह नारा लगाना कि सामाजिक' और राजनीतिक तौर पर बराबरी है, यह गलत है । जब तक हम आर्थिक दृष्टि से बराबर नहीं होते हैं तब तक इवैलिटी आफ स्टेट्स एण्ड आफ अपार्चुनिटी कहना भी गलत है । हमारे मुल्क में जो बच्चे पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं उनको पहली जमात से ही अंग्रेजी पड़ाने लग जाते हैं । शुक्र है कि अब आई० ए ० एस० के अंग्रेजी के अलावा दूसरी भाषा में भी इम्तहान दे सकेंगे लेकिन फिर भी जो कम्पीटिटोव एग्जामिनेशन्ज के इन्टरव्यू लेने वाले आते हैं, शायद उनके दिलो–दिमाग भी अंग्रेजीयत से रंगे हुए हों । वहाँ पर अच्छी शिक्षा है, वातावरण अच्छा है या उनके साधन अच्छे हैं कुछ भी बात हो, अगर एक को तो सौ गज आगे खड़ा कर दें और एक को सौ गज पीछे खड़ा कर दें तो यह इन्साफ नहीं है । पब्लिक स्कूल्ज की एग्जिस्सटैन्स इन्साफ जाहिर नहीं करती हम यह मान सकते हैं कि कुछ बच्चे टेलैन्टिड हों और कुछ उतने टेलैन्टिड न हों । यह नेचर का असूल है । किसी ने कहा है. Equality standardised pattern is against the law fo anture Persons dffier in capacity] mental physical moral and spiritual. पांचों उंगलियां बराबर नहीं हैं और न ही हो सकती हैं । अगर यह सारा संसार बराबर हौ जाये तो फिर एग्जीस्सट करने की जरूरत नहीं । हवा इसलिए चलती है कि कहीं गर्मी है

तो कहीं सर्दी है । पार्क है और फर्क से ही मूवमैट हो सकता है । अगर फर्क न दरों तो मूवमैंट नहीं हो सकती । पांचों ऊंगलियों तो बराबर नहीं है लेकिन मील लम्बी कौन सी है, ज्यादा से ज्यादा प्रोपोरशन तुक और डेढ की है । यह करोड़ों की या रुपयों की निस्बत नहीं है । इसलिये हमारे लिये यह जरूरी है कि हम आर्थिक ढांचे को ठीक ढंग से लाये । इसके पीछे पोजैशन का इन्सटिक्ट काम करता है । एक आदमी करोड़पति और अरबपति होते हुए भी सन्तुष्ट नहीं है । वह कोई हुमारे से ज्यादा थोड़े ही खाता है । शायद पोसवाल साहब खाना उससे भी ज्यादा खाते हों । अरबपति या करोड़पति को तो शायद भूख भी न लगती हो महज जो पोजैंशन की इन्सटिंक्ट है, वह उसकी संतुष्टि के लिये दिन रात भागा फिरता है, काम करता है । आजकल से पहले तो हमारे सेठ वैसे ही लगे रहते थे । आजकल का जो नौजवान इंडस्ट्रियलिस्ट है वह तो आज यह भी हिसाब लगाता है कि इतना सरकार को देना पड़ेगा, इतना इन्कम–टैक्स में चरना जायेगा इसलिए चलो बीयर ही पीओ, शराब पीओ और ओवर–एमपलायमैंट करो । तो इस तरह से उनका इस तरफ ज्यादा दिमाग चलना शुरू हो गया है । यह जो ज्यादा पैसा है, यह करैक्टर को भी गिराता है । जितना कोई मैटीरियलिस्ट होगा, उसकी उसी ढंग की भावनाएँ गा ख्वाहिशें होंगी । इसलिये बीच का रास्ता ही ठीक है । यी जरूरी है कि हम एजुकेशन का एक ही पैटर्न रखें । गरीब और अमीर सभी के लिये एक ही सिस्टम आफ एजुकेशन हो । सभी को बराबर का मौका दिया जाये । एक जगह आपने 15

लडकों पर एक टीचर रखा हुआ है और उनकी कुरैक्शन के लिये. अलग रखा हुआ है, आप उनको सहूलियाते भी सारी देते हैं, रैजीडैशीयल मकान भी वहीं है, बिल्डिंग नक्शा चार्ट, सारा सामान वहीं है और एक एक को आपने प्रौपर वातावरण ही नहीं दिया हआ है । इससे एक ही काबलियत के लड़के या एक ही किस्म के दिमाग वाले लड़के दोनों जगह से नहीं पा सकते । कोई एक्सट्रा–आर्डीनरी हो, उसकी बात अलग है । लेकिन उनमें अटेनमैट का फर्क रहेगा । उनमें बोल–चाल का, कपडा पहनने का और दूसरी सारी चीजों मैं फर्क रहेगा । इन सारी चीजों का फर्क जो इन्टरव्यू लेने वाले हैं, उन पर असर डालता है । मैं यह मानता हूं कि कुछ टेलैन्टिड लडके होते हैं अगर उनको आम लड़कों में मिक्स करेंगे तो पढ़ाई का स्टैंडर्ड उनके लिये ठीक नहीं आ सकता है । क्योंकि उनमें ज्यादा एनर्जी है, उनका दिमाग ज्यादा तेज है, उनको बड़े तेज और हाइली क्वालीफाईड टीचरों की जरूरत है । दूसरे लडकै उनको सत्यों कर सकते हैं । यह बात हम मान सकते हैं लेकिन अगर उन पब्लिक स्कुलो को एग्जिस्ट करना भी है जब तक यहू कैपिटलिस्टक सोसाइटी का ढांचा चलता है तो हम उनके लिये राह कम्पलशन करें कि आप 20 प्रतिशत गरीब लोगों के बच्चों को जो इन्टैलीजैन्स टैस्ट पास करें, की एजुकेशन दें । वे. उनसे कोई खर्चा न लें, कोई बोर्डिग लैजिंग या फीस वगैरा कुछ न लें । उनके लिये यह हो कि उनको 20 प्रतिशत गरीबों के इन्टैलीजैन्ट बच्चे दाखिल करने पड़ेंगे चाहे उसका खर्चा वे लोग दें जो अमीर हैं या स्कूल दें तब हम उनकी

एग्जिसटैन्स को मान सकते हैं और यह कह सकते हैं कि वे कुछ टेलैन्टिड बच्चों के लिये हैं

Deputy Speaker : Order please. You should address to the Chair.

चौधरी ईश्वर सिंह : तो मेरा कहने का मतलब यह है कि उन पब्लिक स्कूल्ज की एग्जिसटैन्स हम तभी मान सकते हैं जब वे ऐसा करें । तब हम यह कहेंगे कि ये कुछ ऐसे टेलैन्टिड बच्चों के लिये हैं जो खेलों में ज्यादा होशियार हैं, म्यूजिक में ज्यादा होशियार हैं या किसी और चीज में ज्यादा होशियार हैं क्योंकि स्पैशेलाइजेशन स्कूलों में भी हो सकती है । दूसरे देशों में भी स्पैशेलाइजेशन के लिये अलग से स्कूल हैं । जो ज्यादा इन्टैलीजैट हैं अगर उनको हम आम बच्चों में मिंलायेगे तो उनकी स्पीड में फर्क पड सकता है । इसलिये पब्लिक स्कूलो के लिये यह कम्पलशन करनी पड़ेगी कि वे कुछ परसेंटेज, 15, 20, 30 प्रतिशत चाहे कुछ भी हो, उन गरीब बच्चों को अपने खर्च पर ही दें जो उनका इन्टैलीजैंस टैस्ट पास कर ले । ये जो पब्लिक स्कूल हैं, इनकी हमारे जो स्टेट पालिसी की डायरैक्शन्ज हैं कि हम सोशल, इकोनोमिक और पोलिटीकल जस्टिस देना चाहते हैं, इक्वैलिटी आफ स्टेट्स एण्ड अपौर्चुनिटी देना चाहते हैं, इसके अन्दर तब तक बराबरी की जगह नहीं है. जब तक कि इनमें कुछ ढंग का सुधार न कर दिया जाये । एग्जामिनेशन सिस्टम के बारे में मैं कुछ कहना चाहूंगा । एग्जामिनेशन सिस्टम के बारे में

अलग–अलग बातें कही जाती हैं । चौधरी माडू सिंह जी ने तजुर्बा भी करके देखा. है उन्होंने यह तजुर्बा एक दफा तो यह करके देखा कि आठवीं का इम्तहान लेने की जरूरत ही नहीं, अपने आप प्रोमोट कर दो लंकिन वह उस तजुबे में भी फेल हुए । पांचवीं का इम्तहान भी उड़ा कर देखा, उस तजुबें में भी फेल हुए वह पोज तब कामयाब हो सकती है जब प्राइमरी से लेकर हाई स्कूल तक एक ही ढांचा हो और उन्हें यह पता हो कि. पांचवीं वाले या मिडल वाले प्रोमोट होकर हमारे पास ही आयेंगे । अगर यह कबाड आगे चला गया तो हमें ही इसके साथ उलझना पडेगा अगर एक ही हैडमास्टर हो और एक ही ढांचा हो तब तो ठीक है लेकिन जब प्राइमरी स्कूल अलग हैं और हाई और मिडल स्कूल अलग हैं तो वे यह चाहेंगे कि इन सब को आगे करो । इसके अलावा कुछ लोकल प्रैशर भी होता है' और जो मैंने कहा कि Human nature works under pressure यह एडमिनिस्ट्रेशन का एक अमूल है और एडमिनिस्ट्रेशन की हर जगह जरूरत है चाहे वह आपका घर हो, चाहे कालेज हो या चाहे और कोई इंस्टीच्यूट हो । इस तरह से उन्होंने काम करना ही छोड दिया क्योंकि उन्होंने सोचा कि पास करना तो हमारे हाथ में है । यही वजह है कि पांचवीं के इम्तहान आपको दोबारा लेने पड़े और लेने भी चाहिये । आठवीं के इम्तहान भी दुबारा करने पड़े क्योंकि मिडिल स्कूल और हाई स्कूल अलग थे और मिडिल वाले अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते थे । तो एग्जामिनेशन सिस्टम में भी क्रैमिंग पर जोर दिया जाता है और मैं समझता हूं कि क्रैमिंग करके, समझकर थोड़ा बारबार

कहकर याद करं लिया जाए तो उसमें कोई बुरी बात नहीं है । इंटेलिजेन्स टैस्ट और क्वेश्चन आनसर टैस्ट जो है इस पर जोर देना चाहिए । एजुकेशन में एक्स्ट्रा कैरिकुलर एक्टिविटीज भी एक खास चीज है और उसमें टूरज की अपनी इम्पारटैंस है । हमारे देश में हमारे ऋषियों ने हमारे सन्तों ने अलहिदा अलहिदा धाम बनाए हैं । केदारनाथ बद्रीनाथ रामेश्वरम सोमनाथ आदि धाम हैं जिनकी अपनी इम्पारटैंस है । ये धाम बनाने का मतलब यह भी था कि सब जगह फिर कर हमें अपने देश की ज्योग्राफी का पता हो और हमें अपने देश की महानता का पता हो । अगर हम कहीं नहीं जाए तो हमें आधी चीजों के बारे में पता ही न हो और इस प्रकार हमारी लिमिटिड नॉलेज रहती है । जो लिमिटिड नॉलेज होती है वह बड़ी डेंजरस होती है । किसी ने कहा भी है कि Learning without thinking is useless and thinking without learning is dangerous हमें अपने देश की ज्योग्राफी का पता होना चाहिए । बहुत से. लोगों ने समुद्र नहीं देखा बहुतों ने पहाड़ नहीं देखे । लिमिटिड नालेज से डिफ्रैंस पैदा होता है और संकुचित बनाता है । इसलिए. एजुकेशन के लिए टूरज बहुत जरूरी हैं । इस काम के लिए फंड अलग से होना चाहिए । कुछ सरकार सबसीडाइज करे । जब मैं यूरोप गया तो मैंने देखा कि लगभग हर हवाई अड्डे पर जापान के बच्चे थे और वे लड़के प्रि–युनिवर्सिटी के थे । मैंने जब उनसे पूछा कि आप लोग यहां क्या करने आए हो तो उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ तो यह टूरज कम्पलसरी हैं । उनमें से कुछ तो हमारे साथ आएं थे । वे कहते

थे कि जब हम कालिज में होते हैं तो सारी दुनियां के मुल्क हम देख सकते हैं । हमारे यहाँ भी ऐसा होना चाहिए कि कम से कम हमारे बच्चे अपने देश को देख सके । पता नहीं बाद में जिन्दगी में कुछ देखने का मौका मिलता भी है या नहीं । जब हमारा ध्येय दसवीं है तो हम ऐसे टूरज आर्गेनाइजड करें. जिससे हमारे बच्चे सारे देश में फिर सकें और उनके फिरने से उनको अपने देश के बारे में पूरी नालिज मिल सके । हमारी जो सोशल सर्विस है जैसे स्काउटिंग है एनसीसी है. यह बहुत ही अच्छी हैं और करैक्टर बिल्डिग में यह बहुत अहम रोल अदा करते हैं । मेरा कहना यही है कि एजुकेशनल टूरज बहुत जरूरी हैं और ये हमारी इन्फर्मेशन को वाइड करते हैं । जब इन्फर्मेशन वाइड होगी तो जीवन के अन्दर जो अम पैदा हो जाते हैं वह नहीं होंगे । इन टूरज से मन की शंकाएँ दूर होंगी और हमारे अन्दर जो प्रान्तीयता की भावना जातिपाति की भावना है वह दूर होगी । एक प्रान्त के बच्चे जब दूसरे प्रान्त के बच्चे से मिलेंगे तो उनके अन्दर प्रेम. की भावना पैदा होगी । हमारे यहां यूथ होस्टल हें । यह ठीक. है कि इतने ज्यादा नहीं हैं लेकिन जो स्कूल है अगर छुट्टियों के दिनों में ये टूरज रखे जाएं. तो स्कूलों को होस्टल के तौर पर भी इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन एक सूबे के एजुकेशन डिपार्टमैंट और दूसरे सूबे के एजुकेशन डिपार्टमैंट में कों–आर्डिनेंस होना आवश्यक है.. तभी यह होस्टल वाली समस्या हल हो सकती है और तभी हर प्रकार की सहुलियत मिल सकती है । कडक्टिव टूरज भी बहुत जरूरी हैं । एजुकेशनल टूरज के अन्दर हर प्रकार

की गाइडैंस की जरूरत है । मैं आपको एक किस्सा सुनाऊं कि आज से 15 साल पहले करनाल के पास मुझे एक 19 साल का लडका मिला । वह आस्ट्रेलिया का रहने वाला था । उसने बताया कि हम कलकत्ता से 20 लड़के चले थे और अलग–अलग जगहों पर हम घूम रहे हैं । जहाँ पर यह उचाना लैक है वहाँ पर वह मुझे मिला । मैंने' उससे पूछा कि तुम सोए कहां थे तो उसने बताया कि मैं इस जगह पर सोया था । मैंने पूछा कि तुम्हें डर नहीं लगा तो उसने कहा कि इसमें डर किस बात का है । उसने मुझे बताया कि हमारे देश में तो यह टुरज कम्पलसरी हैं । हम हर जगह जाते हैं । वह एम०ए० प्रिवियस का स्टूडैन्ट था । उसने मुझे कई तरह के कपड़े दिखाए कि इनसे बरसात में बचाव होता है– इनसे सर्दी का बचाव होता है । इस प्रकार का वातावरण उन देशों में है । उसने मुझे बताया कि हमारे पास एक क्वैश्चन ऐयर बना हुआ है । कौन–सा कपड़ा पहनते हैं खेती बाड़ी कैसी है क्लाइमेट क्या है किस किस्म की वनस्पति हैं इकनामिक हालात क्या हैं समाजिक हालात क्या हैं? वह कह रहा था कि यह सारा क्वैश्चन मेरे पास है । हम सभी जगहों की फोटो भी लेते हैं और इस प्रकार हम सब सूबों में गए हैं सारी पोजीशन टैबूलेट की है । तो मेरे कहने का मतलब यह है कि हमारे पास टाइम तो बहुत है देखना यह है कि हम उस टाईम का किस प्रकार से प्रयोग करते हैं खाली टाइम में आदमी क्या करता है? एक आदमी शराब पीकर भी टाइम पास कर देता है और एक आदमी ताश खेल कर अपना टाईम पास कर देता है ऐसा क्यों है? क्योंकि हमारी एजुकेशन की

कमी है । डिप्टी स्पीकर साहिबा हमारे में हैल्थ एजुकेशन की भी कमी है पब्लिक के लिए हैल्थ एजुकेशन की बड़ी जरूरत है । सफाई वगैरह न रखने की वजह से लोगों की आंखें खराब हो जाती हैं क्योंकि लोग अपने कपड़ों की. अपने शरीर की सफाई वगैरह नहीं रखते अतः इस ओर सरकार को खास ध्यान देने की आवश्यकता है । चीजें तो यह बहुत छोटी हैं लेकिन इनकी महत्ता बहुत है जैसे हमारे चौधरी बंसी लाल जी ने मटौर में गोबर गैस प्लांट का जिकर किया बात तो यह बहुत छोटी थी लेकिन देखा जाए तो छोटी भी नहीं थी । तो डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं कह रहा था कि हैल्थ एजुकेशन की हमारे यहाँ बहुत भारी कमी है इनको इम्प्रूव करना है 'सैनी– टरी खुदा का दूसरा नाम है. हमें सारे वातावरण को साफ करना है यही हमारी शिक्षा का उद्देश्य है । बच्चों की नालिज बढ़ाने के लिए हमें टुर्ज आर्गेनाइज करने चाहिएं जिस से कि बच्चों की नालज बढ़े । हमारे यहां एक ओर बड़ी भारी कमी है वह है लाइब्रेरी की स्कूलों के अन्दर डिबेट्स वगैरह की. डिस्कशन की बडी आवश्यकता है. अगर स्कूलों में आप वाद–विवाद का सिलेबस बना लें तो बहुत ही उपयोगी रहेगा ।

मैं यह कह सकता हूं कि हमारी एजुकेशन इतनी डिफैक्टिव है कि एक एमए. पास लड़का किसी भी सबजैक्ट पर डिसकशन– नहीं कर सकता । अगर आप 50 सब्जैक्ट्स पर एक किताब बना लें तो उसका तब तक कोई खास नतीजा नहीं निकलेगा जब तक कि उन्हें. ठीक ढंग से समझाया नहीं जाएगा ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा. हमें लीडरशिप की जरूरत है । अगर हम बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे तो उसी मुताबिक वे बड़े बनेंगे जैसे आप देखें कि यह फैमिली प्लानिंग का प्रोग्राम है यह ज्यों ज्यों समझ में आता जा रहा है. त्यो त्यों उस पर लोग अमल करते जा रहे हैं । तो मैं कह रहा था कि लाईब्रेरी की हमारी प्रान्त में बहुत कमी है, यह सभी चीजें बच्चों. को उन में पड़ी किताबों से मिल सकती है । जितना गुड़ डालेंगे– उतना मीठा होगा मतलब कि जितनी उच्चकोटि की शिक्षा हम लडूको को देंगे उसी के मुताबिक वे बनेंगे । अब आप देखें कि स्कूलों में एक–एक टीचर के पास 50– 50 60–60 और 70– 70 लड़के पढ़ाने के लिए दे रखे हैं और साथ ही में उसे लाइब्रेरी का जार्ज भी दे रखा है वह यह दोनों काम अच्छी तरह से नहीं सम्भाल सकता अतः यह काम स्कूलों और कालेजों में अलग–अलग आदमियों के पास होना चाहिए जिससे कि बच्चों की पढ़ाई भी उसी ठीक ढंग से होती रहे और लाइब्रेरी का काम भी सुचारू रूप से चलता रहे ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा बच्चों की नाजिल बढ़ाने के लिए हमें हुक और काम करना चाहिए कि एक आदमी रोज अखबारों से खबरें सुनाए जिसेसे उनकी नालिज मैं वृद्धि. हो । लेकिन यह काम भी हरेक आदमी का नहीं' है, नक्शों के जरिए सारी नालिज बताई जाए, दीवारें पक्की होती हैं, ड्राईंग मास्टर वगैरह दीवारों पर ठप्पे बनाकर भी बच्चों को समझा संकते हैं, यह कामू भी बहुत

सस्ते में हो जाता है । मैं आपको बताता हूं कि आम बच्चों को तो यह भी नहीं पता कि अफ्रीका में कितने देश है । जब तक इस प्रकार की नालेज न हो, तब तक कोई भी बात अच्छी तरह से समझ में नहीं आ सकती । टीचर के पास पहले ही सारा मसाला तैयार होना चाहिए । दूसरे मुल्कों में जिस प्रकार से टैलीविजन पर नक्शे वगैरह दिखा कर समझाते हैं, उसी प्रकार हमारे देश में भी टैलीविजन द्वारा बच्चों को सब कुछ समझाने का प्रबन्ध होना चाहिए, जो कि एक बहुत हो अच्छा तरीका है । पहाड़ों की ऊँचाई के बारे में भी पूरा–पूरा ज्ञान होना चाहिए मैदानों की लम्बाई चौड़ाई की भी बच्चों को जानकारी होनी चाहिए । अगर बच्चे इस तरह के नक्शे, चार्ट न बना सकते हों, तो हमारे स्पैशलिस्ट्स होते हैं, उनसे यह काम हो सकता हए ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इससे आगे चलकर मैं एक और बात कहना चाहता हूं कि हमारे यहां म्यूजियम की भी जरूरत है । मैसूर में हम गए, वहाँ हमने देखा कि उन्होंने शहरों में म्यूजियम बनाए हुए हैं और उनमें बड़ी अच्छी प्रकार से आसानी से सारी बातें समझ में आ सकती हैं । मुर्तियों के द्वारा सभी चीजों की हिस्टरी समझ में आ सकती है, चाहे प्लास्टिक की क्यों न हों, अतरू मेरा सुझाव है कि हर स्कूल में म्यूजियम की बड़ी आवश्यकता है । अगर स्कूलों में प्रेयर के वक्त पर अखबारों की खबरें सुनाई जाएं, तो बच्चों की नालेज अच्छी हो सकती है ।

एक और बात है कि हमारे देश में नैशनल हालीडेज

को स्कुल और कालेज बन्द कर देते हैं, यह नहीं होना चाहिए । बल्कि इन दिनों में बच्चों को इन दिनों के इतिहास के बारे में बतलाना चाहिए ताकि उनकी नालेज में वृद्धि हो । उनको हर नैशनल हालीडे के बारे में पूरी–पूरी जानकारी देनी चाहिए कि इस दिन का क्या महत्व है और ऐसा भी तब होगा जब इस किस्म की किताबें हमारे सामने हों, और इन किताबों को जानने, वाले भी हो, तभी इन किताबों का फायदा है । टीचर को यह भी चाहिए किवह पढ़कर. लैक्चर दे जिससे कम से कम उन महापुरुषों की जीवनियों के बारे में, जिनकी याद में यह दिन मनाए जाते है, पूरी वाकफियत हो सके और बच्चों का करैक्टर भी ऊँचा उठ सके । इस प्रकार की शिक्षा अगर हमारे स्कूलों और कालेजों में दी जाएगी, तो वे इसी ढांचे में रच सकते हैं ।

18.00 बजे

जहां तक हमारी छुट्टियों के सिस्टम का सवाल है वह भी गलत है । अब क्या होता है कि मार्च अप्रैल में इम्तिहान होते हैं और जन–जुलाई तक रिजल्ट आते है । रिजल्ट आने के बाद छुट्टीयां हो जाती हैं तो इस तरह से विद्यार्थियों के पांच–छः महीने तो वैसे ही खराब हो जाते हैं । होना यह चाहिये कि मार्च अप्रैल में इम्तिहानों के फौरन बाद छुट्टियां हो जाएं और उस वक्त फसल का भी टाईम होता है तो उन छुट्टियों में विद्यार्थी फसल के काम में भी सहायता कर सकते हैं और छुट्टियों के बाद अपनी एजुकेशन को भी पूरा कर सकते हैं । तो यह जो छुट्टियों का

सिस्टम है, इसको भी हमें इस ढंग से ढालने की जरूरत है, ताकि हमारा एजुकेएशन का जो सही टाईम है वह बर्बाद न हो । टीचर्ज टेरनिंग के लिए आजकल काफी रिफ्रेशर कोर्सिज चल रहे हैं । टीचर भी एजुकेशन सिस्टम का एक पिविट, है जब तक टीचर पूरी तरह संतुष्ट नहीं होगा तब तक अच्छी एजुकेशन नहीं दे सकता वह कम से कम मानसिक तौर पर–और आर्थिक तौर पर भी संतुष्ट हो । अगर हम उसे नेशन बिल्डर मानते हैं और अगर सभी बड़े से बड़े व्यक्ति यह समझते है कि यह नेशन बिल्डर है, उस्ताद के नाते उसकी इज्जत होनी चाहिए, तो हमें उसे आर्थिक दुष्टि से आम ग्रेड से भी बहूत फालतू देना चाहिए हू अगर हम उसको यू इक्वेट करें कि वह दसवीं पास है, क्लर्क को भी वही तन्खाह और उसको भी वही तन्खाह । उसने दो सारन जे०बी०टी० के भी लगाए हैं, उसका ही कुछ क्रेडिट दिया जाए । कई थपकी से भी राजी हो जाते हैं । वैसे हमारे नैशनल एवार्ड भी देते हैं और शी कई कुछ करते हैं लेकिन टीचर की जितनी रिस्पैक्ट होगी, जितनी इज्जत होगी, उतना ही वह और भी खुशी से काम करेगा और काम में ज्यादा रूचि लेगा । अगर कोई. बुरा हो तो उसे जरूर सजा मिलनी चाहिए, यह जो पनिशमैंट और एवार्ड हैं ये दोनों सिस्टम. जरूरी हैं । तो हैल्थ मोनेटरी भी हो सकती है, वैसे भी हो सकती है, इनक्रीमैंट्स में भी हो सकती सकती है, तो जब तक एवार्ड और पनिशमैंट का पूरी तरह से हिसाब न हो, रिजल्ट को भी हिसाब हो, उनके किये का पूरी तरह क्रैडिट भी हो सारी चीजों को देखना बहुत जरूरी है और टीचर की ज्यू–ज्यू रिस्पैक्ट होगी

त्यों–त्यों वह अच्छी तरह से, पूरी रूचि सेकाम करेगा । उनके लिए रिफ्रेशर कोर्सिज लगाए जाए और वहां पर उनको लैक्चर दिए जाएं तो यह सारा सिस्टम जरूरी है । उसे नेशन बिल्डर समझा जाए । नेशन बिल्डर समझने के के नाते ही उसे पूरी तरह संतुष्ट करना जरूरी है, क्योंकि टीचर पर सारी एजुकेशन का दारोमदार है । तो मैंने एजुकेशन के बारे में मेन मोटी–मोटी सी बातें कहीं कि इस सिस्टम में चेंज होनी जरूरी है । जो सुझाव मैंने दिए हैं मुझे उम्मीद है कि मेरे उन सुझावों पर चौधरी माडू सिंह जी छगन देंगे और इस एजुकेशन 'के सिस्टम को बदलने 'का प्रयत्न करेंगे, औंर इसमें मौरल फाइबर को मजबूत करेंगे और उन टेलैन्ट लड़कों के लिए भी चाहे वे म्यूजिक में हों, चाहे स्पोर्टस में हों, और चीजों में हो, उनका जरा स्पैशल ध्यान करेंगे । हैंडीकैप्ड, मैंटली रिटार्डिड और डिसएबल्ड उनकी तरफ भी सोसाइटी का और ध्यान करेंगे ,क्योकि जिनके पास काफी है, उनको दूसरों के लिए भी शेयर करना चाहिए, यह हमारा फर्ज है कि हम उनकी तरफ भी देखें और ऐग्रीकल्चर एजुकेशन और एनीमल हसबैडरी एजुकेशन 'हर स्कूल में होनी चाहिए और कम से कम जो देहाती स्कूल हैं, वहां 4– 5 एकड़ जमीन जरूर एक्वायर करें और जब जमीन एक्वायर होगी, तब पानी का इन्तजाम भी होगा और फिर आपको पड़ाने वाले टीचर होंगे, तभी ऐग्रीकल्चर ठीक चल सकती है । एनीमल हसवैडरी के लिए आज कल जगह–जगह स्टाक सैन्टर्ज है, वैटरनरी हस्पताल भी हमारे चार–चार, पांच– पाच मील पर हैं, लड़के वहां जाकर भी अपने लैक्चर पूरे कर सक ते हैं ।

हमें आजं आम नालेज की भी जरूरत है ताकि पता लग सके कि आम क्या–क्या बीमारियां होती हैं । अब तक हमारे यहाँ यह भी मालूम नहीं कि अगर एक बैल या भैंस आफर जाए तो उसका अफारा कैसे उतारना है । बहुत से इंस्ट्रमैट्स हैं, जो पांच–पांच, दस–दस रुपए के आ जाते हैं । एक तरह की सूई सी होती है उसे पेट में मार देते हैं और उस नाली से सारी हवा निकल जाती है । इस नालेज के ना पता होने के कारण पांच हजार का पशु मिन्टों में मर जाता है । यह इसलिए ही होता है कि हमें प्रॉपर एजुकेशन नहीं है । हम तो चाहते हैंकि हमारा पाली भी जो डंगर चराने जाता है वह भी दसवीं पास करके एनीमल हसबैड्री का दो साल का कोर्स करें तब उसे पाली बनने की इजाजत दी जाए । हम तो यह चाहते हैं कि हर चीज के अन्दर स्पैशलाइजेशन हो और ज्यों–ज्यों यह आबादी बढ़ रही है त्यों– त्यों हमें स्पैशेलाइजेशन की और भी ज्यादा जरूरत है । तो यह एजुकेशन का मसला एक नेशनल मसला है, कोई छोटा मसला नहीं है, इसको बड़ी गम्भीरता से सोचने और विचारने की जरूरत है और इस पर पूरा ध्यान देने की करूरत है । चाहे आप एजुकेशन सैस लगाएं और चाहे सारी कमयुनिटी की पाटिपेशन करें, लेकिन जैसे भी करें आप इस एजुकेशन सिस्टम को सुधारें । यह ठीक है कि एमरजेंसी की वजह से कुछ लोग दब्बू हैं, कुछ भय से डरते बैठे रहेंगे और वे अन्दर ही अन्दर कुढते रहेंगे और जब अन्दर ही अन्दर माल इकट्ठा होता रहेगा और वह जायज, नाजायज और यूज–लैस क्रिटिसिजम या बैठे–बैठे गाली देना या कुछ और करेगा

और अपनी एनर्जी को भी वह वेस्ट करेगा, वह इस देश के लिए भी हानि–कारक सिद्ध होगा । इसलिए उनकी नालेज को ठीक ढंग सें ढालने के लिए हमें एजुकेशन के ढांचे को बदलने की जरूरत है और जल्द से जल्द बदलने की जरूरत है । जयहिन्द ।

श्री रामधारी गौड़ (गोहाना) : आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, जो प्रस्ताव मेरे साथी गुलशिं' जी ने सदन में रखा है, वह बहुत ही अहम है क्योंकि जितनी खराबियां समाज में आई हुई हैं इनका मूल कारण मौजूदा शिक्षा का ढांचा है । आप जानती हैं कि यह मौजूदा ढांचा बहुत पुराना नहीं है, यह जो अंग्रेजों के वक्त में लार्ड मैकाले ने बताया था, क्योंकि उनको कलकों की जरूरत थी । क्योंकि इंग्लैण्ड सें जो. लौग आतें थें, वे बहुत मंहगे पड़ते थे इलिए उन्होंने समझा कि हिन्दुस्तान में ही यहू शिक्षा क्यों न दी जाए ताकि उनके दफतरो का काम चल सके, लेकिन आज देश को बहुत कलकों की. जरूरत नहीं है । इस देश में तो आज टैक्नीशियन्ज की जरूरत है, चाहेय वे कृषि को जानने वाले हो, या और काम जानने वाले हो । इस सभव हमें वे आदमी चाहिए जो इखलाक को बढ़ावा दे सके । हम देखते हैं कि जो बच्चे स्कूलो से निकलते हैं, बे जैक आफ आल ट्रैड्ज बट मास्टर आफ नन है । तालीम का, शिक्षा के शान का मतलब नौ यी होता है–मुझे याद है कि नालेज के बारे मैं कहते है (इस समय अध्यक्ष महोदय पदासीन हुए)। Knowledge is that which equips a man wiht all the necessary weapons fo lfie to tight the battle fo lfie तो एक

आदमी के पास उसमे के पास तमाम साबुन होने चाहिंए कि वह अपनी जिन्दगी की लडाई को कामयाबी के साथ लड़ सके और उसमें कग हासिल कर सकै । आप देखते हैं कि हमारे जो बच्चे स्कूलो कालेजो से निकलते हैं कि उनके पास शिक्षा ग्रहण करने के बाद हे साधन नहीं होते और वह अपनी जिदगी की लड़ाई मे कामयाब नही पाते । अखलाकी तौर पर भी बै बहुत पस्त हैं और जब बै पढ़–कर निकलते है तौ दफ्तरों मैं नौकरी के लिए भागे भागे फिरते हैं । अखबारौं मैं और कोई खबर वगैरह नहीं पढते है सिवाय इसके कि वह पोस्टो की एडवर्टाइजमैटस पड़ते है कि कौन कौन सी जगह खाली है । आप सबने देखा होगा कि जब हम अपने अपने हलको मे जातै हैं तो एक ही बात ज्यादा तर हमारे सामने आती है कि दस बीम बच्चौ हर गांव से हमारे पास आ जाते हैं और उनके बालदेन आ जातै हैं और आग करते हैं कि उनके बच्चो को नोकरी दिलाओ । मैं एक जगह एक गाव में गया तौ कुछ लोग मेरे वास आत कि हमारे बच्चों को कहीं कंधा दो, चाहे जेल' में ही फसा दो–हंसी–लेकिन कसा जरूर दो ताकि हमारा वीछा छूटे । तो यह हालत आज हो रही है । लोगों ने अपनी मेहनत की कमाई से अपने बच्चों को तालीम दिलाई और बडे चाव से उनको स्कूलो कालेजो मे भेजा, लेकिन बापिस बनकर आए सिर्फ खाली बाबू सिर पर लम्बे–लम्बे बाल और बैल बाटम वाली पैट्स पहने गांव मे बेकार घूमते हैं न उनको कोई सेहत है और ना कोई और बात । तो जैसे कि मैंने पहले कहा Knowledge is that which equips a man with all the necessary weapons fo lfie

to that the battle fo lfie. लेकिन न उनकी सेहत है और न कोई वह काम कर सकते हैं सिवाय नौकरी के पीछे घूमने के जो मिलती नहीं, क्योकि आखिर इतनी नोकरिया ही कहां से आ सकती हैं । इससे तो कोई बात बनती नहीं है । फिर आप देखे हमारे स्कूलों में इतने मजमून होते हैं कि भूल–भुलियां बन गई है कोई नही देखता कि बच्चे का दिमाग किधर चलता है बस मजमून पर मजमून लादे जा रहे हैं । जब बच्चा दाखिल होने आता है तो प्रथम श्रेणी में दाखिल कर लेते हें और वहीं सबके लिए मजमून और वही सबके लिए वह बात । होना यह चाहिए कि जब बच्चा स्कूल में आता है, तो उसको टैस्ट किया जाए कि उसका दिमाग किस तरफ चलता है, खेतीबाड़ी की तरफ चलता है, टैक्नीकल लाईन पर चलाता है या आर्ट की तरफ चलता है और जिस साइड पर उसका दिमाग चलता हो, उसी साइड के मजमून उसे पढाए जाएं, लेकिन होता यह है कि हर बच्चे पर हर किस्म के सारे मजमून लाद देते हैं, चाहे उसका उस तरफ एटीच्यूड हो या न हो । इससे यह होता है कि वह जैक आफ आल ट्रेडज और मास्टर आफ नन बनते हैं और सिर्फ क्रैमिंग करके परीक्षा पास करके अधूरे निकलते हैं और जिन्दगी की लड़ाई लड़ने के लिए पूरी तरह इक्विप न होने की वजह से जिन्दगी के हर मोर्चे पर मात खाते हैं । तमाम पैसा और समय जो वह स्कूलों कालेजों में जाकर खर्च करते हैं वह जाया जाता है । यह कोई तालीम का सिद्धान्त नहीं है । तालीम का सिद्धान्त यह होना चाहिए कि वह जिन्दगी के जिस मोर्चे पर जाए, उसी पर कामयाबी हासिल करे । अगर वह

जमींदार का बच्चा है, तो घर आ कर अच्छे प्रोग्रैसिव ढंग से खेती–बाड़ी करे, अगर किसी आर्टीजन का बेटा है, तो घर पर आकर पढ़– लिखकर उद्योग चलाए और अपने बाप दादा के धंधे को साईंटिफिक ढंग से चलाए, ज्यादा से बाँदा पैदावार करे और अगर किसी आर्टिस्ट का लड़का है, ट्रेनिंग लेकर आर्ट के जरिए अपनी रोजी कमा सके और बेकारों की गिनती को न बढ़ाएं । दफ्तरों में बाबु बनने से तो यह मसला हल नहीं होगा आखिर इतनी सारी पोस्टें कहां जो इनको दी जाएं । जैसे चौधरी ईश्वर सिंह जी ने भी बताया कि बेकार और खाली दिमाग कोई अच्छा काम नहीं करेगा । ऊटपटांग की बातें ही सोचेगा, सीखेगा । कभी किसी को आंखें दिखाएगा झगड़ा खड़ा करेगा फिर जेल जाएगा । जिन्दगी से तंग आया इन्सान क्या कुछ नहीं करता । ये जो खुदकशी के बाके होते हैं ये जिन्दगी से तंग और हारे लोग ही करते हैं, क्योंकि वह यह समझ लेते हैं कि ऐसी बेकार जिन्दगी से मौत अच्छी । आप जानते हैं कि आजकल तालीम इतनी मंहगी हो गई है कि इसका हासिल करना गरीब आदमी के बस का रोग ही नहीं हे, लेकिन इतना कुछ करने के बाद भी नतीजा निकलता है । चाणक्य के जमाने में एक सफीर आया था उस ने लिखा है कि जब वह चाणक्य के आश्रम में पहुंचा, तो झोपड़ी में था, तो उसारे देखा कि वह राज का काम भी चलाता था, बच्चों को भी पढ़ाता था, गाएं भी उसने पाली हुई थी उपले भी अपने हाथ से थापता था और ये सारे काम उसकी झोपड़ी में होते थे । वहाँ पर सस्ती शिक्षा मिलती थी, लेकिन जो बच्चे वहाँ से पढ़कर निकलते थे वे

बहुत ऊँचे दर्जे के होते थे, उनमें बहुत सादगी होती थी, लेकिन अब वह सादगी कहां । अब तो स्कूलों कालेजों में बैठकर लता मंगेशकर के गाने चलते हैं, इस बात पर डिसक्शन होती है कि कौनसी पिक्चर लगी है उसमें कौनसी एक्ट्रैस काम करती है, फलां पिक्चर में कैसे डाका डाला गया, कैसे जेब कट गई और फलां फिल्म में कैसे किसी को पटाया गया–(हंसी)– बच्चे यही बातें वहां पर सीखते हैं अब आप ही सोचें जब ऐसी शिक्षा स्कूलों कालेजों में मिलती हो तो फिर यही बातें होंगी । मैं सुझाव देता हूँ कि दुर स्कूल में एक सायकालोजिस्ट होना चाहिए जो इस बात को देखे कि जो बच्चा दाखल होने आया हुंहै, उसका ऐटीच्यूड किधर है और उसके मुताबिक ही उसे उन्हीं मजमून की शिक्षा दी जाए । अब तो यह होता है कि मां बाप भी अपना पीछा छुड़ाने के लिए. बच्चे स्कूल भेज देते हैं कि कम से कम वे सात–आठ घंटे स्कुल में रहेंगे घर में शोर नहीं मचाएंगे और टीचर्ज भी इधर उधर की बातें 'करके वक्त काट लेते हैं, तनखाह लेकर घर चले जाते हैं । जिस मकान की बुनियाद कच्ची होगी, उस पर बिल्डिंग पक्की नहीं बन सकती है । इसी तरह से जब तक हमारी जो यह पीढ़ी है, यह बच्चे हैं, अगर इनको अच्छी पायेदार शिक्षा नहीं मिलेगी, हमारी यह नेशन पायेदार और मजबूत नहीं बन सकेगी । हमारी जो शिक्षा है यह न तो आध्यात्मिक है और न ही प्राकृतिक है ।

प्राकृतिक मैं साईंस आ जाती है, टैक्नीकल एजुकेशन,

ऐग्रीकल्चर आती है और आध्यात्मिक में हमारे वेद शास्त्र, पुराण आते हैं इन दोनों प्रकार की शिक्षाओं की जरूरत है । हमारे स्कूलो में आध्यात्मिक ज्ञान का नामोनिशान नहीं है और प्रकृति ज्ञान भी अधूरा है, हम बच्चों को प्राकृतिक ज्ञान का एक अंश ही बताते हैं जिससे बच्चे की मुकम्मल मास्टरी नहीं होती । हमने शिक्षा के क्षेत्र में दोनों चीजों को लेकर चलना है, क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान से इखलाक बनता है । जिसका इखलाक ऊंचा न हो, उसके पास चाहे कितना धन हो जाए, कितनी अकल हो जाए, वह समाज में उस फोड़े के समान है, जिसको कैसर कहते हैं । वह फोडा फूटने के बाद खोखला हो जाता है । अगर इखलाक ऊँचा होगा, तो वे जहाँ भी जाएंगें, उसके सम्पर्क में जो कोई भी आएगा, उससे अच्छी हवा, खुशबू आएगी और अगर खराब होगा तो समाज में बदनामी आएगी, समाज का पतन होगा 1 आजकल हम देखते हैं! न चरित्र अच्छा है, न विचार अच्छा है, न आहार अच्छा है और न व्यवहार अच्छा है । जिस चीज को हम हाथ डाले उसी में नुक्स पाएगे । जब हम आचार और ख्यालात की बात करते हैं, तो सिनेमा की बात चलती है, विद्या की नहीं चलती, शास्त्रों की नहीं चलती । मनुष्य को ऊचा ले जाने के लिए जो चीज हैं, वह हैं विचार । विचार ऊंचे होने चाहिएं लेकिन विचारों में भी कभी कम्युनल बातें आएगी, कहीं कुछ आएगा, कहीं कुछ जाएगा । आहार भी अच्छा नहीं है, इसका भी यही हाल है, मसाले, चटपटी चीजें इतनी प्रयोग करते हैं कि हमारी जबान बहुत बिगड़ गई है । हम जानते हैं, पूराने वक्तों में हम लोग सादा खाते

थे, बहुत सेहत होती थी । आश्रमों में जो बच्चे. पढते थे उनके चेहरे चमकते थे, वे सादे खाने खाते थे, सिम्पल होते थे, लेकिन आज बच्चे क्लास से निकलते ही काफी हाउस में जाकर बैठते हैं । आज हालत यह हो गई है कि हम चटपटी चीजों के बगैर रह नहीं सकते । आप कालेजों में जाकर देखें, बच्चों का क्या हाल है, बहुत से ऐसे होंगे जिन पर जवानी नहीं आती । स्पीकर साहब, आप जाकर देख सकते हैं । पहले वक्तों में जब जवानी होती थी, तो चेहरे लाल होते थे – (व्यवधान) जो आदमी अपने आचारों विचारों को ठीक नहीं रखता उस पर जवानी नहीं आती, बुढापा पहले ही आ जाता है । गुरुकुलों के जो विद्यार्थी हैं, उनके चेहरे चमकते हैं, लेकिन हमारे नौजवान जब 20–22 साल के होते हैं, उनके लम्बे बाल होते हैं और छाती फ्लैट होती है । एक डाक्टर ने बताया कि मैंने बहुत लड़कों को एग्जामिन किया है, उनकी छाती फ्लैट है, क्योंकिरू न उनको फिजिकल एरक्सरसाइक आती है, न शरीर को स्वस्थ रखने की कोई बात आती है, स्कूल से निकलने के बाद सीधे काफी हाउस आ जाते हैं, सिनेमा की बातें करते हैं, गलत किस्म के काम करते हैं । जहां तक इस्तिहान का प्रश्न है, वे खास खास बातें याद कर लेते हैं और नकल मारकर पास हो जाते हैं । अगर आप एक ग्रेजुएट की लिखी हुई एक ऐप्लीकेशन देखें, तो उसमें बीस बीस मिसटेक्स होती हैं, कोई सन्टैस लिखना नहीं आता । स्पीकर साहब, आपने पहले वक्तों में देखा होगा, चौथी जमात पास पटवारी कितना सुन्दर लिखते थे, वे मेहनत करते थे, पढ़ाई करते थे, डिगनिटी आफ लेबर होती थी

लेकिन आज डिगनिटी आफ लेबर नहीं है । बच्चे अपने आप पानी का गिलास तक नहीं ले सकते, उनमें डिगनिटी आफ लेबर होनी चाहिए । न हमारा खान–पान ठीक है, न हमारी पढ़ाई ठीक है और न मेहनत करने की आदत है । आपने देखा होगा, पुराने जमाने में बच्चे दस दस, बारह–बारह घंटे पढ़ा करते थे, आंखों में तेल लगा लेते थे, चोटी को ऊपर बांध लेते थे, ताकि कख खुली रहे, लेकिन आज बच्चे नींद की गोलियां खाते हैं, ताकि नींद आ जाए । हम, कम से कम गुरुकुलों गे जो शिक्षा पद्धति चालु है, उसको प्रचलित करें, गुरु– कुलों की जो स्थापना की गई है, उसको आधार बनाए, ताकि तालीम अच्छी हो सके, बच्चों का इखलाक बुलन्द हो, शिक्षा में ऊंचे पाए के बने । आज शिक्षा का सिस्टम बिलकुल नाकस है, बच्चे नौ–नौ दस–दस महीने तक काम ही नहीं करते और जब इम्तिहान नजदीक आता है, तो खुलासा ले लेते हैं, उसमें से बीस–तीस सवाल तैयार कर लिए और पास होजाते हैं । ऐसे कई इंस्टीच्यूशन्ज हैं, जिनमें यही होता है । परीक्षा के समय उनका इखलाक भी देखना चाहिए, होम–वर्क भी देखना चाहिए कि आया उन्हेंने सारा साल मेहनत की है, या नहीं की है, इन सब चीजों को देखा जाए, तब जाकर सर्टिफिकेट मिलना चाहिए । यह नहीं कि दस–बीस क्वैश्चन घोटे और डिग्री मिल गई । उनके सर्टिफिकेट में बकायदा कालम होने चाहिएं––क्या वह रोज नहाता है, उसकी सेहत कैसी है, आचार–विचार कैसे हैं, ये सब चीजें देखनी चाहिएं और अगर बच्चे को यह मालूम हो कि ये सब चीजें देखकर सर्टिफिकेट मिलना है,

तो अवश्य इन चीजों की तरफ ध्यान देगा और मालूम होगा कि ये काम करने हैं । घर से पैसे ले लेते हैं और वालदैन को पता नहीं होता कि वे पैसे कहां खर्च करते हैं । स्पीकर साहब, यह ढांचा बदलना होगा, अब समाज में दोष आ गए हैं, समाज में जितनी बुराइया पैदा हो गई हैं, मैं समझता हूं हमारे शिक्षा मन्त्री चौधरी माडू सिंह इस ढांचे को ठीक करने की कोशिश करेंगे । स्पीकर साहब, कम्युनल इंस्टीच्यूशन्क नहीं होने चाहिएं । जिस कम्युनल इंस्टीच्यूशन में दाखिल होते हें, तो सबसे पहले वही कम्युनल लफ्ज सामने आता है, आप देखते हैं । रोहतक और जींद में ऐसे इस्टीच्यूशन हैं, जिनके नाम बिरादरी के नाम हैं । जो बच्चा' वहां दाखल होगा, उसके दिमाग में उसी का असर रहेगा, उसी तरह का उसका स्वभाव, उसके संस्कार बन जाते हैं । इसलिए आप सोचें और कार्यवाही करें कि कोई इंस्टीच्यूशन किसी बिरादर के नाम से न हों, नेशन के नाम पर हो, इलाके के नाम पर हो, महान व्यक्तियों, उन महान आत्माओं के नाम पर हों, ताकि जब बच्चे की जबान पर उन महान पुरुषों का नाम आए, तो उसी तरह बनने की कोशिश करें । जब महान आदमियों का नाम उसके दिमाग में बार–बार आएगा और उसका इम्तिहान पड़ेगा, तो अच्छे संस्कार उसके दिल में पड़ जाएंगे ।

हम स्कूलों में ज्योग्राफिया पढ़ाते हैं, सोशल स्टेडीज पढ़ाते हैं और इतिहास पढ़ाते' हैं । हम रटते हैं कि फलां सन में फलां बादशाह हुआ । यह भी याद करने की कोशिश करते हैं कि

किस देश में कितने दरिया हैं या क्या चीजें हैं । अब टैलीविजन बन गए हैं । इसलिए हमें चाहिए कि हम पुराने ढंग को छोड्कर स्कूलों में टैलीविजन लगाएं और उन पर जिस मुल्क के बारे में पढाना हो, उसका नक्शा दिखाया जाए । जिस घटना के बारे में या आदमी के बारे में पढ़ाना हो, उसको टैलीविजन पर दिखाया जाए । इससे पढ़ाई के ढंग में सुधार होगा । अब तो हमें आगे बढ़ना होगा । इसी तरह से गन्दी फिल्मों के ऊपर भी पाबन्दी लगनी चाहिए । यह गर्वनमेंट आप इण्डिया का काम है । जितने मशहूर आदमी हुए हैं, उनके नाम से फिल्में बनाई जाएं, रोमांटिक फिल्में नहीं बननी चाहिएं । अगर ऐतिहासिक फिल्में बनाई जाएंगीं, तो हमे इतिहास बड़ी आसानी से मासऊम हो जाएगा । जब हम देखें गे कि किस समय का इतिहास कैसा था, फलां बादशाह कैसा था, वह कैसे काम करता था, तो वे सब बातें जहनसीन हो जाएंगीं । अध्यक्ष महोदय, हर स्कूल में टैलीविजन रखने में सरकार का कोई लम्बा चौड़ा खर्च नहीं होगा । स्कूल में इनके पास काफी फंड्ज होते हैं । उन्हीं फंड्ज में टैलीविजन खरीदा जा सकता है ।

इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, आज एजुकेशन के क्षेत्र में जो इमत्याज की बात है, वह नहीं होनी चाहिए । कुछ ाऊल आज ऐसे हैं, जहां बैठने के लिए टाट भी नहीं हैं, लेकिन कुछ पब्लिक स्कूल होते हैं जहाँ हर प्रकार की सुविधा है । टीचर्ज में भी बड़ा फर्क होता है । अगर इस तरह का फर्क रहे तो आप ही

बताए, कि उनका मुकाबला कैसे होगा? आज हम समाजवाद की बात कहते हैं । समाजवाद स्कूलों में आना चाहिए । हरेक बच्चे को मौका मिलना चाहिए कि वह एक सी तालीम हासिल कर सके । इस सम्बन्ध में अध्यक्ष महोदय एक बात याद आ गई है जो इस प्रकार है :—

बच्चे में बू आए क्या मां बाप के अतवार की,

दूध तो डिब्बे का है, तालीम है सरकार की ।

यह बात अंग्रेजी सरकार के समय कही जाती थी । आज यह बात नहीं होनी चाहिए । एक बच्चा जो बढ़िया जगह पढ़ता है, उसका जब घटिया जगह पढ़ने वाले बच्चे से कम्पीटीशन होगा तो वह लाजमी तौर पर उससे आगे निकल जाएगा । एक गरीब बच्चा जो फाकाकशी की हालत में स्कूल जाता है वह एक अमीर के बच्चे के साथ आप ही बताएं कैसे कम्पीट करेगा? तो अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन यह है कि यह जो तालीम है, शिक्षा है, यह सरकार के हाथ में होनी चाहिए ।

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 9.30 a.m. on Friday, the 16th January, 1976.

18. 30 बजे

(The Sabha then *adjourned till 9-30 a.m. on Friday, the 16th January 1976).